

**Text Dark And Light
Within The Book Only**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182662

UNIVERSAL
LIBRARY

डॉ. जूलियस हर्श

द्वारा आयोजित

एक भाषणमाला



व्यापार

के

नव क्षितिज



अनुवादक

परदेशी

OUP—67—11-1-68—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. **H650**
N55V Accession No. **H3504**

Author **न्यू स्कूल फॉर सोशल रिसर्च .**

Title **0यापार के नव शिक्षाविज . 1958 .**

This book should be returned on or before the date last marked below.

व्यापार के नव क्षितिज

अमरीका के 'न्यू स्कूल फॉर सोशल रिसर्च'

के

व्यापार-व्यवस्था-केन्द्र

के लिए

डॉ. जूलियस हर्श

द्वारा आयोजित

भाषण-माला

अनुवादक

परदेशी



बोरा एन्ड कम्पनी, पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड

३, राउन्ड बिल्डिंग, कालबादेवी रोड, बम्बई-२.

Hindi Translation
of
New Horizons in Business
Edited by
Julius Hirsch
Harper & Bros., New York.

●
अगस्त १९५८

●
मूल्य : रु. २)

प्रकाशक :

एम. के. वोरा,
वोरा एंड कम्पनी, पब्लिशर्स प्रा. लि.
३, राउन्ड विल्डिंग, कालबादेवी रोड
बम्बई २

●
मुद्रक :

एम. टी. शाह,
लिपिका प्रेस,
कुर्ला रोड,
बैघेरी, बम्बई ।

आलोक

एक युग और काल था, जब मनुष्य सम्यक् आजीविका को अपने धर्म का प्रमुख अंग समझता था और धर्माचरण में व्यापार का भी समावेश था। लेकिन, समय और काल-प्रवाह के परिवर्तन ने जीवन के विविध तटों को इस प्रकार बदल दिया कि मनुष्य मनुष्य से दूर होता गया और केन-देन, हिसाब-किताब, लिखा-पढ़ी, व्यापारिक सम्पर्क और व्यवहारिकता जैसे शब्द और पद विकसित हुए।

प्रस्तुत पुस्तक अतीत की इस अवस्था की तुलना में भविष्य की व्यापारिक दशाओं का अद्भुत चित्र प्रस्तुत करती है। आदिम जीवन और उद्योग-प्रणाली की परम्परा के विपरीत आज की, और आगामी कल की प्रणालियाँ और प्रवृत्तियाँ कितनी विकासमान और प्राणवान हैं, यह, इस पुस्तक के पाठक को सहज ही विदित हो जाएगा। और यह सत्य भी अप्रकट न रहेगा कि मनुष्य ने जीवन के विभिन्न अंगों और क्षेत्रों में किननी प्रगति की है। इस दृष्टि से वह सूक्ष्म दृष्टा है।

इस पुस्तक में जिन भाषणों का संकल्प किया गया है, वे 'न्यू स्कूल फार सोशल रिसर्च' में दिए गए हैं। १९५५ के मार्च और मई मास की बात है यह।

इन भाषणों की व्यवस्था डॉ० जूलियस हर्श ने की थी। इस कार्य में उन्हें 'न्यू स्कूल' के शोध विभाग और उसके 'विजनर्स एंडवाइजरी ग्रुप' से प्रयाप्त सहयोग मिला था।

न्यूयार्क के दैनिक और साप्ताहिक पत्रों ने इन भाषणों को बहुत महत्व दिया था। हमारे लिए आज इनका वही महत्व है और सन् १९७५ भी रहेगा।

अमरीकी अर्थ-अवस्था की दूराविधि प्रवृत्तियों और उनकी समस्याओं के विषय में इन भाषणों में विचार किया गया है। अमरीकी जनता के हित

और कल्याण की दृष्टि से इस अर्थ-स्थिति का बड़ा महत्व है। उपरोक्त प्रवृत्तियों और प्रश्न-पहेलियों से सम्बन्धित ये वार्ताएँ और भाषण-मालाएँ अधिकृत, सूचनात्मक और उपयोगी हैं। उद्योग और व्यापार के प्रत्येक भाग-विभाग के व्यक्ति के लिए उपयोगी हैं, चाहे वह व्यापारी हो, पूँजी लगानेवाला इन्वेस्टर हो, ट्रेडयूनियन का कार्यकर्ता हो, अर्थशास्त्र का अध्यापक हो अथवा शोध और खोज की लगन लेकर चलनेवाला विद्यार्थी हो।

अमरीका के आर्थिक भविष्य के विषय में विचार-विनिमय करनेवाले; शोध-खोज और विकास-व्यवस्था के अभिलाषी महानुभाव—सब को इन भाषणों की उपयोगिता सहज ही विदित हो जाएगी।

और इन्हें प्रकाशित करने में 'न्यू स्कूल' के शोध-विभाग का यह सदुद्देश्य रहा है कि अपने परिश्रम और वैज्ञानिक कार्य द्वारा, उसने जो परिणाम प्राप्त किए हैं, वे जनता के प्रत्येक पाठक तक पहुँच जाएं।

—प्रकाशक

प्रवेश और परिचय : १

[लेविस एल. लारविन, 'इन्टरनेशनल लेबॉर मुव्मेन्ट'
तथा अन्य पुस्तकों के लेखक]

इस सुन्दर, सूचनात्मक और प्रेरणाप्रद पुस्तक में, वाणिज्य-व्यापार, पूँजी और आर्थिक शोध-क्षेत्रों के साथ, अग्रणी महानुभावों ने अमरीकी-व्यापार-क्षितिज का पर्यवेक्षण किया है। उनका प्रयत्न रहा है कि इन क्षितिजों पर अंकित चिह्नों को देखकर, यह जान सकें कि संयुक्त राज्य अमरीका के लिए आर्थिक भविष्य के गर्भ में क्या-क्या निहित है ! यद्यपि, अर्थ-प्रणाली से सम्बन्धित इन लेखकों के केन्द्र-बिन्दु और दृष्टिकोण भिन्न हैं, तथापि एक ही स्वप्नसृष्टि में उनका मिलन होता है—भावी दो दशाब्दियों के निमित्त आलोकपूर्ण लोकों का प्रसारण ! दो दशाब्दियों का यह समय, इसलिए कि, अपने अनुमान में वे, यहीं तक देखने-योग्य हैं।

संक्षेप में कहें कि वे व्यापार-क्षेत्र के क्षितिजों को बढ़ते हुए देखते हैं। इसका कारण, निर्माण-शक्ति का विकास और अमरीकी जनता के जीवन-स्तर की उन्नति है ! जिस प्रकार कोई व्यक्ति पहाड़ पर चढ़ता है, और ज्यों-ज्यों वह चोटी की ओर—आगे और आगे बढ़ता है, त्यों-त्यों क्षितिज का विस्तार अधिकाधिक विस्तृत होता जाता है, उसी प्रकार आर्थिक जीवन में भी, सफलताएँ और उपलब्धियाँ जितनी उच्चतर होती हैं, भावी उन्नति के अवसर भी उतने ही बढ़ जाते हैं, बशर्ते कि हम पर्वतारोहण के समान, व्यापारिक क्षेत्रों में भी सावधान रहें और ऊँचाइयों से चकित होकर या आगे की ओर आवश्यकता से अधिक झुककर, अपना संतुलन न खो बैठें और इस प्रकार पीछे की अतलान्त गहराइयों में न गिर पड़ें !

‘हमारा आर्थिक भविष्य’ शीर्षक अध्याय का सारांश यह है कि वर्तमान

समय और सन् १९७५ के मध्यवर्ती काल में व्यापार के नए क्षितिज कहाँ तक प्रसारित हो सकते हैं ? और भावी व्यवसाय की सफलताएँ और सम्भावनाएँ, क्या-क्या हैं ? सरकारी, व्यावसायिक और आर्थिक क्षेत्रों के अन्यान्य विद्वानों की, सन् १९५२ और १९५४ के बीच की, विभिन्न आठ, लम्बे समय की दूरावधि भविष्यवाणियों की तुलना करते हुए डॉक्टर हर्श ने पाया कि उनमें भावी अर्थप्रगति और औद्योगिक विकास के विषय में, अनिवार्यतः सहमति है। उनका कहना है, अगली दो दशाब्दियों में अमरीका में माल का उत्पादन आज की अपेक्षा लगभग दूना हो जाएगा। प्रति व्यक्ति आय और व्यय के नाप और अनुपात से, लोगों के जीवन-स्तर भी आज की अपेक्षा ३ और बढ़ जाएँगे। प्रत्येक व्यक्ति—स्त्री, पुरुष या बालक की न्यूनतम वार्षिक प्राप्ति १७३१ डॉलर से संभवतया २८२८ डॉलर हो जाएगी। इसका तात्पर्य यह हुआ कि यदि किसी औसत परिवार में चार सदस्य हैं तो उनकी वार्षिक-आय लगभग ६१२४ और ११३१२ डॉलर (सन् १९५१ के डॉलर) के बीच में होगी। लोगों की बदलती हुई आदतों और जीवन-निर्वाह के बदलते हुए तौर-तरीकों के कारण, सम्भव है कि कुछ उद्योग-धंधे पिछड़ जाएँ, किन्तु कुल मिलाकर जो तस्वीर सामने आती है; वह सुख, समृद्धि और सम्पन्नता की है। इसके अतिरिक्त पैंतीस घंटे के कार्य-सप्ताह में, कम-प्रयास और परिश्रम के द्वारा अधिकाधिक उत्पादन और खपत के नव क्षितिज प्राप्त किए जाएँगे।

ठोस माल और सेवाओं के रूप में जीवन के उच्चतर स्तर का क्या अर्थाशय लिया जाएगा, इस पहेली को डॉ. हर्श ने कतिपय विवरण देकर सुलभाया है। तब, अमरीकी लोग पर्याप्त भोजन और वस्त्र प्राप्त करेंगे। उन्हें अधिक अच्छे और बेहतर मकान और अधिक अच्छा और बेहतर फ़र्नीचर मिलेगा। साथ ही घरेलू बिजली तथा विद्यु-उपकरण यानी बिजली का सामान भी बहुतायत में सुलभ होगा। नागरिकों में से बहुसंख्यक नागरिकों के अपने मकान होंगे और अधिकाधिक लोगों के पास अपनी मोटरकारें ही नहीं हेलिकॉप्टर भी होंगे। खरीद-फ़रोख्त के लिए सुविधाजनक स्थान या बाज़ार होंगे, प्रत्यक्षरूप में सिंथेटिक वस्त्रों के उपयोग में वृद्धि होगी। और अन्ततया विश्राम और विद्या-विषयक सुविधाएँ तो इस प्रकार महत्तर-

रूप में बढ़ जाएँगी कि मानव-जीवन में अधिक विश्राम, अधिकाधिक वैयक्तिक संतोष और आह्लाद आए !

इन महत् कामनाओं और महान् अपेक्षाओं की नींव, भला किस चीज पर आधारित है ? इस पुस्तक के लगभग सभी अध्यायों में और विशेषतया प्रथम तीन अध्यायों में, इस प्रश्न पर विचार किया गया है। इन अध्यायों के लेखक इस बात से सहमत हैं कि अमरीकी जनता के आर्थिक भविष्य के स्वर्णकाल का मूल स्रोत, वर्तमान तीन मूल प्रक्रियाओं से प्रवाहित होता है—जन-संख्या और उत्पादन में वृद्धि और उद्योग-धंधों के यांत्रिक क्षेत्रों में वैज्ञानिक सहयोग का विकास। प्रत्येक प्रकार के माल की माँग की वृद्धि और इस प्रकार, उत्पादन के प्रोत्साहन के लिए श्री माजुर और डॉ. हर्श दोनों ही जनसंख्या-वृद्धि के महत्त्व पर जोर देते हैं। जहाँ तक संयुक्त राज्य अमरीका का सवाल है, इस विषय में इन दोनों विद्वानों के मन में शंका या संदेह नहीं है। श्री माजुर तो प्रतिवर्ष जन्म लेनेवाले शिशुओं की 'नन्हीं फसल' का हृदय से स्वागत करते हैं, क्योंकि, उनकी दृष्टि में यह उभय पक्षीय सहारा है, जिसके कारण, माल की भावी माँग और उसके उत्पादन के हेतु आवश्यक श्रम की पूर्ति होती है। डॉ. हर्श का अनुमान है कि सन् १९७५ में देश की जनसंख्या बीस करोड़ हो जाएगी और साढ़े आठ करोड़ व्यक्तियों को नागरिक क्षेत्रों में काम मिलेगा। उनका विश्वास है कि एक या दो पीढ़ी तक तो हमें इस जन-संख्या-वृद्धि के विषय में चिन्तित नहीं होना चाहिए। वे कहते हैं, हमारी उत्पादन-शक्ति "प्रत्येक नए नागरिक को एक शुभ उप-भोक्ता" बना देती है और अनुमानतया एक आवश्यक एवं उपयोगी उत्पादक भी। यदि अमरीकी उद्योग-धंधे जनसंख्या-वृद्धि की गति की अपेक्षा अधिक तीव्र गति से उत्पादन नहीं करते तो, बढ़ती-जाती जन-संख्या को उच्चतर जीवन-स्तर के विषय में आश्वस्त नहीं किया जा सकता। माल की वृद्धि का आधार, उत्पादन-शक्ति का विकास है। श्री माजुर का निर्देशन है कि बढ़ी हुई उत्पादन-शक्ति के फलस्वरूप अमरीकी व्यापारी अधिक मजदूरी या वेतन दे सकते हैं, वस्तु के गुणों में वृद्धि कर सकते हैं और प्रति सप्ताह काम के घंटे कम कर सकते हैं। यहाँ उत्पादन-शक्ति से उनका तात्पर्य प्रत्येक

स्त्री या पुरुष कामगार की उस योग्यता से है, जिसके सहारे वह काम के अपने एक घंटे के भीतर अधिकाधिक उत्पादन करता है।

‘अमरीका का गौरव’ यानी संयुक्त राज्य अमरीका की उत्पादन-शक्ति-विकास के महत्त्व को पूर्ण मान्यता न देनेवाले व्यक्तियों से डॉ. हर्श रष्ट हैं। उनके खयाल में अमरीकी औद्योगिक उत्पत्ति का न्यूनतम विकास २०३ से ३ प्रतिवर्ष है। इस गतिक्रम से भावी बीस वर्षों में वृद्धित श्रमशक्ति के द्वारा जो माल पैदा होगा और जितनी सेवा की जाएगी, उसका पूर्ण अनुमान देकर, वे उसकी प्रत्याभूति प्रस्तुत करते हैं।

अभी जिन लेखकों का उल्लेख किया गया है, उन्होंने उत्पादन-शक्ति के यांत्रिक और तांत्रिक तथ्यों पर जोर दिया है। संयुक्त राज्य अमरीका की उस असाधारण एवं आश्चर्यजनक पद्धति का, जिसे ‘विपुल उत्पादन’ कहते हैं, सम्बन्ध श्री माजुर ने उत्पादन-शक्ति-विकास और बाजारों से जोड़ा है। डॉ. हर्श ने इसका संबंध अमरीकी उद्योग-द्वारा अधिक अंश में प्रयुक्त शक्ति से बतलाया है। लेकिन इस विषय का परिपाक ‘शिल्प-विज्ञान के नव क्षितिज’ नामक अध्याय में डॉ. हर्ड द्वारा ही हुआ है। उन्होंने ‘औद्योगिक क्रांति’ में नवावस्था का दर्शन किया है। एक ऐसी समुन्नत अवस्था, जिसमें, गणिता-चार्य, रसायनाचार्य, यंत्राचार्य और सम्मिलित औद्योगिक प्रक्रियाओं और उत्पादन तथा विक्रय-कार्यों के स्वचालित नियन्त्रणार्थ व्यापारी के लिए विद्युदपुण्ययंत्र उपलब्ध करते हैं।—यही है, स्वचालन से उनका तात्पर्य, और जैसा कि वे स्पष्ट करते हैं, यह स्वचालित यंत्र के साधारण उपयोग की अपेक्षा दूरगामी प्रभाव रखता है।

स्वचालन औद्योगिक प्रणाली या विधि की दिशा में एक अभिनव विकास है, जिससे न केवल मानवीय शारीरिक श्रम ही बचा लिया जाता है बल्कि जिसमें मानवीय निर्देशन भी आरंभिक आयोजन और त्रुटि-संशोधन तक ही सीमित हो जाता है। सतत वृद्धिमान उत्पादन-शक्ति के हेतु स्वचालन का सहयोग और भविष्य कल्पनातीत है। और अब तक जो अनुभव हुआ है उससे भी इस अनुमान को प्रमाण मिलता है। संयुक्त राज्य अमरीका के उद्योगों में आगामी दशक में स्वचालन को पूर्ण महत्त्व मिलने

की जिनकी अपेक्षाएँ हैं, उनके पास अवश्यमेव उचित कारण हैं कि उत्पादन-विकास प्रतिवर्ष तीन प्रतिशत से कहीं अधिक बढ़ जाएगा ।

अपने शिल्प-विज्ञानी आधार के कारण, यंत्र और औजार वगैरह में लगाई गई पूँजी से उत्पादन-शक्ति का गहरा सम्बन्ध है । दोनों आपस में जुड़े हुए हैं और परस्पराश्रित हैं, यह सम्बन्ध विगत वर्षों में किस प्रकार परिवर्तित होता रहा है यह, आगे, रेखा-चित्र (चार्ट) तृतीय में प्रदर्शित है, 'नवक्षितिजों की लागत' शीर्षक अध्याय में श्री ग्राहम ने साहसी अमरीका की पूँजी संबन्धी नीतियों पर प्रकाश डाला है । श्री ग्राहम का आरंभिक आधारस्तंभ यह है कि अर्थ और पूँजी के अन्यांशों की अपेक्षा नैगमक्षेत्र अधिक क्षिप्रतापूर्वक बढ़ेगा । कांग्रेस-समिति-द्वारा प्रस्तुत 'आर्थिक रिपोर्ट' में उल्लिखित परियोजनाओं को ये अपने मार्गसूचक के रूप में लेते हैं, जिसके अनुसार सन् १९५४ और १९६५ के बीच में कर आदि के चुकाये के उपरांत नैगम लाभांश ६४ प्रतिशत बढ़ जाएगा । और लागत पर प्राप्त लाभांश ६० प्रतिशत बढ़ेंगे जब कि उसी अवधि में कुल राष्ट्रीय उत्पादन भी ४७ प्रतिशत बढ़ जाएगा । नैगम लाभ और लाभांशों की ऐसी सफलताओं का परिणाम यह होगा कि हमारे लोग अधिकाधिक रकम बचा सकेंगे और उत्पादक और लाभकारी लागत-पूँजी के रूप में उसका प्रभावशील प्रयोग कर सकेंगे ।

श्री ग्राहम तो प्रस्तुत समस्या के चार पहलुओं पर विचार करते हैं—
(क) ऐसी कौन सी चीज़ या शक्ति है जो किसी नागरिक व्यक्ति को उसकी लागत-पूँजी के सम्बन्ध में रास्ता दिखाए या इस प्रकार की संभावनाएँ पेश करे और वह किस आधार पर प्रतिभूतियों का चुनाव करे ? (ख) श्रेष्ठित्वर (शेयर बाज़ार) की गतिविधियाँ किस दिशा में अग्रसर होंगी ? (ग) सरकार की कर-नीति का क्या प्रभाव पड़ेगा और (घ) भागीदार तथा ध्येय-स्थापक के बीच के सम्बन्धों में कौन-कौन से परिवर्तन प्रस्तुत होने की संभावना है ? चूँकि श्री ग्राहम 'क्या होना चाहिए' और 'क्या होने वाला है'—उभय स्थितियों में समान रूप से रुचि रखते हैं, इसलिए, उनका विचार-विनिमय, नागरिक व्यक्ति और नैगम के रूप में लागत-पूँजी लगानेवालों को अनेक प्रकार के संकेत देता है ।

आशाप्रद परियोजनाओं ने जिन भावी लागत-नीतियों को आकर्षित किया है, वही, वे नीतियाँ हैं जिनका जन्म हाल ही के कुछ वर्षों में हुआ है। इन नीतियों की रचना, निष्णात् विद्वानों द्वारा हुई है और यह नीतिकथन श्री ग्राहम के उन सब बयानों से सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण है और भविष्य में भी विगतानुसार श्रेष्ठिचत्वर इस सिद्धांत के समानान्तर अपना रुख दिखलाएगा—‘जितना यह बदलता है, उतना ही अधिक अपना पिछला रूप रखता है।’ श्री ग्राहम के अनुसार अमरीकी व्यवसाय के लाभ की पूंजी का औसत विकास-दर भविष्य में साधारण वस्तुभंडार, स्कंध, उनकी कमाई, उनके लाभांश और मूल्यों पर निश्चय ही नियंत्रण रखेगा, किन्तु उनकी राय में विभिन्न स्कंधों और श्रेष्ठिचत्वरों के मूल्य और दाम, बाज़ार के, सट्टे के (अनुमानात्मक) रुख के अनुसार बदलते रहेंगे। श्रेष्ठिचत्वर या शेयर-बाज़ार के उतार-चढ़ाव और चक्र, अतीत के अनुसार भविष्य में भी, चलते रहेंगे। फिर भले, विभिन्न प्रकार के आर्थिक स्थायित्व की चाहे जैसी अवस्था हो। अतएव सारभूत बात यह है कि कुछ वर्षों में श्रेष्ठिचत्वर सतत अथवा यदाकदा उन शक्तियों को झुलकाएगा या उनका प्रभाव दिखाएगा जो पूंजी के दूरावधि विकास की निर्णायिकाएँ हैं।

सरकार की कर-सम्बन्धी नीतियों के फलस्वरूप निश्चय रूप में श्री ग्राहम भी नैगम-वित्त-प्रबन्ध-अवस्था में परिवर्तन देखते हैं और हिस्सेदारों की इस माँग के कारण कि उनकी लागत-पूँजियों के अधिक लाभमय वैक्तिक परिणाम प्रकट हों, हिस्सेदारों और व्यवस्थापकों के सम्बन्धों में भी परिवर्तन देखते हैं। श्री ग्राहम नैगम-वित्त-प्रबन्ध के जिन अभिनव रूपों की परियोजना करते हैं उनसे वैक्तिक व्यवस्थाओं और नियंत्रणों के क्षेत्र में अधिकतर केन्द्रीकरण होने का संकेत प्रकट होता है। श्रेष्ठिचत्वर की व्यवस्था के कार्यों का निर्णय चत्वर के स्कंध के भागीदार जिस संकेत के आधार पर करेंगे, उसका निर्माण, व्यवस्थापकीय नीतियों के निश्चयों में अधिक विकेंद्रीकरण एवं सुदृढ़ तथा सफल अनुमान पर जोर देता है।

प्रस्तुत ग्रंथ में जिन दूरावधि आर्थिक परियोजनाओं पर विचार-विनिमय किया गया है, वे उन विविध, साधारण अनुमानों और मान्यताओं पर

आधारित हैं, जिनमें से दो अधिक महत्वपूर्ण हैं। एक तो यह कि भावी बीस वर्षों में कोई आणविक युद्ध नहीं होगा और संयुक्त राज्य अमरीका शान्ति की छाया में समुन्नत हो सकेगा। दूसरा यह कि अमरीकी अर्थ और पूँजी को सरकार के उन अभिवृत्तियों का आधार और अनुमोदन प्राप्त होगा, जो उसने सन् १९४६ के सेवापरिनियोजन कानून के अन्तर्गत सम्पूर्ण सेवापरिनियोजन के परिपालन के लिए दिए हैं।

इन अनुमानों और मान्यताओं को स्वीकार करते हुए, कई लेखक अपने-द्वारा आगमवाणित उत्पादन-शक्ति-विकास के फलस्वरूप-उत्पन्न अनेक गहन समस्याओं का परिदर्शन करते हैं। जैसा कि डॉक्टर हर्श लिखते हैं, उत्पादन-शक्ति का विकास 'संकट से मुक्त' नहीं है, क्योंकि यह, माल या वस्तु तथा श्रम या सेवा की अपेक्षा अधिक तीव्रतर गति से चलेगा। इसे श्री ग्राहम ने अतिरिक्त उत्पादन-शक्ति कहा है और इसमें सेवापरिनियोजन-हीनता या बेकारी का संकट और चुनौती निहित है। इनके कारण जिस संकट को विद्यमान रहने का अवसर मिलता है, वह है उत्पादन और विक्रय-उपभोग के बीच के सन्तुलन के अनुपस्थित रहने के कारण-उत्पन्न लाखों लोगों की बेकारी। इस ग्रंथ के लेखकों में से कोई भी इस बात पर विश्वास नहीं करता कि व्यापारचक्र पूर्व काल की बात हो गई है, अथवा हम इसके नियंत्रण की विधि में पूर्णरूपेण पारंगत हैं। तथापि उनका यह विश्वास अवश्य है कि सरकार के अधिकार में ऐसे साधन हैं कि यदि वह चाहे तो एक सीमा तक व्यापार के उतार-चढ़ाव और उनके विद्यमान रहने की अवधि को कम कर सकती है।

सैद्धांतिक दृष्टि से दूरावधि-परियोजनाएं व्यापार के मूल्यावपात या मंदी की संभावना से प्रभावित नहीं होतीं। यह मान लिया गया है कि मंदी की अवधियों की क्षतिपूर्ति, तदन्तर, आनेवाली विशेष-वृद्धि-अवधियों के द्वारा हो जाएगी। औसत रूप में, आर्थिक विकास की गति निरन्तर, लगभग पूर्ण सेवानियोजन से प्रसूत-परिणाम-गति के बराबर होगी। तथापि संभव है कि सक्रिय रूप में, सेवापरिनियोजनहीनता के सामाजिक अनुषांगिक प्रभाव—काल और संख्या-परिमाण की सिद्धान्तवादी

गणनाओं को उलट कर रख देंगे। ऊपर, जिन लेखकों के उदाहरण दिए गए हैं, उन्होंने इस प्रकार की परिस्थितियों के निदान बतलाए हैं। डॉ० हर्ष उत्पादन-शक्ति-विकास को प्रोत्साहन देंगे, बशर्ते कि कार्यकाल घटा दिया जाए, खपत और उपभोग की वृद्धि हो, और आवश्यकता पड़ने पर चाहेंगे कि सरकार लोक-कार्यों को अपने हाथ में ले ले। श्री माजुर का खयाल है कि खपत और उपभोग की वृद्धि तब होगी, जब खरीदारों को उचित 'शिक्षा' दी जाएगी। इस शिक्षा का अर्थ है : खरीदारों और उपभोक्ताओं को यह सिखा देना कि समय-समय पर पुरानी वस्तुओं को छोड़कर, नई वस्तुओं के ग्रहण-द्वारा नित्य नई वस्तु के उपभोग की आदत कैसे डालना और अधिक तथा अच्छी वस्तुएँ कैसे चाहना ! उनका विचार है कि मात्र क्रय-शक्ति का अस्तित्व ही पर्याप्त नहीं है, माल की सम्भावित माँग को, प्रभावपूर्ण माँग में बदल देने के लिए, हमें कोफ़ी सैद्धान्तिक शोध करनी होगी। उनका कहना है कि हमें उत्पादन-वृद्धि पर कम जोर देना चाहिए और खपत बढ़ाने के विषय पर ज्यादा जोर देना चाहिए।

उत्पादन-शक्ति के अतिक्षिप्र विकास के एक और पहलू के विषय में डॉ० बर्नेस और श्री रिजवे चिंतित हैं, विशेषकर स्वचालन प्रणाली के तीव्र प्रचलन पर क्योंकि स्वचालन का स्वभाव है कि वह मजदूरों की बेकारी बढ़ाता है और यांत्रिक सेवापरिनियोजनहीनता में वृद्धि करता है। डॉ० हर्ष का अभिमत है कि यह प्रक्रिया उद्योग-बंधों और आबादियों के भौगोलिक वितरण के आधार पर बढ़ाई जा सकती है। इन स्वभावों को विनष्ट कर देने के लिए उपरोक्त विद्वानों का प्रस्ताव है कि ऐसी अवस्थाएं और ऐसे सम्पर्क स्थापित किए जाएं कि जिनके कारण, व्यापारियों, श्रमिकों और अन्य सामाजिक समूहों को आवश्यक तैयारी का अवसर मिल जाए, ताकि उससे प्रोत्साहन पाकर वे नए उत्पादन-पदार्थ, लागत और सेवाओं के आयोजन में लग जाएं।

आर्थिक मंदी की समस्या से संलग्न समस्या है मुद्रास्फीति की। यहाँ डॉ० हर्ष-द्वारा विचारित दो प्रश्न सम्बन्धित हैं। एक तो यह कि क्या अमरीकी अर्थ-अवस्था के लिए परियोजित दूरावधि-लक्ष्य मुद्रास्फीति या

विस्फीति की अवस्थाओं और अवधियों से गुजरे बिना ही प्राप्त हो सकते हैं ? इस प्रकार, यह प्रश्न, दूसरे रूप में ऊपर विचारित व्यापारक्रम की समस्या का वर्णन मात्र है ।

दूसरा प्रश्न है—मान लीजिए कि क्रमानुसार हम मुद्रास्फीति और विस्फीति की वैकल्पिक अवधियों को टाल सकते हैं और निरन्तर नियन्त्रित-प्रगतिशील-मुद्रास्फीति की अवधिरहित, लगभग पूर्ण सेवानियोजन की व्यवस्था कर सकते हैं । धीमे, परन्तु सुदृढ़रूप में बढ़ते हुए मूल्यस्तर में अभिव्यक्त मुद्रास्फीति का अर्थ होगा—डॉ. हर्श के शब्दों में—“अपनी बचत के सहारे रहनेवाले, निश्चिन्त लोगों को धोखा देना ।” उनका विश्वास है कि ऐसी मुद्रास्फीति की सम्भावना राजनैतिक एवं सामाजिक विकास-कार्यों के फलस्वरूप, कम से कम हो जाएगी ।

शिल्प-विज्ञान-क्षेत्रों की प्रगति पर आधारित और जीवनस्तर के सामाजिक सुधार एवं उत्थान से सहयोगित—आर्थिक विकास की प्रक्रिया ऊपर-विचारित समस्याओं के अतिरिक्त अन्यानेक समस्याओं को जन्म देती है । और समस्याएँ ये किस प्रकार की हैं, और उनसे व्यवहार रखते समय किस भाँति की खोज आवश्यक होगी, इन प्रश्नों पर, ‘व्यापारिक गवेषणा के नव-क्षितिज’ शीर्षक परिपूर्ण एवं विचारशील अध्याय में मनन किया गया है । इस अध्याय में, डॉ. गेन्सब्रग सामाजिक-आर्थिक प्रणाली के पाँच क्षेत्रों में व्यापारिक गवेषणा या शोध की सम्भावनाओं की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं : पूँजी के लागत-क्षेत्र में, उपभोग या खपत-क्षेत्र में, राज्य-क्षेत्र में, आंतरिक व्यापार-नियन्त्रणों के क्षेत्र में और व्यापार-अवस्थाओं के रुख के पूर्वानुमान और विश्लेषण-क्षेत्र में । शोध के जो नए दृश्य-प्रकरण इन पाँच क्षेत्रों में वे प्रस्तुत करते हैं, वे निश्चय ही विशाल हैं, प्रथमतः नए आँकड़ों की उपलब्धि के लिए प्रयत्न, समस्या विशेष का विश्लेषण और “आर्थिक एवं व्यापारिक सिद्धान्त की महान् समस्याओं” पर पूर्ण “काल्पनिक आक्रमण” । श्री गेन्सब्रग सुनिश्चित रूप से वर्तमान और दूरावधिकालीन समस्याओं की पूर्ण माला तैयार करते हैं । इनमें से कतिपय समस्याओं पर, इस समय विचार किया जा रहा है, किन्तु अधिकांश समस्याएँ ऐसी हैं, जिन पर विशिष्ट

व्यक्तियों, संस्थाओं, प्रतिष्ठानों, विश्वविद्यालयों, शोध-संस्थानों और सरकारी क्षेत्रों-द्वारा नए और बड़े पैमाने पर प्रयास किया जाना चाहिए।

श्री गेन्सब्रग ने व्यापारिक शोध की आवश्यकता और सम्भावनाओं पर जो टिप्पणी लिखी है, उसमें उन्होंने एक प्रोत्साहनपूर्ण-विचार का सुझाव दिया है कि ज्यों ही व्यवसायी समाज में संवर्द्धनशील आर्थिक संस्थान का सिद्धान्त जोर पकड़ता है, त्यों ही वह नवीन दृष्टिकोणों को जन्म देता है और व्यापारिक व्यवहारों और नीतियों को इस प्रकार मोड़ता है कि वे अन्ततोगत्वा दूरावधि आर्थिक एवं सामाजिक प्रवृत्तियों से दृढ़तापूर्वक जुड़ जाती हैं। अर्थ की ओर देखने का यही-वह गतिशील तरीका है जो व्यापार और धंधे के लिए नई और बड़ी समस्याएँ पैदा करता है। और अर्थ के वृहत् एवं अधिक सुगठित शोध की आवश्यकता पर जोर देता है। उदाहरण के लिए पूँजी की लागत के क्षेत्र में नवीन गतिशील दृष्टिकोण, मूल्यहास और वस्तु-परिवर्तन की नीतियों की पुनर्रचना करवाता है। उपभोक्ता-क्षेत्र में उस सामाजिक जीवन-प्रणाली के दूरावधि परिवर्तन पर भी जोर देता है, जो माल की माँग और उपभोग-सम्बन्धी स्वभाव पर प्रभाव डालता है। सरकारी क्षेत्र में, इसके कारण, व्यापार—निजी क्षेत्र पर लोक-प्रजा के दूरावधि प्रभावों के विषय में सशक्त होता है। व्यापारिक शोध के क्षितिजों को नव विस्तार प्रदान करनेवाले दूरावधि आर्थिक परिवर्तनों और प्रचलित व्यापारिक समस्याओं के बीच की अन्तर्क्रिया भी यही है।

प्रस्तुत ग्रंथ एक आशावादी रचना है। लेकिन इस आशावाद का यह अर्थ नहीं कि यह अक्रिय आत्मसंतोष अथवा निष्क्रियता को प्रोत्साहन दे। यह ठीक है कि वृहत्तर आर्थिक परियोजनाओं के सफल होने की पूर्णांशा है, तो इसका यह भी तात्पर्य है कि गतिशील अर्थ-व्यवस्था-द्वारा उत्पन्न एवं विकसित कई समस्याएँ भी सुलभ जाएँगी। किन्तु क्षितिजों का विस्फारण और समस्याओं का निस्तारण; अधिकाधिक ज्ञान, अनुसन्धानात्मक और कल्पनात्मक विचार-माला और युक्तिमूलात्मक पद्धति से प्रयुक्त व्यक्तिगत एवं सामाजिक प्रयत्न पर निर्भर है। इस प्रकार, अमरीकी अर्थ-व्यवस्था का अभिवचन मात्र एक अवसर ही नहीं है, वरन् एक चुनौती भी है।



इसके अतिरिक्त व्यापार-प्रणाली साधारण आर्थिक संस्थानों और सामाजिक मूल्यों के वातावरण में क्रियाशील रहती है। श्रमिक और व्यवस्थापक के संबन्ध, आय और स्वामित्व के वितरण, सामूहिक सम्बन्ध, सामाजिक सेवा-कार्य और शिक्षा आदि के वृहत्तर क्षेत्रों में नव-नवीन क्षितिज कौन-से हैं ? संक्षेप में, “जीवन-यापन की वह अभिनव और विकासमान परिकल्पना” कैसी और कौन-सी है, जो अन्ततया व्यापार और धंधे की प्रगति को एक स्वरूप देगी और जिसके विषय में इस ग्रंथ के रचना-कार ने संकेत किया है ?

प्रत्येक पीढ़ी ऐसे ही अथवा इसी प्रकार के प्रश्न पूछती है और स्वयं ही उनका उत्तर देती है। उत्तर-प्राप्ति का एक उपाय है—मूलभूत आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तनों का अध्ययन करना; ये परिवर्तन कई वर्षों से अस्तित्व में आते रहे हैं और भावी प्रवृत्तियों की दिशा-स्थिति का निर्देशन करते हैं। एक पीढ़ी-पूर्व, विशेष आयोगों के द्वारा इस प्रकार के पर्यालोकन या क्षेत्रमाप प्रस्तुत किए गए थे, इन्हें राष्ट्रपति हूवर का पृष्ठबल प्राप्त था। इन आयोगों के परिश्रम के परिणाम-रूप में ‘रिसेन्ट ईकनॉमिक चेन्जेज इन द युनाइटेड स्टेट्स’ और ‘रिसेन्ट सोशल ट्रेन्ड्ज इन द युनाइटेड स्टेट्स’ नामक दो ग्रंथ प्रकट हुए। सन् १९२६ के पश्चात् जो आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन हुए हैं, उनके—इसी भाँति के पर्यालोकन-प्रस्तुतीकरण-द्वारा वर्तमान पीढ़ी की समुचित सेवा हो सकेगी। और ऐसे पर्यालोकन शेष-संसार के समक्ष, अमरीका के न केवल व्यावसायिक वरन् आर्थिक और सामाजिक जीवन के नव-क्षितिजों की सुस्पष्ट भाँकी, प्रस्तुत करने में मूल्यवान सिद्ध होंगे। और जैसा कि इस ग्रंथ के कई रचनाकारों ने निर्देशित किया है, यह अवस्था विश्व-मुक्ति-संघर्ष-क्षेत्र में अमरीका की वैचारिक-स्थिति को बलवान् बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

वितरण के नवक्षितिज : २

[पॉल एम. माज़ुर, 'द स्टैण्डर्ड्स वी रेज़' के लेखक]

किसी यन्त्र या साधन-विशेष की कार्यप्रणाली और प्रक्रिया के विषय में वार्ता करने के लिए, यह आवश्यक है कि हम उस ढाँचे या रूपाकार को समझ लें, जिसकी परिसीमा में वह कार्य करता है। अतएव, मुझे यह अनिवार्य प्रतीत होता है कि हम आज के संयुक्त राज्य अमरीका के आर्थिक चित्र की संक्षिप्त रूपरेखा का ध्वनन करें और उस अवस्था पर भी विचार करें, जो भविष्य के गर्भ में है, ताकि हम जान सकें कि किस प्रकार की अर्थ-व्यवस्था के अंतर्गत वह कार्य-माध्यम, जो कि फुटकर बिक्री कहा जाता है और वह साधन, जिसे हम 'डिपार्टमेंट स्टोर' (वैभागिक-भाण्डार) कहते हैं, अपना काम करेगा।

आर्थिक परिस्थितियाँ और वातावरण

आसन्नभूत में हमने एक ऐसा दृश्य देखा है, जिसे कई नामों से पुकारा गया है—उसे मूल्यावपात या मंदी भी कहा गया है। आप, इसे चाहे जो कहें, पर आर्थिक जगत में एक ह्रास और गिरावट आई, जो सन् १९५४ में हमारी काँग्रेस के राजनैतिक स्वरूप को बदल देने के लिए काफी थी।

परिमाण की शब्दावलियों में अनुमापित यह गिरावट और मंदी साधारण थी। अर्थ-व्यवस्था के उस अंग में कि जिसे उत्पादन कहते हैं, यह गिरावट संभवतः दस प्रतिशत थी और खपत के क्षेत्र में बिल्कुल नहीं थी। शायद इसके मूल में, कई परस्पर उलझे हुए, कारण रहे हों, किन्तु उनमें प्रमुख, मेरे खयाल से सम्पत्ति-सूचियों के एकत्रीकरण के विपरीत अन-एकत्रीकरण था। मेरा विश्वास है, एकत्रीकरण से अन-एकत्रीकरण का यह परिवर्तन मूल्यावपात या मंदी का ५० प्रतिशत बैठता है। हमारे संयुक्त-राज्य अमरीका में तो यही अवस्था थी। प्रायः हमारे अधिकांश परिवर्तन सैद्धांतिक रूप से इस प्रकार के हैं—प्रथमतः व्यावसायिक अतिअनुमानिकरण

या अति प्राक्कलन, और उत्पादन के क्षेत्र में अति उत्पादन, तब परिस्थिति ऐसी आ जाती है कि व्यापार पर विपदा आती है और वह अन-एकत्रीकरण और अनतिप्राक्कलन की ओर तेजी से दौड़ता है ।

हाल ही में जो एक दूसरी घटना हुई है वह सम्पत्ति-सूचियों के अन-एकत्रीकरण से मिलती-जुलती है । वह घटना इस प्रकार है कि सरकार ने प्रतिरक्षा-विभाग का अपना व्यय, एक सीमा तक घटा दिया । इन दो आँकड़ों ने मिलकर (सम्पत्ति-सूचियों का अन-एकत्रीकरण और सरकारी व्यय में परिवर्तन) सन् १९५४ के हमारे लगभग समूचे मूल्यावपात या मंदी का प्रतिनिधित्व किया । भावों की इस गिरावट में दो और असाधारण तथ्य थे । एक तो यह था कि मूल्य का हमारा स्वरूप या ढाँचा असाधारण रूप में बढ़ रहा । ऐतिहासिक दृष्टि से देखने पर विदित होता है कि प्रायः ऐसा नहीं होता । उच्च स्तर पर मूल्यों की अवस्थिति का कारण, मेरे विचार से यह था कि श्रम का पारिश्रमिक और पगार ऊपर की ओर इस प्रकार बढ़ता रहा कि उसने उत्पादन-शक्ति के संवर्धन को बढ़ा दिया । दूसरी, जो चीज हुई, वह, यह थी कि उपभोक्ता व्यय बढ़ रहे रहे । अमरीकी स्त्री-पुरुष पूर्व की भाँति अब भी उसी दर, और लगभग उसी गति से खर्च करते रहे—न तो उसमें तीव्र उत्थान ही आया, और न तीव्र ह्रास ही प्रकट हुआ—इस अवस्था को ठीक ही कह सकते हैं ।

अब हम उस स्थिति में आ गए हैं कि जहाँ से हम दो, शायद तीन—महत्वपूर्ण और आवश्यक तथ्य देख सकते हैं । ऑटोमोबाइल उद्योग तीव्र गति से बढ़ रहा है—‘तीव्र अर्थात् ऐतिहासिक दृष्टांत या नवशे की दृष्टि से तीव्र ।’ ऑटोमोबाइल उद्योग अपने पुर्जों को, प्रतिवर्ष ७५ से ८० स्राख मोटरकार की गति से समवेत करता है । निर्माण के हमारे मुहूर्त भी तीव्र गति से बढ़ रहे हैं । अमरीकी अर्थ-व्यवस्था के ये दो महत्वपूर्ण तथ्य हैं ।

यह संभव है कि भूतकाल में हमने जो कुछ किया, भविष्य में भी उसे करें, अर्थात् हम अपने उत्पादन के साथ, खपत के स्तर से आगे बढ़ जाएँ ताकि सम्पत्ति-सूचियों का एकत्रीकरण हो जाए । और निश्चय ही, जैसा कि रात के बाद दिन आता है, यह स्थिति फिर से भावों के गिरावट का प्रवाह

और उत्पादन-शक्ति के विकास की प्रणालियों के अंतर्गत हमारे बाजारों की भी वृद्धि हो ।

यह तथ्य उस असाधारण प्रणाली की लाभधारा और हानियों की ओर इंगित करता है, जिसे अमरीका में हम विपुल-उत्पादन कहते हैं । विपुल-उत्पादन का वर्णन करनेवाले जितने तथ्य और तत्व हैं, मैं उनकी गहराई में नहीं जाऊँगा । यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि इसके लाभ इस तथ्य के अन्तर्गत हैं कि यह अमरीकी श्रमिकों को उचित पगार (वेतन) दिलवाता है । और ऐसा करते समय सेवा और माल की लागत में उतने अनुपात से बढ़ती नहीं होने देता । इसके शुभ परिणाम में हम विश्व-चत्वर में प्रतियोगी बन सकते हैं, भले, हमारे प्रतियोगियों की अपेक्षा हमारे पगारों का स्तर तिगुना, चौगुना, पंचगुना और चाहे दसगुना अधिक हो । इसका कारण यह है कि हमारे यंत्रीकरण के अन्तर्गत हमारी उत्पादन-शक्ति ऐसी ही असाधारण है । स्पष्ट है कि अभिवर्द्धित पगार देते रहने के लिए और मूल्यों या लागतों को स्थिर रखे-रहने के लिए आवश्यक है कि श्रमिकों की यही संख्या अपने कार्यकाल के एक घंटे के अन्दर अधिक से अधिक उत्पादन करे । अतएव, सुदृढ़ अर्थ-अवस्था में यह निश्चित है कि विपुल-उत्पादन, जैसा कि उसका स्वभाव है—बेकारी का विघाता होता ही है । अथवा इसे, दूसरे शब्दों में कहें तो विपुल-उत्पादन के लाभ प्राप्त करने के लिए विकास की दिशा में प्रगति होनी ही चाहिए, जिसके बिना, अर्थ-अवस्था में विपरीत-स्थितियाँ उत्पन्न होंगी ।

अब इस तस्वीर में एक नया और महत्वपूर्ण तत्व आता है—‘स्वचलन’ । मेरा खयाल है, यह और भी तीव्रगति से परिचालित होगा । इसकी परिधि में वह विकसित क्षेत्र भी सम्मिलित है, जिसमें ‘इंटरनेशनल बिजनेस-मैशिन्स कॉरपोरेशन’, सर्वथा सराहनीय कार्य कर रहा है । मेरा विश्वास है, यह क्लकों और निम्न-मध्यमवर्ग के समूहों में दरारें डाल देगा ।

आज, जब कोई व्यक्ति किसी यन्त्रालय में जाता है, विशेष कर ऑटो-मोबाइल कारखाने में, और पुर्जों की समवेत पंक्ति को देखता है, तो वह चकित रह जाता है और उसे वह अन्तर विदित हो जाता है, जो एक बैल-गाड़ी और एक अमरीकी ऑटोमोबाइल कार में है । ऑटोमोबाइल यन्त्रालय

सन् १९२० के आसपास की अवधि का महान् अमरीकी विकास-कार्य है। अभी हमने जिस अन्तर का उल्लेख किया है, वह एक पीढ़ी से भी कम समय में घटित हुआ है।

यह निश्चय है कि स्वचलन उत्पादन-शक्ति के प्रतिशत आंकड़ों की अभिवृद्धि पर पर्याप्त प्रभाव डालेगा। पहले के अंक चाहे जो हों—डाई अथवा तीन प्रतिशत—लेकिन निश्चित है कि भावी दशक में इन अंकों के साथ और भी बहुत-कुछ जुड़ जाएगा। इसका अर्थाशय यह हुआ कि हम, अपने लोगों की योग्यता और भी बढ़ा देंगे। मेरा मतलब है, 'उतने ही' लोगों की योग्यता। और ये लोग अधिक माल पैदा करेंगे। अतएव, चन्द लोगों की ही इतनी योग्यता होगी कि वे अधिकाधिक माल पैदा करेंगे। विकास के लिए यह भी आवश्यक है।

अतः अमरीका में, हमारे लिए तीन महत्वपूर्ण तथ्य ऐसे हैं, जो इस बात पर जोर देते हैं कि हम निरन्तरता बनाए रखने के लिए विकसित होते रहें। विस्मय है कि हम बहुत ही तीव्रगति से बढ़ते हैं। कुछ ही दिनों पहले किसी ने यह बयान दिया था कि विद्यमान सभ्यता में प्रति उन्नीस महीनों में हम उतना बढ़ जाते हैं और इतनी तेज़ी से बढ़ते हैं, जितना इतिहास के आदिकाल से आज तक बढ़े हैं। पलभर के लिए यह मान लें कि यह अतिशयोक्ति है, फिर भी यह तो सत्य है कि हम उत्थान की ओर तेज़ी से यात्रा कर रहे हैं। और जिस प्रकार चार सिलिंडर और साठ हॉर्स-पावरवाली मोटरकार के ज़माने की ओर हम वापस नहीं जा रहे हैं, उसी प्रकार हम अपनी उत्पादन-प्रणालियों के क्षेत्र में अस्पष्ट और बेढंगे साधनों की दिशा में नहीं दौड़ रहे हैं। अतएव, विकास की माँग इतनी अनिवार्य है, इतनी महत्वपूर्ण है कि अपने विचारों में उसे जगह देने का अर्थ हुआ विनाश को आमन्त्रण देना। मेरी बड़ी इच्छा है कि यह विश्वास हमारे राजनीतिज्ञों के मस्तिष्क में प्रविष्ट हो, फिर भले, वे काँग्रेसी हों, अर्थशास्त्री हों या व्यापारी हों।

विकास के स्रोत

यह विकास कहाँ से आएगा ? विकास के प्रमुख तत्व कौन-से हैं ? स्पष्टतया, प्रमुख तत्व तो यह है कि हमारी जनसंख्या—वर्द्धमान जनसंख्या है। ये लोग सिर्फ़ उत्पादक ही नहीं, उपभोक्ता भी हैं। और ये दो प्रकार से माल की खपत करते हैं अथवा दो प्रकार के उपभोक्ता बनकर। प्रथमतया परिवारों के रूप में और तदनंतर व्यक्तियों के रूप में। प्रत्येक समूह भिन्न प्रकार के माल का उपभोग करता है।

इस समय (१९५५) संयुक्त राज्य अमरीका में परिवारों की रचना न-कुछ-सी है। इसका कारण यह तथ्य है कि सन् १९३० में इतने कम आदमी पैदा हुए कि सन् १९५० में विवाह-योग्य व्यक्तियों की कमी रही, यह १९२९-३२ की आर्थिक मन्दी का नतीजा है, जो विश्व में अपने ढंग का अनोखा उदाहरण है।

वर्तमान काल में परिवार-रचना की सीमित संख्या के बावजूद भी, जन्म-मति बहुत ही ज्यादा है। सन् १९४० के आरम्भ से ही यह तीव्रगति निरन्तर चलती रही है। अतः हमारे सामने सम्भावना है कि सन् १९६० से परिवार-रचना-वृद्धि का प्रारम्भ हो जाए। इस प्रकार जहाँ तक परिवार-रचना का प्रश्न है, और इन परिवारों की जो आवश्यकताएँ हैं, उनसे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि हमारे सामने एक विकास-तथ्य अवश्य प्रस्तुत होगा।

नए परिवारों को किस चीज़ की जरूरत है ? ये, वे ग्राहक हैं, जिन्हें मोटरकारों और रेफ्रिजरेटर्स की आवश्यकता पड़ेगी। जिन्हें मकान भी चाहिए। घर-गृहस्थी के लिए आवश्यक सभी जरूरी चीज़ें, ये लोग खरीदेंगे।

विवाहों की संख्या कम होने पर भी, हमारी 'विशाल शिशु-फसल' (शिशुओं की अपार संख्या) इस समय एक दिलचस्प चीज़ है। क्या कारण है कि नव विवाहित दम्पति, अपने घर में कम नौकर होते हुए भी, अधिक बच्चे चाहते हैं ? अमरीका में केवल ढाई प्रतिशत परिवारों में ही घरेलू नौकर हैं। कुल इतने ही ! हम घरेलू-नौकर-विहीन लोग हैं।

विकास के मार्ग में 'शिशु-फसल' सभी प्रकार की आशाएँ विस्फ़ुरती है।

सन् १९७५ में जब तक बालक विवाह-योग्य नहीं हो जाता, उसके लिए कई प्रकार की चीजों की जरूरत पड़ती है। अतः खपत के लिए, जनसंख्या और परिवार-रचना के तथ्य महत्वपूर्ण हैं।

किन्तु, हमें ध्यान रखना चाहिए कि जिस प्रकार ये व्यक्ति-गण उपभोक्ता हैं, उसी प्रकार उत्पादक भी हैं। यदि हमारे यहाँ नौकरी के अवसरों में वृद्धि होती है तो साथ ही खपत में भी वृद्धि होती है। इसका तात्पर्य यह कि कुल आँकड़ों में ही नहीं, बल्कि प्रति परिवार या प्रति व्यक्ति भी खपत में वृद्धि होती है।

भला, यह वृद्धि कहाँ से आती है ? यह जीवन-स्तर के उत्थान से आती है। हमें ऐसी आवश्यकताएँ पैदा कर ही देनी हैं, जो कालांतर में अनिवार्य जरूरतें बन जाएँ। आज की समस्त कामनाओं के अतिरिक्त भी, हमें नवीन-तम कामनाओं की रचना करनी ही चाहिए। और मेरा खयाल है ये स्वयमेव तो नहीं ही आएँगी !

यह कहना काफ़ी नहीं है, जैसा कि बहुसंख्यक लोग कहते हैं कि आप माल और सामान सुलभ कर दें, बस, और लोग उसे खरीद लेंगे अथवा मूल्यावपात उसके वितरण को व्यवस्थित कर देंगे। काम ऐसे नहीं चलेगा। किसी व्यवसायी के लिए यह संकटप्रद दर्शन है और अर्थशास्त्र भी इसे ग्रहण नहीं कर सकता। मेरा खयाल है कि स्वचालित वितरण उससे अधिक नहीं हो सकता, जितना उत्पादन उसकी वृद्धि करता है। और उसकी यह वृद्धि स्वयंप्रसूत विकास है।

पूर्वापेक्षा हमें 'शिक्षण' का काम अब अधिक जोरों से करना पड़ेगा। यह शिक्षण उन्हीं दिशाओं में होगा, जिनमें अमरीकी पुरुष, खासकर स्त्रियाँ शिक्षित हुई हैं। यानी आप चीजों के घटने-कटने या टूटने से पहले, उनसे, अभ्यस्तता के आधार पर मुक्ति पा लें। यह तथ्य, हमारी कल्पनापेक्षा अधिक वृहत्तर क्षेत्र में प्रसारित होता है। हम इसे अनेक रूपों में प्राप्त करते हैं—मोटरकारें, टेलिविज़न और टेलिविज़न के बृहदाकार पर्दे। यह तोरे हुबा घर-गृहस्थी का काम। हम सारे पास-पड़ोस को बदल देते हैं। हमें अधिक अन्धरी चीजें बेचने का पाठ पढ़ना होना। अधिक अच्छे ढंग से

विज्ञापन करने की कला सीखनी होगी। मानव-मनों में जिन मूल आर्थिक कामनाओं की कोई सीमा नहीं है, उन्हें परिवर्तित करना होगा। और इन कामनाओं को माल और सामान की माँग की दिशा में मोड़ देना होगा। और सिर्फ इतना ही काफी नहीं कि लोगों की क्रय-शक्ति बढ़ जाए !

विज्ञापन का विद्यमान प्रवाह कुछ भी नहीं है, उस अनंत प्रलय-प्रवाह के सम्मुख, जिसे हमें शीघ्रातिशीघ्र अपने भावी ग्राहकों की ओर बहाना पड़ेगा। यदि यह महत्-कार्य सुचारुरूप से सम्पन्न हो गया तो, हम इसके अभाव को महसूस न करेंगे। मैं नहीं मानता कि विज्ञापन, यदि वह प्रभाव-पूर्ण रूप से किया गया है, तो उसके परिणाम का कोई अन्त भी है। आप एक बहुसंख्य समुदाय ले लीजिए और उसे पर्याप्त आय और आत्म-सम्मान-भावना दे दीजिए और आप देखेंगे कि यह समुदाय पैसा खर्च करने के हज़ारों तरीके और रास्ते निकाल लेगा। एक चीज़, जिसके बारे में पुरातन अर्थशास्त्र सही है, वह यह कि मानव-लालसाओं और कामनाओं का अन्त नहीं है। संसार में साधारण-अति-उत्पादन एक खतरनाक पदावली है, क्योंकि जब यह स्वरूप ग्रहण करती है तब मूल्यावपात और मंदी आ सकती है। लेकिन कुल मिलाकर दूरावधि में साधारण अति-उत्पादन जैसी कोई चीज़ नहीं।

विक्रय-विभाग के किसी विशिष्ट कार्यक्रम के लिए पर्याप्त रूप से निन्दित शब्द 'शोध' महत्वपूर्ण है, क्योंकि वितरण के क्षेत्र में इस शब्द का प्रयोग नहीं होता। संयुक्त राज्य अमरीका में हम साढ़े तीन मिलियन डॉलर प्रति वर्ष उत्पादन संबंधी शोध पर खर्च करते हैं और मेरे खयाल से वितरण और फुटकर बिक्री के लिए सम्भवतया हम साढ़े तीन सेंट खर्च करते हैं—हालाँकि यह भी मूल रूप में वैसा ही शोध-कार्य है। यह एक उलझी हुई समस्या है, क्योंकि हम चीज़ें खरीदते हैं अथवा बड़ी तादाद में उनका निर्माण करते हैं, लेकिन बेचते हैं एक-एक कर-व्यक्तियों के द्वारा व्यक्तियों को। इसके कारण ऐसे भयंकर गणितांक और परिवर्तन उत्पन्न होते हैं जो इतने भयानक होते हैं कि व्यवसायीजन उन्हें नज़र-अंदाज़ कर, अपनी समस्या सुलभते हैं। तथापि एक सरल उपाय है, जिसका प्रयोग किया जा सकता है। हम चार प्रकार के लोगों को चीज़ें बेचते हैं—पुरुष, स्त्रियाँ, लड़के और

लड़कियाँ। हम इन स्त्री-पुरुषों और लड़के-लड़कियों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि हम उनकी रुचियों और उद्देश्यों का निर्णय कर सकें। इसके फलस्वरूप हमें पूर्वानुमान पाने में सुविधा हो सकती है। और वह प्रत्येक सूत्र जो हमें यह बताता है कि नपभोक्ता की दृष्टि से किसी वस्तु विशेष का क्या स्वरूप या मूल्य होना चाहिए, वही हम को बतलाता है कि अत्यन्त प्रभावपूर्ण रीति से विक्रय कैसे बढ़ाना चाहिए।

अतएव हमारे लिए, शोध और अधिक अच्छे ढंग से विक्रय के रूप में एक विकास-कार्य पूरा करना अनिवार्य है। हमें विक्रय-कला सीखनी है। हमें अमरीकी उद्योग का प्रभाव-क्षेत्र बदलना है, ताकि हम उत्पादन या वस्तु-उपलब्धि से भी विक्रय को अधिक महत्वपूर्ण बना दें या कम से कम उतना ही महत्वपूर्ण तो बना ही दे। इसी प्रकार, हमें उपलब्धियों और पारितोषिकों का भी समीकरण करना ही होगा।

हमें उन सभी चीजों को बदलना ही पड़ेगा, जिन्हें बदल देने के लिए अमरीकी अर्थस्थिति जोर देती है, भले, अमरीकी व्यवसायी इस प्रकार के निर्णयों को ग्रहण करना अस्वीकार करे। यदि आर्थिक अवस्था कहती है कि अमुक वस्तु विध्यनुकूल है तो, मैं तो उससे सहमत होने के लिए तैयार हूँ।

हमें माल की परिकल्पना या रूपांकन में नवीनीकरण करना होगा, ताकि वह लोगों को पसंद आए। ऐसी कई संस्थाएँ हैं जो इस दिशा में काम कर रही हैं क्योंकि परिवर्तन-चाहे वे किसी हेलि-कोप्टर में हों, चाहे किसी नए टायर में हों, किसी टेलिविज़न या जेबी रेडियो में हों—नई माँग को उत्तेजना देनेवाले प्रमुख साधन हैं।

जिसकी परिकल्पना में परिवर्तन अनिवार्य प्रतीत होता है, ऐसी एक चीज है, रहन-सहन का तरीका। हमारी बिक्री के क्षेत्र में जीवन-यापन और रहन-सहन का तरीका एक प्रमुख तथ्य है। पिछले दस या बारह वर्षों में अमरीका में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है, वह है—पाँच दिन का सप्ताह, न कि चालीस घंटे का सप्ताह या ४२ या ३६ घंटे का सप्ताह, वरन् पाँच दिन का सप्ताह, क्योंकि गणित की घटना के फलस्वरूप यदि आप ७

में से ५ घटाएँ तो आपको विस्मय होगा कि २½ बचता है। प्रतिफल में आपको २½ का अंक इसलिए मिलता है कि यदि लोग ५ दिन काम करते हैं तो वे शुक्रवार की दोपहर में छुट्टी कर देते हैं और इस प्रकार उन्हें शुक्रवार की पूरी शाम, शनिवार का पूरा दिन और रविवार का भी पूरा दिन अपने परिश्रम या रागरंजन के लिए मिल जाता है।

विरामकालीन उत्पादकता

अमरीकी लोग अपने विराम के समय सदैव व्यस्त रहते हैं। अपने कार्यकाल में वे कम से कम खर्च और उपभोग करते हैं और उसका अधिकांश भाग अपने विराम-काल में व्यय करते हैं। जिस प्रकार उत्पादन के क्षेत्र में यंत्रचक्र ने एक महत्वपूर्ण कार्यभाग संपन्न किया है, उसी प्रकार ढाई दिन के इस सप्ताहांत ने खपत के आर्थिक क्षेत्र में एक सराहनीय अभिनय पूरा किया है। इसने विराम-काल की अवधि में प्रतिशत वृद्धि विशेष की है, जो कि हमारे विगत समय की तुलना में अत्यधिक है। यही अतिप्रयुक्त अथवा किसी अंश तक निंदित शब्द 'उपनगरिया' का मूलधार रहा है, क्योंकि प्रलंब सप्ताहांत की अनुपस्थिति में उपनगरों में जाने-आने का कोई महत्व नहीं रहता और मिलना-जुलना और मनोरंजन असंभव हो जाता है। इसने पारिवारिक जीवन को नया रूप दिया है। आश्चर्य की बात तो यह है कि घर के बड़े-बूढ़ों को भी प्रभावित किया है, जैसे पिताजी, जिन्हें कि इसने रसोइया—भला या बुरा रसोइया, बना दिया है। और इसी प्रकार घर के हरेक आदमी को एक न एक काम में लगा दिया है। इसने विशेष प्रकार के गृहनिकेतन बना दिए हैं—विकेन्द्रीकृत गृहसमूह—जो आधुनिक समय में बननेवाले ८० प्रतिशत मकानों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसने सर्वथा नई सड़कों की आवश्यकता पैदा कर दी है और इसी तरह नई चीजों की जरूरतें बढ़ा दी है। इसके कारण दूकान और खरीदी के नए केन्द्र और उद्योग का विकेन्द्रीकरण स्थापित किया है। व्यापार उपनगरों की स्थिति और उनकी बस्तियों का लाभ उठाने में समर्थ है। साथ ही लोगों को भी (ऐसे लोगों को जो स्वल्प समय की यात्रा-द्वारा अपने काम पर आते-जाते हैं) सन्नयित दी है।

ढाई दिन का सप्ताहांत निश्चय ही ऑटोमोबाइल और तेल-उद्योगों पर अपनी छाप छोड़ेगा। और आगामी दो दशकों में अधिक महत्वपूर्ण प्रभाव स्थापित करेगा। अभी हमने इस प्रभाव के विषय में कम सोचा-समझा है।

नया कदम—क्षेत्रीय विक्रय-केन्द्र

चूँकि हमारा वार्ता-विषय वितरण है, जिस बड़े विकास में हमारी रुचि है, वह न तो पारिवारिक इकाई है और न घर में पिताजी की स्थिति ही है, वह है क्षेत्रीय विक्रय-केन्द्र, जिसकी विभिन्न भाँति से व्याख्या की गई है। प्रायः पहले के किसी खेत पर विक्रय-केन्द्र लग जाता है और कार और दूसरे वाहन खड़े करने के स्थान से घिरा हुआ—यह विक्रय-केन्द्र छोटी-बड़ी दुकानों का एक समूह है। साधारणतया, यह नागरिक-समाज से दूर स्थित होता है। कई अस्थायी विकास भी इस दिशा में होते हैं, जैसे संयुक्त राज्य अमरीका का हेम्पस स्टीड, जो कि आज के सबसे सफल केन्द्रों में है। लेकिन, वास्तव में वह भी एक क्षेत्रीय विक्रय-केन्द्र नहीं है।

पहला केन्द्र, आपको जानकर आश्चर्य होगा कि सीटल था जो वाशिंगटन के नॉथिंगेट स्थान में स्थित था। सबसे बड़ा केन्द्र डेट्राइट में था। प्रायः विक्रय-केन्द्र कई छोटे-छोटे भाण्डारों का एक समूह होता है जो यातायात को घेरे रहता है। और यातायात का आकर्षण-केन्द्र बहुसंख्यक विभागीय भाण्डार हैं। इन केन्द्रों के विकास का निर्णय यातायात की समस्या-द्वारा निर्णीत होता है। अभी सफल विक्रय-केन्द्र बनाने के लिए कोई निश्चित नक्शा नहीं है। अभी यह प्रारम्भिक अवस्था में है—भूल-चूक, जाँच और सही स्थान आदि की दृष्टि से प्राथमिक दशा में है।

स्थान और स्थिति—शब्दों के अन्तर्गत हम नए प्रकार की परिधि विकसित कर रहे हैं। प्रायः ऐसा होता रहा है कि यदि आप किसी नक्शे विशेष पर एक परिधि-रेखा खींचना चाहते हैं तो आप कम्पास उठाकर उसकी भुजाओं से दो या तीन इंच के घेरे की रेखाएँ खींचते हैं, जो कि मीलों की दूरी की सूचक होती है। अब यह स्पष्ट है कि ये परिधि-रेखाएँ समय की गणना के आधार पर अंकित हुई हैं, यानी एक स्थान से चलने पर दूसरे

स्थान तक पहुँचने में कितना समय लगता है। संभव है कि एक परिधि पाँच मील लम्बी हो और उससे नातिदूर दूसरी रेखा पंद्रह मील की हो, क्योंकि इन दोनों को पार करने में उतना ही समय लगता है, यही क्रिया बाजारों पर भी लागू होती है। विक्रय-क्षेत्र में केन्द्राकर्षण के विकास और छोटे-छोटे भाण्डारों से उसके सम्बन्ध आदि, इसी समस्या के अंग हैं। क्या आप चाहते हैं कि दो केन्द्र या दो आकर्षण रहें—प्रत्येक अन्तस्थल पर एक बड़ा भाण्डार-गृह या मध्य में बड़ा भाण्डार-गृह रहे तो, क्या आप चाहते हैं कि लोग बड़े भाण्डार-गृह तक जाने के पहले छोटे-छोटे भाण्डारों की गलियों से गुज़रें। ये सब वे चीज़ें हैं, जो निर्माण-वस्था की प्रक्रियाओं में से गुज़र रही हैं। तथापि एक बात स्पष्ट है कि इन भाण्डारों के लिए वाहन खड़े करने की उचित व्यवस्था होनी ही चाहिए।

इस नव विकास-क्रिया में भूलें भी होंगी और मैं यह नहीं मानता कि विक्रय-केन्द्रों का विकास, संख्या की दृष्टि से, उस सीमा तक नहीं होगा, जिस सीमा की अपेक्षा उसके प्रस्तावकों ने रखी है, परन्तु उसके विरोधकों ने उसे जितना महत्वहीन बतलाया है, उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण, ये होंगे। और अवश्य ही शहरी केन्द्रों पर इनका भारी असर पड़ेगा, क्योंकि ज्योंही ये क्षेत्रीय विक्रय-केन्द्रों की प्रतियोगिता में आते हैं, कस्बों और शहरों में व्यापार केन्द्रों के नए सहायक-स्थल और वाहनों के लिए नए केन्द्र भी खुल जाएंगे। समाज अपने साधारण नागरिक—स्त्री, पुरुष या परिवार के सामने जो मूल्य और पदार्थ पेश करना चाहता है, उनका महत्व बहुत बढ़ा है और भविष्य में भी प्रलम्बकाल तक बढ़ा ही रहेगा।

विभागीय भाण्डारों का क्या होगा? विक्रय-केन्द्र, जिसके अन्तर्गत विभागीय भाण्डार-गृह है, परस्पर प्रभाव डालते हैं। यदि केन्द्र-समाज में बड़ा भाण्डार, जो छोटे भाण्डार को जन्म देता है, प्रभावपूर्ण है तो वह समाज से अधिकांश लाभ उठाएगा। ऐसी अवस्था में छोटे भाण्डार-गृह बड़े भाण्डारों से भी कुछ ग्रहण करेंगे।

इनके अतिरिक्त कुछ परोक्ष प्रभाव भी हैं। ये परोक्ष प्रभाव फुटकर क्रयविक्रय की समस्या से सम्बन्धित हैं। यदि छोटे भाण्डारों में क्रयविक्रय

विभक्त हो जाते हैं, तो अवश्यमेव बड़े भाण्डारों में भी विभक्तीकरण होगा ।

विभागीय भाण्डारगृहों में कुछ कमजोरियाँ और अपनी शक्तियाँ भी हैं । इनकी शक्तियों में विविध वस्तुएँ और विशाल व्यवस्था आदि है । और इनकी कमजोरी यह है कि यह अन्य प्रकार की दूसरी सेवाओं के प्रतिद्वन्द्वी हैं । मेरे खयाल से इस निर्बलता का पूर्वानुमान अतिरंजित है । विभागीय भाण्डार को अपना प्रभाव-भार अन्यत्र स्थापित करने की कला सीखनी होगी । चूँकि यह, प्रारंभिक अवस्था में एक क्रयक इकाई के रूप में विकसित हुआ है, इसके सामने सुचारु व्यवस्थाहीनता की समस्या समुपस्थित है । अतएव भविष्य में इसे विक्रय पर पूर्ण ध्यान और प्रयत्न के द्वारा अपनी अभिनव शक्ति का अर्जन करना होगा ।

किन्तु इसकी एक शक्ति बहुत ही स्पष्ट और विवादरहित है । वह, यह कि इसकी नकल की जा सकती है, यही इसका सबसे बड़ा गुण है । डाक या रेलवे-आर्डर द्वारा व्यापार का विकास डाक-व्यवस्था-प्रणाली-द्वारा अभिवर्द्धित नहीं हुआ है । वरन् भाण्डारों के विकास-द्वारा हुआ है । यही समानान्तर रख अन्य भाण्डार शृंखलाओं ने भी दिखलाया है । इन भाण्डारों में सभी प्रकार के भाण्डार-गृह और बड़े-बड़े बाज़ार सम्मिलित हैं । दवाइयों के भाण्डार भी इनमें सम्मिलित हैं । व्यापार की भाषा में जिन्हें बड़े-बड़े भाण्डार और कमीशन देनेवाले केन्द्र कहते हैं, उनसे उत्पन्न प्रतियोगिता भी फुटकर बिक्री के विकास की प्रक्रिया का एक कारण रही है । संभवतया आज विभागीय भाण्डारों की प्रमुख समस्या यह है कि उन पर कई नियंत्रक बन्धन लगे हुए हैं अतएव कार्य करने की स्वतंत्रता नहीं है । फलस्वरूप, विभागीय भाण्डार-गृह प्रतीक्षा की ओर अत्यधिक भुके हुए हैं । और कई चीज़ों को वे नज़र अंदाज़ कर जाते हैं, तथापि यह विश्वास है, उनकी शक्ति के खिलाफ़ कोई सवाल खड़ा नहीं होता । जीवन-यापन के स्वरूप में उपस्थित परिवर्तन उनके लिए विकास के अनन्त अवसर उपलब्ध करता है । वितरण का यह परिवर्तित क्षितिज साधारण रूप में वितरण पर वृहत्तर आवश्यकता-भार डालता है, जिसमें प्रमुख है—फुटकर बिक्री और अत्यन्त महत्वपूर्ण है—विभागीय भाण्डार, यदि हम क्षुद्रभुत उत्पादक

हिस्सा कमाना चाहते हैं और उसे स्वतंत्ररूप से रक्षित रखना चाहते हैं। लेकिन उसके लिए उचित व्यवस्था अत्यन्त आवश्यक है। विभागीय भाण्डारों के व्यवस्थापकों को अपनी समस्याओं का निदान पाने की कला सीखनी है। यदि उन्होंने ऐसा न किया तो, उनका व्यापार कुछ ही दिनों में बंद हो जाएगा। इस दृष्टि से; चाहे पुराने खादमी ही व्यवस्था देखते रहें, फिर भी, हमें 'नई' व्यवस्था की आवश्यकता रहेगी। यह, बैंक-व्यवसाय और साधारण रूप से सभी उद्योगों पर लागू होता है।

यहाँ पूंजी सम्बन्धी कुछ दिलचस्प सवाल सम्मिलित होते हैं। स्पष्ट है कि फुटकर बिक्री-संस्थाओं और विभागीय भाण्डारों को पूर्वकाल में कम पूंजी की जरूरत पड़ती थी। यह तो, द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् ही इनके लिए माल के संचय में अधिक धन लगाने लगा। लेकिन भावी की नई विकास-परियोजना के लिए डॉलर की पर्याप्त राशि आवश्यक होगी, क्योंकि नई इकाइयाँ अधिक व्ययसाध्य हैं।

विभागीय भाण्डार स्थायी आधार पा रहे हैं :

यह चिन्ता का विषय नहीं है कि वर्तमान पूंजी का सम्भाव्य व्यय एकदम लाभकर नहीं है। लाभरहित विकास-कार्यों को हाथ में लेकर, भाण्डार क्या सीख रहे हैं ! ऐसे विकास-कार्यों में वाहन खड़े रखने के स्थान, ताप-नियंत्रण आदि सम्मिलित हैं। इन कार्यों के लिए दूसरा तरीका है : क्रय की गई सुविधाओं को फिर से पट्टे पर देना। अभी भांडार अपनी पूंजी का अधिकांश भाग त्वरित उत्पादित वस्तुओं के लिए लगाते हैं। फुटकर बिक्री में लाभ का अंश कम नहीं है, वरन् काफी ज्यादा है। क्रय-विक्रय की सुविधाओं की वृद्धि के निमित्त संचित धन, 'प्रतिरक्षात्मक' कहा गया है। कई चीजें 'प्रति-रक्षात्मक' हैं। संसार में हम साधारणतया जो कुछ करते हैं, प्रतिरक्षात्मक है।

आप कहेंगे—दुकान का ताप-नियंत्रण इसलिए आवश्यक है कि खरीदार अधिक सुविधाजनक रूप में खरीदी कर सकें। अतएव, प्रतिरक्षात्मक उपाय का व्यय कम करने के दूसरे कई साधन हैं। निवास-स्थान से की जानेवाली सुलना के विषय में, मैं समिक भी चिन्तित नहीं हूँ, क्योंकि यदि निवास-स्थान

ताप नियंत्रित होगा और भाण्डार नहीं होगा तो फोन से ऑर्डर दे दिया जाएगा । अतएव, मेरा खयाल है, अब आप जान गए हैं कि लागत पूँजी पर प्राप्त लाभान्श उचित एवं पर्याप्त है !

भविष्य के विषय में, मैं पूर्णरूपेण आशावादी हूँ । भावी धाय और उपलब्धियों का अनुमान लगा-लेना कठिन न होगा, लेकिन, वह मेरा काम नहीं है । मेरा काम तो यह देखना है कि विभागीय भाण्डार अपना आधार खो रहा है या नहीं ? मेरा विश्वास है, देयादेय फलक निकालने पर विदित होगा कि विभागीय भाण्डार आधार ग्रहण करता जा रहा है ।

हमारा आर्थिक भविष्य : १९५५-७५ : ३

आठ दूरावधि परियोजनाओं का तुलनात्मक विवरण

[जूलियस हर्श, आर्थिक परामर्शदाता एवं 'बिजनैस-एडमिनिस्ट्रेशन सेन्टर आफ़ द न्यू स्कूल फॉर सोशल रिसर्च' के डायरेक्टर]

सन् १९५४ के अक्टूबर की २० वीं तारीख को, जब कि चुनाव की सर-गर्मी अपने पूरे उफान पर थी, राष्ट्रपति आइजनहॉवर ने अपने पूर्व-कथन द्वारा सब को आश्चर्य-चकित कर दिया। आपने बताया कि वर्तमान मूल्यों के दर के अनुसार १९६५ में कुल राष्ट्रीय उत्पादन का लक्ष्य ५०० बिलियन डॉलर हो जाएगा। ज़रा—१९५४ के कुल राष्ट्रीय उत्पादन—३५६ बिलियन डॉलर से इसकी तुलना कीजिए। इस प्रकार तो, १९६५ तक, प्रतिवर्ष औसत ४ प्रतिशत अतिवृद्धि होगी या कुल ४० प्रतिशत की वृद्धि होगी।

राष्ट्रपति ने ये आँकड़े आखिर कहाँ से प्राप्त किए! सन् १९५२ से १९५४ तक आठ पूर्णनिष्णात पूर्व-कथकों ने कुल राष्ट्रीय उत्पादन के संबंध में परियोजनाएँ बनाई थीं। इनमें आर्थिक विवरण प्रस्तुत करनेवाली 'कांग्रेस की ज्वाइंट कमिटी' भी सम्मिलित है। पूर्ण अध्ययन के आधार पर, इन सब ने दूरावधियों के उपयुक्त, कई तथ्यों की सम्बन्ध-स्थापना की थी। हमने इनमें से कई, प्रकाशित अनुमान-पत्रकों पर विचार किया है, उनकी तुलना की है, सिर्फ़ इसलिए नहीं कि ये राजनैतिक अथवा अर्थ-शास्त्र सम्बन्धी महत्व रखते थे, बरन् इसलिए कि राष्ट्र के व्यवसाय और विचार के विषय में इन दूरावधि परियोजनाओं का महामहत्व है।

दूरावधि पूर्वानुमान

(निजी अर्थ-अवस्था के अन्तर्गत विकास)

पुराकाल से ही, दूरावधि-पूर्वानुमान-परम्परा राज्य-सरकारों के लिए अनिवार्य आवश्यकता रही है। इस आवश्यकता के क्षेत्र और विषय सर्व-स्पर्शी रहे हैं, जैसे प्रतिरक्षा की योजना, परिवहन, नगर और गाँवों के नवशे

और ज़मीन । इसी प्रकार खदान और वन-विषयक कार्यों के लिए दूरावधि आयोजन अनिवार्य रहा है । फिर चाहे उसकी व्यवस्था सरकार ने की हो, अथवा सार्वजनिक या अर्द्ध-सार्वजनिक संस्थाओं ने ।

पिछले कुछ दिनों तक यह परिपाटी रही है कि निजी-उद्योगों के व्यवस्थापक, योजनाओं में रुचि नहीं रखते थे, या सम्भव है, उनमें अपना कोई लाभ नहीं देखते थे । विगत कुछ वर्षों के अनन्तर अधिकाधिक उद्योग-व्यवसाय दूरावधि पूर्वानुमान की आवश्यकता महसूस करने लगे । जितनी बड़ी पेढ़ी उतनी बड़ी उसकी योजना, विशेष कर लागत पूंजी । इतना ही नहीं, ये पेढ़ियाँ अपनी योजनाओं को बाज़ार के भावी एवं दूरावधि विकास के अनुरूप बनाने लगे ।

सन् १९५२ में अपनी व्यापारिक योजनाओं की सहायतार्थ 'राक़ आफ़ एजेज़ कार्पोरेशन' ने दूरावधि आर्थिक भविष्य के संबंध में नवीन में से प्रथम अध्ययन-कार्य आरंभ किया । तब रसायन, फौलाद और अन्य उद्योगों ने इसका अनुगमन किया । इन उद्योगों की कई संस्थाएँ आज पाँच, दस या पच्चीस वर्ष आगे परियोजना-रचना करती हैं । और वे समय से पहले ही अपनी लागत, नई सुविधाओं के संबंध में आयोजन, कच्चे माल और श्रमिकों के विषय में नीति-निर्धारण आदि कार्य-सम्पादन कर लेती हैं । जनरल मोटर्स ने १ बिलियन डॉलर की भावी त्रि-वर्षीय लागत-योजना प्रकाशित की है । (सन् १९३९ में पूरे ऑटोमोबाइल उद्योग का मूल्य १ बिलियन डॉलर आँका गया था !) फोर्ड संस्थान ने पंचवर्षीय पूर्वानुमान तैयार किए हैं ।

सन् १९५२ के पश्चात् प्रकाशित आठ दूरावधि साधारण पूर्वानुमानों में से तीन सन् १९६० में समाप्त होते हैं । एक सन् १९७० में, और एक सन् १९७५ में । इनमें से सभी सम्पूर्ण राष्ट्रीय उत्पादन और जनसंख्या का प्राक्कलन प्रस्तुत करते हैं । और सभी उत्पादन-शक्ति से सम्बन्धित विकास के सुस्पष्ट अनुमान पर आधारित हैं, अथक प्रतिमानव-घण्टा के उत्पादन से सम्बन्धित हैं । कुछ ऐसे भी हैं, जो आज से दस या बीस वर्ष आगे के, औसत

साप्ताहिक घण्टों के काम के आँकड़े प्रस्तुत करते हैं। और कुछ आगामी सरकारी व्यय-सम्बन्धी, तथा, दूसरे आँकड़े प्रस्तुत करते हैं।

ये सभी पूर्वानुमान—यह प्रकट करते हैं कि यदि, भविष्य में कहीं-कोई ऐसी अवधि-दशा उपस्थित हुई कि भाव गिर जाएँ तो उसकी क्षतिपूर्ति विशिष्ट प्रसारण-द्वारा होगी। ताकि औसत रूप में, आर्थिक विकास उस दर के समान होगा, जो सतत लगभग पूर्णसेवानियोजन द्वारा उत्पन्न होगा। इनमें से कोई पूर्वानुमान, किसी महायुद्ध अथवा किसी बड़े व्यापारिक शैथिल्य या मन्दी पर विचार नहीं करता। और इनमें से कोई भी मुद्रास्फीति या विस्फीति के विषय में स्पष्टतया अपना मत व्यक्त नहीं करता।

भावी भेद-प्रभेद का ज्ञान

सन् १९५२ के हमारे पूर्वानुमानों ने स्पष्टरूप से कुछ ऐसी तिथियाँ बतलाई थीं, जिनके आस-पास कतिपय आर्थिक परिवर्तन और उनसे उत्पन्न विघ्न घटित होनेवाले थे। ये तिथियाँ थीं—१९५३, १९६० का पूर्वकाल, और १९७० के आस-पास या आरम्भ की अवधि।

तब हमने यह जान लिया था कि प्रतिरक्षा-व्यय की कटौती के कारण १९५३ के आरम्भ में मूल्यावपात का दौर शुरू होगा। १९६० का पूर्वकाल और १९७० का आरम्भ समस्यामूलक माना गया, क्योंकि इस अवधि में १९४० और १९५० की तेज़ी बाज़ार में अचानक प्रविष्ट होती है।

अर्थ-अवस्था का दुहरा स्वरूप

जब कि कुछ पूर्वानुमान बहुत अनुदार कोटि के थे और कुछ क्षति आशा-वादी थे, कुल मिलाकर, साधारण प्रयोजन यों प्रकट हुआ कि आगामी २०—२५ वर्षों में अर्थ-व्यवस्था को दुगुना बढ़ा दिया जाए और सन् १९७५ तक हमारा जीवन-स्तर भी लगभग दुगुना कीमती हो जाए।

तालिका १
जनसंख्या, उत्पादन और जीवन-स्तर
कुल राष्ट्रीय उत्पादन बिलियन-डॉलर में

	१९५१	१९५२	१९५३	१९६०	१९६५	१९७०	१९७५
हर्ष	—	३४५	—	४४०	५३०	—	७६३
कॉम	३२६	—	—	४२५	—	—	—
एन्सली	—	—	३६४.६	—	५२५-५३५	—	—
वेयरहॉज़र	—	३४८	—	४१२	४६५	५२७	५८६
कैसरलिंग	—	—	३६३.९	५००	६००	—	—
मेक्ग्राहिल्	—	—	३६७	४१५	—	५६२	—
पाले रिपोर्ट	३२९	—	—	—	—	—	६३४
ड्यूहर्स्ट	—	—	—	४१२.५	—	—	—

जनसंख्या (दस लाख में)

हर्ष	—	१५१.४	—	१६९.१	१८३	—	१९७.८
कॉम	—	—	—	१६९	—	—	—
एन्सली	—	—	१५९.६	—	१८९.९	—	—
वेयरहॉज़र	—	१५७	—	१७६	१८७	१९९	२१२
कैसरलिंग	—	—	—	—	—	—	—
मेक्ग्राहिल्	—	—	१५९.६	—	—	१९१.७	—
पाले रिपोर्ट	१५१	—	—	—	—	—	१९३
ड्यूहर्स्ट	—	—	—	१७७.०	—	—	—

प्रति व्यक्ति व्यवसाय आय—

हर्ष	—	१४२५	१८३४	२२०४	—	२८२८
कॉम	१४५८	—	१८००	—	—	—
एन्सली	—	—	१५६७	२०००	—	—
वेयरहॉज़र	—	—	१५२२	१५९२	१६६५	१७३१
कैसरलिंग	—	१४२५	—	—	—	—

मेक्ग्राहिल्	—	—	—	१७०८	—	२१६५	—
पाले रिपोर्ट	—	—	—	—	—	—	—
ड्यूहर्स्ट	—	—	—	१६१०	—	—	—

ज्यों-ज्यों सुदूर-तिथियों को छूते हैं, त्यों-त्यों विभिन्न पूर्वानुमानों के भेद और भी बढ़ जाते हैं। लेकिन सन् १९६० और १९६५ के लिए भी, कुल राष्ट्रीय उत्पादन के विभिन्न अंकों की समानता आश्चर्यजनक रूप में निकट, अत्यधिक निकट है। परस्पर उनका नैकट्य अपनी-अपनी स्थिति को दृढ़ता देता है।

सर्वाधिक विभेद एवं वैविध्य का मूल-स्रोत उत्पादन-शक्ति विषयक पूर्वानुमान में निहित है। इसकी तुलना में, अन्याय अस्वीकारोक्तियाँ स्वल्प हैं।

उत्पादन-शक्ति के सम्बन्ध में किसका कथन यथार्थ है ?

अधोलिखित आठों पूर्वानुमान अपने-अपने प्राक्कलनों के विषय में मतभेद रखते हैं। तालिका संख्या २ से यह स्पष्ट हो जाएगा—

तालिका संख्या २

सन् १९५१-१९५७ तक के

उत्पादन-शक्ति विषयक आठ पूर्वानुमान

प्रतिमानव-घंटा उत्पादन में वृद्धि	१९५१.	१९५२.	१९५३	१९६०.	१९६५.	१९७०.	१९७५.
हर्श	—	३.५	—	२.५-३.	२.५-३	२.५-३	२.५-३
कॉम	२.७	—	—	२.५	—	—	—
एन्सली	—	—	२.७५-३	२.५-३	२.५-३	२.५-३	२.५-३
वेयरहाज़र	—	१.५	—	१.५	१.५	१.५	१.५
कैसरलिंग	—	—	—	३.५-४	—	—	—
मेक्ग्राहिल्	—	२.५	—	२.५	२.५	२.५	२.५
पाले रिपोर्ट	—	२.५	—	२.५	२.५	२.५	२.५
ड्यूहर्स्ट	—	—	—	२.३	—	—	—

उत्पादन-शक्ति के भावी विकास के सम्बन्ध में कौन ठीक है ? संयुक्त राज्य अमरीका दूसरी पीढ़ी में जो सम्पन्नता और आर्थिक सुविधाएँ एवं सुखोपभोग प्राप्त करेगा, उसका आधार, इस प्रश्न के सही उत्तर पर अवलम्बित है। इससे पूर्व भी, उत्पादन-शक्ति का विकास होता रहा है।

उत्पादन-शक्ति के विषय में वेयरहाज़र के १.५ प्रतिशत अंक, बहुत कम कहे जा सकते हैं। विगत के, सरकारी तौर पर स्वीकृत सब से कम अंक और दर २.१ प्रतिशत है।

सन् १९५३ के बाद के वर्षों के लिए, हमारे और अन्य सज्जनों के प्राक्कलन लगभग २.५ से ३ प्रतिशत हैं।

मेरा खयाल है, हमारी उत्पादन-शक्ति ने अतीत में महान् कार्य सम्पन्न किए हैं, किन्तु उस सीमा तक उसका स्वीकरण नहीं हुआ है। भविष्य में भी वह महान् कार्य करेगी। अमरीका के लिए यह गौरव की बात है, और हमें इसके विषय में अधिक जानना चाहिए। उदाहरण के लिए, ध्यान में रहे कि उत्पादन-शक्ति के अंकों ने किस प्रकार लागत-वृद्धि का अनुगमन किया है। सन् १९३९ में संयुक्त राज्य अमरीका के कुल निर्माण-उद्योग का मूल्य अनुमानतया ५० बिलियन डॉलर था। लेकिन, आज प्रति वर्ष यन्त्रों और औज़ारों में हम २६ बिलियन डॉलर जोड़ते जाते हैं। इनमें सार्वजनिक उपयोग और व्यवसायिक सुविधाओं पर खर्च होनेवाली रकम भी शामिल है। इस प्रकार, प्रति ३½ वर्ष, हम अपनी उत्पादन और परिवहन सुविधाओं की सामर्थ्य के लिए, उतना ही योग देते जाते हैं, जितनी सन् १९३९ के हमारे सम्पूर्ण विशाल निर्माण-उद्योग की सामर्थ्य थी।

उत्पादन-शक्ति का त्वरित विकास

—एक वरदान

सामने नक्शे में उत्पादन-शक्ति की वक्र रेखा देखने पर, यह विदित हो जाता है कि हमारे प्रतिश्रम-घंटा उत्पादन का सुदृढ़ विकास उर्द्वगामी है। और यह, १३ बिलियन डॉलर का अतिरिक्त उत्पादन उपहार या वरदान के व्या. न. ३

रूप में हमारे लिए प्रस्तुत कर रहा है। इस उपहार की प्राप्ति के लिए हमें विशेष-अतिरिक्त-समय नहीं देना पड़ा है। यही हमारी मुद्रास्फीति-विरोधी-शक्ति है।

अत्यधिक उत्तेजन मिलने पर, उत्पादन-शक्ति का विकास भी संकट से रहित नहीं होता। यदाकदा सेवा और माल की माँग की अपेक्षा, हमारी उत्पादन-शक्ति अधिक तीव्र गति से विकास के लक्षण प्रदर्शित करती है। बेन्जामिन ग्राह्य ने इस अवस्था को “अतिरिक्त उत्पादन-शक्ति” कहा है। और उसका यह भी अभिप्राय है कि यह अमरीकी अर्थ-अवस्था के ढाँचे का एक स्वरूप है, उसका अंग है। यद्यपि उत्पादन-शक्ति लागत, खपत और उपयोग के लिए सदा वर्द्धमान निधियाँ उपलब्ध करती है, तथापि, यदि सुव्यवस्थित नीति-द्वारा इसका नियंत्रण न हुआ तो, इसके द्वारा बेकारी बढ़ जाने की आशंका सदैव बनी रहती है।

यद्यपि मैंने भी उत्पादन-शक्ति के विकास के लिए कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं, तथापि, मैं कैसरलिंग का अनुगमन तो नहीं करूँगा, जो, यह कहते हैं कि हमें उत्पादन-शक्ति विकास ५ प्रतिशत प्रतिवर्ष तक बढ़ाना चाहिए और हम इसे बढ़ा भी सकते हैं। लेकिन, प्रतिवर्ष २.५ या ३ प्रतिशत तक उत्पादन-शक्ति-विकास का क्रम रहने पर भी, भावी उत्पादन की अनन्त वृद्धि होगी। और सन् १९६५ तक माल का उत्पादन ४५ प्रतिशत तक बढ़ जाएगा, किन्तु, जन-संख्या १८ या १९ प्रतिशत ही बढ़ेगी। सन् १९७५ तक माल का उत्पादन लगभग दुगुना हो जाएगा, किन्तु, जनसंख्या एक तिहाई ही बढ़ेगी।

३५ घंटेवाले सप्ताह की ओर

यदि भविष्य में भारी और असह्य बेकारी के दिन न आए तो, खपत अवश्य बढ़नी चाहिए। और लागत पूँजी तो उससे भी अधिक विकसित होनी चाहिए। परन्तु इसके विपरीत, श्रम के साप्ताहिक-घंटे कम होने ही चाहिए।

निम्नलिखित तालिका, संख्या ३, में प्रकाशित आठ पूर्वानुमानों-द्वारा यह स्पष्ट हो जाएगा।

तालिका संख्या ३

कम श्रम और अधिक खपत

औसत साप्ताहिक घण्टे	१९५१	१९५२	१९५३	१९६०	१९६५	१९७०	१९७५
हर्श	—	४०.५	—	३६.०	३७-३६	—	—
कॉम	४०.३	—	—	३६	—	—	—
एन्सली	—	—	४०	—	३६	—	—
वेयरहाज़र	—	४१.७	—	४०	३६.१	३८.१	३७.१
कैसरलिंग	—	—	—	—	—	—	—
मेक्ग्राहिल्	—	—	४१	३८	—	३५	—
पाले रिपोर्ट	—	—	—	—	—	—	३५.४
ड्यूहर्स्ट	—	—	—	३७.५	—	—	—

उपभोक्ता-व्यय (बिलियन डॉलर में)

हर्श	—	—	—	—	—	—	—
कॉम	—	—	—	२६१.१	—	—	—
एन्सली	—	—	२३०.१	—	३५७	—	—
वेयरहाज़र	—	—	—	—	—	—	—
कैसरलिंग	—	—	२२७.७	३३०	—	—	—
मेक्ग्राहिल्	—	—	२३०	२८५	—	४२०	—
पाले रिपोर्ट	—	—	—	—	—	—	—
ड्यूहर्स्ट	—	—	—	३७०.०	—	—	—

हममें से कई यह मानते हैं कि सन् १९७०-१९७५ तक काम के घण्टे कम होने ही चाहिएँ। क्योंकि, उत्पादन-शक्ति के विकास का लाभ-यंत्र और धोज़ारों में लगनेवाली पूँजी को भी मिलना चाहिए। इतना ही नहीं उपभोक्ता को भी, इस लाभ की सुविधा कम कीमत और बढ़िया वस्तु के रूप में मिलनी चाहिए। और श्रमिकों को, अच्छे पारिश्रमिक और काम के कम घंटे के रूप में, अपना हिस्सा मिलना चाहिए। और सन् १९७५ तक, धाज की

अपेक्षा कहीं-बहुसंख्यक श्रमिकों-द्वारा इसका लाभ उठाया जा सकेगा ।

इस समय हमारे देश में ६॥ करोड़ नागरिक श्रमिक हैं । जैसा कि तालिका संख्या ४ में प्रदर्शित है, सन् १९७५ तक हमारे यहाँ ८॥ से ९ करोड़ श्रमिक होंगे ।

तालिका संख्या ४

वर्द्धमान् श्रमशक्ति

नागरिक सेवानियो- जन (दस लाख में)	१९५१	१९५२	१९५३	१९६०	१९६५	१९७०	१९७५
हर्ष	—	—	—	—	—	—	८५.५
कॉम	६२.६	—	—	६६.०	—	—	—
एन्सली	—	—	६२.०	—	७३.०	—	—
वेयरहॉज़र	—	६३.०	—	६६.८	७५.०	८१.४	८८.२
कैसरलिंग	—	—	—	—	—	—	—
मेक्ग्राहिल्	—	—	—	—	—	—	—
पाले रिपोर्ट	—	—	—	—	—	—	७५.५
ड्यूहर्स्ट	—	—	—	६६.०	—	—	—

कुल श्रमशक्ति (दस लाख में)

हर्ष	—	—	—	—	—	—	—
कॉम	६६	—	—	७२.५	—	—	—
वेयरहॉज़र	—	६७.४	—	७२.३	७७.६	८३.६	९०.७
कैसरलिंग	—	—	—	—	—	—	—
मेक्ग्राहिल्	—	—	६५.०	—	—	८२.०	—
पाले रिपोर्ट	—	—	—	—	—	—	८२.०
ड्यूहर्स्ट	—	—	—	७२.५	—	—	—

प्रगति-दरों के अन्तर

यद्यपि ऐसे लक्षण प्रकट हैं कि कुल राष्ट्रीय उत्पादन सन् १९७५ तक दुगुना हो जाएगा, तथापि, इसके ढाँचे में विशेष प्रकार के परिवर्तन होंगे ।

उदाहरण के लिए, उपभोक्ताओं के द्वारा धन-राशि का जो अनुपात टिकाऊ और अस्थायी माल पर व्यय किया जाएगा, अधिकांश में परिवर्तित होगा और विभिन्न उद्योगों के विकास-दरों में, और भी अधिक अन्तर आएगा।

खपत के परिवर्तनशील रख

सन् १९७५ में व्यक्तिगत-खपत के व्यय ४५० बिलियन डॉलर के सन्निकट होना चाहिए, जो सन् १९५३ में २३० बिलियन था। लेकिन भोजन वस्त्र और जूते, जो कि कुल का ५१.४ प्रतिशत हैं। यह आंकड़े ३९% कम हो जाएंगे। खपत के भावी रख पर, सबसे बड़ा प्रभाव, अवकाश-काल का आगामी विकास होगा। साथ ही, सेवा और सामान के लिए प्रत्येक परिवार को आवश्यक जीवन-निर्वाह के लिए, जो वर्द्धमान राशि प्राप्त होगी, उसका भी काफी असर पड़ेगा।

तालिका संख्या ६ परिवर्तनशील उपभोक्ता डॉलर

	१९५३		१९७५		
	डॉलर बिलियन में		डॉलर बिलियन में		
	प्रतिशत		प्रतिशत		
व्यक्तिगत उपभोक्ता-व्यय	२३०.०	१००.०	४५०.०	१००.०	३७.८
वस्त्र और जूते	१९.५	८.४	२७.०	६.०	
भोजन और मादक पदार्थ	७२.०	३१.३	५१.४	१००.०	२२.२
अन्य	२७.०	११.७	४३.०	९.६	२२.२
उपभोक्ता टिकाऊ सामान	२८.०		१२.२	१००.०	
सेवा	८३.०		३६.४	१८०.०	४०.०

बढ़ती हुई जनसंख्या—माँग का महान् कोष

अतीत की अनेक शताब्दियों और सहस्राब्दियों में राष्ट्रों ने युद्ध, अकाल और महामारी के अनेक दुर्दिन देखे हैं, क्योंकि, वे इस सूत्र से अपरिचित थे कि नवजात संतति के लिए भोजन और वस्त्र कहाँ से जुटाया जाए ! परन्तु, इसके विपरीत, हमें इस बात की बहुत बड़ी फ़िक्र है कि अपने गेहूँ, रई और मक्खन की अपार और अतिरिक्त राशि के लिए ग्राहक कहाँ से जुटाएँ ।

अतएव, विगत काल के जीवन-दर्शन को हमने बदल दिया है—उत्पादन की अपार वृद्धि प्रत्येक नवागन्तुक नागरिक का स्वागत करती है । यह परम्परा कम-से-कम दो-एक पीढ़ियों, और कम-से-कम इस देश में, अवश्य रहेगी । यह तथ्य आज के चालीस लाख नए शिशुओं और प्रतिवर्ष जवान होनेवाले पच्चीस लाख नए नवयुवकों पर लागू होता है ।

जैसा कि रेखापत्र संख्या १ पृष्ठ ३५ पर प्रदर्शित है, ये नवागन्तुक हमारे व्यापार की वृद्धि के लिए अतिरिक्त उपभोक्ता और लागत-माँग के रूप में महत्वपूर्ण स्रोत बनेंगे ।

उद्योगों के भिन्न कार्य-कलाप

हमारे सभी उद्योग समानगति से विकसित नहीं होंगे । इस दिशा में कुछ महत्वपूर्ण अन्तर अभी से दृष्टिगोचर होने लगे हैं ।

भोजन और खाद्य—जैसे 'उद्योग पर्याप्त मात्रा में बढ़ेंगे, हमारी अर्थ-अवस्था की प्रसारणा भावी बीस-पच्चीस वर्षों में प्रतिव्यक्ति खाद्य-खपत के विषय में दस-प्रतिशत बढ़ जाएगी । भावी जनसंख्या-वृद्धि के अलावा घर-गृहस्थी में कुल भोजन और खाद्य की खपत सन् १९५३ से '७५ तक ४५ प्रतिशत बढ़ जाएगी ।

चूँकि खाद्य-खपत की अभिवृद्धि प्रत्येक व्यक्ति के भोजन की अन्यान्य सामग्री पर अपना असर डालेगी । जैसे कि प्रतिव्यक्ति अण्डे और फल की खपत १७ प्रतिशत बढ़ जाएगी । मांस और तरकारियों की बिक्री १० प्रतिशत बढ़ेगी और दूध और मक्खन की लगभग ५ प्रतिशत । और यह पूर्ण संभा-

वना है कि विभिन्न अन्न की खपत प्रतिव्यक्ति ५ प्रतिशत से कुछ कम होगी और सूखे मटर और आलू की खपत १४ से १७ प्रतिशत तक होगी ।

तालिका संख्या ७

जनसंख्या और माल की माँग की वृद्धि

जनसंख्या में प्रतिगर्ष २५ लाख की वृद्धि होने के फलस्वरूप, दस वर्ष की अवधि के लिए वर्तमान खपत-दरों के अनुसार, जो माँग बढ़ जाएगी, वह इस प्रकार है:—

३५,००,०००	टेलिविजन रिसीवर
१८०,००,०००	रेडियो सेट
८०,००,०००	मोटर कार
७५,००,०००	मकान
३,००,००,००,०००	डॉलर के वस्त्र-परिधान
१,००,००,००,००,०००	डॉलर के नए कारखाने, यन्त्र, औजार और व्यावसायिक- साधन आदि ।

घी-तेल की खपत में विशेष अन्तर नहीं आएगा । वृद्धि के अमुक भाग अधिक प्रक्रिया और सेवा के अन्तर्गत होनेवाले परिवर्तनों का प्रतिनिधित्व करेंगे—उदाहरण के लिए, जमाए हुए और तैयार-किए-गए खाद्य लीजिए—संभवतया माँग की सबसे कम वृद्धि निर्यात में होगी ।

आगामी बीस वर्षों में देश और विदेश से आनेवाली कृषि-उत्पादन की कुल माँग लगभग ४० प्रतिशत बढ़ेगी । यह ध्यान रहे कि सन् १९५३ के उत्पादन का लगभग ८ प्रतिशत उस वर्ष के मूल्यों और आवश्यकताओं की दृष्टि से अधिक था और उसका अधिकांश 'कमोडिटी-क्रेडिट कॉर्पोरेशन' के भाण्डारों में गया । अतएव शुद्ध आँकड़ों की दृष्टि से कृषि-उत्पादन सन् १९५३ के स्तर से सन् १९७५ तक ३० प्रतिशत बढ़ जाएगा । लक्ष्यों से तो विदित होता है कि निश्चय ही इसे प्राप्त करना कठिन नहीं होगा और हमारी सबसे बड़ी समस्या—अतिरिक्त माल—होगा ।

सन् १९७५ तक कृषि-विषयक शुद्ध एवं कुल आय कम-से-कम ३० प्रतिशत बढ़ जाएगी, इससे कुछ कम भी हो सकती है। इस हेतु से कि शेष जनसंख्या की अपेक्षा, खेत-खलिहान के व्यवस्थापक विकासवान शुद्ध आय में पिछड़ न जाएँ। तब तक खेत-खलिहानों की संख्या में २० प्रतिशत कटौती होगी। किस सीमा तक और कहाँ तक यह लक्ष्य प्राप्त होंगे, यह राजनीति के द्वारा निर्णीत होगा। साथ ही, युद्ध अथवा अन्य आकस्मिक आवश्यकताओं के समय खाद्य की माँग के आधार पर भी इसका निर्णय होगा।

दूसरे उद्योग

जूते और वस्त्र पर भी उपभोक्ताओं का व्यय काफी ज्यादा बढ़ जाएगा। हालाँकि, कुल खर्चों के प्रतिशत की दृष्टि से, उनका महत्व कम हो जाएगा।

दूसरी ओर, वस्त्रोद्योग के कतिपय भाग औसत से बहुत ज्यादा बढ़ेंगे। बनावटी वस्त्र के उत्पादन की दिशा में पर्याप्त प्रगति होगी। वे सन् १९७५ में उपयोग में आनेवाले माल का ४७ प्रतिशत अंश बन जाएँगे। उनकी तुलना में विद्यमान आँकड़ा २३ प्रतिशत है। प्राकृतिक सूत-धागा अपना बाजार खो देगा। सबसे अधिक एवं विस्मयजनक वृद्धि सिन्थेटिक या बनावटी रेशे की होगी। जिसमें रायन आदि सम्मिलित नहीं हैं। यह स्थिति तालिका संख्या ७ से अधिक स्पष्ट हो जाएगी—

तालिका संख्या ७

अमरीकी वस्त्रोत्पादन का प्रतिशत वितरण

प्राकृतिक					सिन्थेटिक		
वर्ष	रुई	ऊन	रेशम	कुल	रायन	अन्य	कुल
१९५२	६६.६	७.४	.१	७४.१	१८.६	४.०	१००
१९६०	६२.०	६.३	.१	६८.४	२०.०	११.६	१००
१९६५	५७.०	६.०	.१	६३.१	२१.८	१५.१	१००
१९७०	५२.०	५.८	.१	५७.९	२२.३	१६.८	१००
१९७५	४७.९	५.६	.१	५३.६	२२.७	२३.७	१००

उपभोक्ता, टिकाऊ माल के उद्योग बहुत प्रगति करेंगे। सन् १९७५ के लिए प्रतिवर्ष एक करोड़ बीस लाख मुसाफिर-गाड़ियों के उत्पादन का अनुमान लगाया गया है। इनके अतिरिक्त बड़ी संख्या में हेलिकोप्टर भी बढ़ेंगे। फर्नीचर की खरीदी दूनी से ज्यादा हो जाएगी। विविध सामान और पदार्थों की खपत आज की अपेक्षा सन् १९७५ में तिगुनी हो जाएगी। घरेलू बिजली के उपयोग में काफी वृद्धि होगी। आमोद-प्रमोद, राग-रंजन और शैक्षणिक क्षेत्रों की दिशा में भी काफी व्यय होगा—जैसे, विदेशाटन, पठन-पाठन, खेल-तमाशे, उच्चशिक्षा और प्रौढ़-शिक्षा।

गृह-आवास की दिशा में भी बहुत प्रगति होगी। एक और आज १९७५ के बीच के परिवारों की संख्या में ४० प्रतिशत वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त अनुमान है कि प्रतिवर्ष कम से कम २० लाख नए मकान बनेंगे। आज निर्माणान्तर्गत मकानों की संख्या १२ से १३ लाख है, लेकिन, १९७० तक २० लाख मकान प्रतिवर्ष बनेंगे। इतना ही नहीं, मकानों की बनावट में भी अन्तर आएगा और ज्यादा अच्छे किस्म के मकान बनेंगे। उप-नगरवासी समाज और समुदाय की बढ़ती हुई संख्या की सेवाथं आज की तुलना में लगभग दुगुने परिणाम में थोक और फुटकर माल की बिक्री होगी।

बड़े और भारी उद्योग भी विकसित होंगे और बढ़ेंगे। विद्यु-उत्पादन शक्ति ३०० प्रतिशत से अधिक बढ़ जाएगी। और यह तो कोई नहीं बता सकता कि विद्युदणु कहाँ तक विकसित हो जाएँगे।

१९७५ तक आवश्यक—अपार-शक्ति की पूर्ति के लिए आज की अपेक्षा दुगुने से अधिक परिमाण में क्रुड् ऑइल, प्राकृतिक गैस और कोयले से उत्पन्न-शक्ति की आवश्यकता पड़ेगी। तथापि, आशा से अधिक तीव्रतर गति से विकसित होनेवाली आणविक शक्ति इस विकास का मार्ग अवरुद्ध कर देगी और सम्भव है कि कई नए क्षितिजों के दिशा-द्वार खोल दे !

अमरीकी अर्थ-व्यवस्था का कोई भी अंग या भाग संकटपूर्ण दशा में नहीं रहेगा, वैसे, अत्यधिक यांत्रिक साधनों से काम लेनेवाले क्षेत्रों में आज की अपेक्षा काफी कम संख्या में लोगों को काम मिलेगा।

देश में सर्वाधिक तीव्र गति से विकसित होनेवाले भाग कौन से होंगे ?

आगामी २०-२५ वर्षों में जिस प्रकार विभिन्न उद्योगों के अपने विकास का गति-दर भिन्न है, उसी प्रकार, देश के भिन्न-भिन्न भाग अपने प्रसारण का विभिन्न दर और स्तर प्रदर्शित करेंगे ।

अमरीका में स्थानीय नागरिकों का तृतीय स्थानान्तरण

आज का अमरीका तृतीय स्थानान्तरण का साक्षी है ।

प्रथम स्थानान्तरण उपनिवेशवासियों का था । ये लोग सरिता और सागरीय तटों के निकट और रेड-इंडियन-राहों के किनारे-किनारे आ बसे थे । जब रेलें बनीं तो लोग दूसरी बार इधर से उधर आए-गए । और तृतीय स्थानान्तरण यानी आज का आवागमन—प्रथम दो स्थानान्तरणों से भिन्न है । नदियों, रेलों अथवा प्रशस्त राजमार्गों से इसका संबंध नहीं है, यद्यपि यह उनका उपयोग करता है । यह तो सूरज और धूप की दिशा में, एक सुखद जन-प्रवाह है—लोग हजारों की संख्या में दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम और पश्चिम की ओर जा रहे हैं ।

यह तो उन वृद्ध लोगों का आवागमन और प्रवास है, जो अधिक दिन जीना चाहते हैं । उनके अतिरिक्त जवानों और प्रौढ़ों का प्रवास भी है जो जो अधिक अच्छे ढंग से रहने के अभिलाषी हैं । यह कृषि का प्रवास है, उस भूमि की ओर जो दूसरे ही प्रकार की है और जो वर्ष में कई फ़सलें प्रदान करती है । यह हल्के और भारी उद्योग और व्यवसाय का स्थानान्तरण है ।

उत्तर की क्रूर बर्फीली हवाओं से परित्राण पाने के लिए ६० वर्ष और उससे अधिक की आयु के वृद्ध, जिन्हें पेन्शनें मिलती हैं, सामाजिक संरक्षण प्राप्त है और जो अधिक स्वतंत्र हैं, वे दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम की अधिक तेज़ और चमकदार; खुशनुमा और मनमोहिनी धूप की ओर नरम और कोमल जलवायु की ओर बढ़े जा रहे हैं ।

आज, यही—अमरीका के अति क्षिप्रतापूर्वक बढ़ने वाले क्षेत्र-प्रदेश है। भविष्य में भी ये इसी प्रकार बढ़ते रहेंगे, क्योंकि सुघर एवं सुसम्भ्य जीवन-यापन के लिए उनके पास पर्याप्त देय और अनुदान है। यह देय न केवल वृद्धों के लिए, वरन् तरुणों और युवकों के लिए भी है।

इन क्षेत्रों के पास ऐसी कई महान् साधन-सुविधाएँ हैं, जो उद्योगों के लिए उपयोगी हैं। यहाँ का जलवायु निरन्तर आर्द्र और सह्य बना रहता है। इससे बन्द मकानों और भारी इमारतों की जरूरत कम हो जाती है। इतना ही नहीं, अमरीका के बड़े बाजारों के निकट ही इनकी अवस्थिति है।

विद्यु-शक्ति और जलदान की असुविधाएँ भी दूर होंगी

ऐसी कौन-सी चीज़ थी, जो अब तक केलिफोर्निया, एरिज़ोना और नेवादा-जैसे क्षेत्रों के पूर्ण विकास के मार्ग में बाधा बन गई थी? दो प्रकार की बाधाएँ इस चीज़ ने पेश कीं—शक्ति, खासकर कोयले से उत्पन्न, और पानी। आणविक शक्ति के विकासोपरान्त इन समस्याओं को सुलझा-लिया जाएगा। ये समस्याएँ सर्वत्र विद्यमान हैं। निकट भविष्य में जब कि अनन्त सागर-जल शुद्ध कर लिया जाएगा, तब समूचा पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम विकास के एक विस्मयकारी युग के दर्शन करेगा। तब वहाँ एक अभिनव और व्यवस्थित अर्थ-साम्राज्य का निर्माण होगा। अविकाश विकासवंत जन-संख्या इन्हीं क्षेत्रों में केन्द्रित होगी और देश के पुरातन भाग, हालाँकि अधिक जन-संख्या न बढ़ा सकेंगे, अपनी वर्तमान संख्या को रक्षित रख सकेंगे।

तीन अंतिम-प्रश्न

क्या इन लक्ष्यक्षेत्रों की प्राप्ति मात्र मुद्रा-स्फीति और विस्फीति की अवस्थाओं में से गुज़रने से उपलब्ध हो जाएगी? और यदि हमारा राष्ट्र उचित-रूपेण, पूर्ण एवं निरन्तर सेवानियोजन संपन्न रह सकेगा, तो क्या इस सुकार्य के फलस्वरूप नए क्षितिजों के द्वार नहीं खुल जाएँगे? यानी, एक ऐसा नव-समाज और उसका श्रम-दल-बल, जो बेकारी के संकट की आशंका

से पीड़ित न होगा, वरन् सुप्रयासों के फलस्वरूप घनीभूत पारिश्रमिक-व्यवस्था और वेतन-व्यवस्था के कारण सुदिन देखेगा और निश्चय ही, यदि अमरीका गरीबी और विपन्नता को विनष्ट करने में सफल होता है, तो ज़रा सोचिए, शेष संसार पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा ?

क्या पूर्ण एवं सन्निकट सेवानियोजन के लिए मुद्रा-स्फीति अनिवार्य है ?

सन् १९३६ के बाद, अमरीकी व्यवसाय का विकास भारी मुद्रास्फीति की एक निश्चित अवधि के हाथ से हाथ मिलाकर चला है ! और १९३६ के पश्चात् हमने अपनी शुद्ध राष्ट्रीय आय दूनी कर ली है और डॉलर को लगभग आधा कर दिया है । तब क्या हमें भावी विकास-बिन्दु की प्राप्ति के निमित्त ऐसी अनेक अवधियों का परिदर्शन करना पड़ेगा और, जैसा कि कुछ अर्थ-शास्त्रियों ने बतलाया है—वर्द्धमान और निरन्तर बनी रहनेवाली नियन्त्रित मुद्रा-स्फीति की अवधियों में से गुजरना पड़ेगा ।

अथवा, दूसरी दिशा में, क्या प्रति-श्रम-घंटा से उत्पन्न वस्तु की तीव्र-प्रगति गति संचालन के इन साधनों के परिणाम-स्वरूप बढ़ जाएगी । एक नया और विरोधी रुख दिखलाएगी ? और इस नए रुख के कारण अधिकाधिक बेकारी सामने आएगी ?

यदि बेन्जामिन ग्राह्म का उदाहरण लें—

“विगत तेरह वर्षों के सेवानियोजन के अद्वितीय अभिलेख ने और विशेषकर सन् १९५४ के भारप्रद प्रभाव के विपरीत, हमारी अर्थ-व्यवस्था ने जो संघर्ष प्रदर्शित किया, उसने अमरीकी व्यवसाय को पुरानी और बेढंगी किस्म की रुकावटों से रहित और निरापद होकर, अभिनव विश्वास-सहित आगे बढ़ाया है ?

“इस आशापूर्ण लेख को दूसरे शब्द और पदावली में प्रस्तुत किया जा सकता है । या तो पूर्ण सेवानियोजन बनाए रखने के लिए व्यापार अपरिमित रूप में प्रसारित होगा, अथवा कोई भी सामयिक सरकार हमें कठिनाई

से उबार लेने के लिए बड़े-से-बड़ा हस्तक्षेप करेगी। इस दृष्टिकोण का तात्पर्य है—सक्रिय व्यापार और लगभग पूर्ण सेवानियोजन की प्रत्याभूति। प्रश्न तो केवल एक ही है कि क्या हमें इन दोनों की उपलब्धि मुद्रा-स्फीति के सहित या उससे रहित अवस्थाओं में होगी ?”

अब इसका सीधा जवाब आठ में से छः पूर्वानुमानों-द्वारा किया गया है ! श्री कैसरलिंग का अभिमत पुनर्कथन-योग्य है। उनका प्रस्ताव है कि सरकार को चाहिए कि सन् १९६० तक उत्पादन-शक्ति का दर ५ या ६ प्रतिशत कर दे। अन्यथा, श्रमिकों के स्थान पर तीव्रतम गति से यंत्रों की यह नियुक्ति बेकारी का कारण बनेगी। अतएव, सरकार का कर्तव्य है कि करों में २० प्रतिशत की कमी कर दे यानी १३ बिलियन डॉलर की कटौती दे। श्री कैसरलिंग का कहना है, ऐसा करने पर जनता की क्रय-शक्ति बढ़ जाएगी और उसके कारण न तो मुद्रा-स्फीति; न न्यूनतम घाटा ही होगा।

तालिका संख्या ८

सरकारी व्यय के आँकड़ों का परि-आयोजन-पत्रक

कुल सरकारी व्यय

बिलियन डॉलर में

	१९५१	१९५२	१९५३	१९६०	१९६५	१९६०	१९७५
हर्श	—	—	—	—	—	—	—
कॉम	—	—	—	६७०.६	—	—	—
एन्सली	—	—	८५.२	—	६७	—	—
वेयरहाऊज़र	—	—	—	—	—	—	—
कैसरलिंग	—	—	८३.५	६०.०	—	—	—
मेक्रग्राहिल्	—	—	—	—	—	—	—
पालेरिपोर्ट	—	—	—	—	—	—	—
ड्यूहर्स्ट	—	—	—	८१.६	—	—	—

एन्सली वाली 'जाइन्ट कमेरी' की ईकनामिक रिपोर्ट इस प्रश्न की दिशा में अधिक सतर्कतापूर्वक बढ़ी है। इस कमेटी के अनुसार यदि देश सन्

१९६५ में, आज के मूल्यों के अनुसार ५३५ बिलियन डॉलर के कुल राष्ट्रीय उत्पादन के बिंदु तक पहुँचना चाहता है, तो तीन पूर्व-प्रतिबंध आवश्यक हैं—(१)—व्ययशील बचत आय की राशि आज की ८ प्रतिशत से घटाकर, ६ प्रतिशत कर देनी चाहिए। इस कटौती के फलस्वरूप ८ बिलियन अतिरिक्त डॉलर माल की अनिवार्य माँग के लिए उपलब्ध हो जाएँगे। (२)—सैनिक व्यय का स्वरूप मात्र संनिर्वाह-स्तर तक ही रहेगा, किंतु नागरिक व्यय, चाहे जैसी सरकार शासन करे, कुल राष्ट्रीय उत्पादन से भी तीव्र गति से बढ़ाने ही पड़ेंगे। (३)—और अंत में, कार्य-सप्ताह की अवधि में कुछ और भी कमी होनी चाहिए। (यदि हम बेकारी नहीं बढ़ाना चाहते हों।)

युद्ध-रहित शांति-काल में देश की किसी भी सरकार को ऐसे साधन तो सहज सुलभ होंगे ही कि वह, १० या अधिक वर्ष की अवधि के लिए, सेवानियोजन का उच्चस्तर प्राप्त कर ले। यदि राष्ट्रपति आइज़नहावर की प्रस्तावित १०१ बिलियन डॉलर वाली मार्ग-निर्माण-योजना कार्यान्वित की जाए, तो सिर्फ उसी से बीस लाख अतिरिक्त व्यक्तियों को काम मिल जाएगा। व्याज के घटे हुए दर निर्माण-कार्य को बहुत बढ़ाएँगे। साथ ही, हमारे प्राकृतिक-साधन-स्रोतों के विकास की अपरिमित संभावनाएँ हैं। और इधर नवम्बर १९५४ के राष्ट्रीय-निर्वाचन ने मान्यरूप में सिद्ध कर दिया है कि यदि देश में साधारण से अधिक बेकारी रही, तो आसनस्थ कोई भी दल चुनाव नहीं जीत सकता। यानी निर्वाचन-दिवस के आस-पास साधारण से अधिक सेवानियोजनहीनता न होनी चाहिए, हाँ, उन लोगों की बात अलग है, जिन्हें किसी काम में नहीं लगाया जा सकता, या जो बेकार रहकर ही स्वस्थ रह सकते हैं। अब तक तो इस संकट से निष्कासन का सरलतम उपाय घाटेवाली व्यय-क्रिया रही है।

क्या बेकारी के संकट से रहित किसी नव-समाज की रचना होगी ?

पूर्ण सेवानियोजन की प्राप्ति के लिए यह अनिवार्य नहीं होना चाहिए कि दूसरी बार मुद्रास्फीति का उपयोग हो। बचत करनेवाली जनता को

धोखा देकर, अधिक सेवानियोजन की व्यवस्था करने की क्रिया प्रतिवर्ष ओम्ल होती जाएगी, एक ऐसा विकास अवतीर्ण हो रहा है, जो एक दशक की अवधि में रुपए के अवमूल्यन-द्वारा किसी व्यक्ति को संकटग्रस्त न होने देगा ।

जनता का ऐसा अंग जो पूंजी या रुपए की दृढ़ता में पूर्णरूपेण रचि रखता है, बड़ी तेजी से बढ़ रहा है । ज्यों-ज्यों हम बूढ़े होते जाते हैं, त्यों-त्यों हम, ६५ या कम वर्ष की आयु में 'पेन्शन' लेनेवाले प्राणी बन जाते हैं और एक दिन हमारा देश बूढ़े पेन्शनयापुताओं का देश बन जाता है । राष्ट्र का, दृढ़तापूर्वक बढ़ता हुआ एक अंग अपनी आय के सुनिश्चित अंश-आधार के रूप में सामाजिक संरक्षण, जीवन-बीमा और अन्य प्रकारेण पेन्शन आदि प्राप्त करेगा । सन् १९३० में ६५ वर्ष और उससे ऊपर की आयु के समूह की सदस्य संख्या ६७ लाख थी । सन् १९६५ में इसकी संख्या एक करोड़ सत्तर लाख या पौने दो करोड़ हो जाएगी और सन् १९७५ में ढाई करोड़ तक पहुँच जाएगी ।

लेकिन संरक्षण और सुदृढ़ता के प्रति, व्यक्ति की दिलचस्पी, ६० या ६५ की आयु से पूर्व ही, बढ़ने लगती है । लगभग १० वर्ष की अवधि में इस देश में १८ से २० प्रतिशत लोग ६० वर्ष से ऊपर की आयु रेखा छू लेंगे और तत्परतापूर्वक वे यह चाहेंगे कि उनकी भावी सुरक्षा रुपए-पैसे के रूप में बराबर बनी रहे, अर्थात् एक निश्चित रकम उनको मिलती रहे और उनकी संचित बचत का मूल्य-दर भी न घटे ।

और उनके निर्वाचन-मत, जिनकी संख्या २५% होगी, अपनी बचत पर निर्भर रहनेवाले लोगों की संरक्षा के विरुद्ध जानेवाले प्रत्येक प्रवाह पर अंकुश रखेगी । इस दिशा में वे पूर्णतया सशक्त होंगे । इसका यह अर्थ हुआ कि बनावटी मुद्रास्फीति का सरल उपाय-खोजनेवालों की कारंवाइयों का अंत । दूसरी ओर, दृढ़तापूर्वक विकसित होनेवाली समृद्धि के लिए द्रव्य-बचत की दृढ़ता पर आधारित यह अवस्था, एक स्पष्ट प्रत्याभूति होगी ।

बाह्य संसार पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा ?

एक अंतिम प्रत्यप्रभाव सम्भवतया एक राजनैतिक नव क्षितिज की रचना करेगा। यदि आठों स्वतंत्र पूर्वानुमानकारों द्वारा परियोजित विकास-लक्ष्य प्राप्त हो सके और उनके साथ पूर्ण सेवानियोजन में भी सफलता मिली, तो यह अवस्था हमारे समाज के कतिपय आकार-प्रकारों को, स्वरूपों को मूलतः बदल देगी। आरम्भ में कुछ अनिवार बाधाएँ और कठिनाइयाँ उपस्थित होंगी, परन्तु उनके बाद, ऐसी दशा आ जाएगी कि अमरीका से गरीबी सदा के लिए बिदा हो जाएगी। हाँ, यह दूसरी समस्या है कि गरीबी की यह अवस्था हमारे देश से बिदा होकर, किसी दूसरे देश पर मँडराएगी, छा जाएगी।

निश्चय ही, अपने देश की जनता की सम्पदा और समृद्धि की व्यवस्थित एवं क्षिप्र अभिवृद्धि—द्वारा हम अपनी विकासवान् अर्थ-व्यवस्था की अच्छाई प्रमाणित कर देंगे। आज हम उत्तरोत्तर उत्तम जीवनस्तर की प्रत्याभूति देते हैं, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक व्यक्ति के लिए अधिक आय और कार्य-कलाप-अवसर प्रस्तुत रहता है।

साथ ही हमें स्वार्थसिद्धि के आत्म-परितोषक संकट की चेतावनी देनी चाहिए, क्योंकि, अभाव और दारिद्र्य से उत्पीड़ित जनता के बीच एकान्त रूप से सम्पन्न और श्रीमंत बनकर हम सर्वथा निरापद नहीं हैं। और यह श्रुति पूर्ण अर्थ-नीति समझी जाएगी कि इस दिशा में दूसरा भी कोई देश वह कार्य कर सकता है, जो हमने किया है। हमें कदापि यह विस्मरण न करना चाहिए कि हमारा देश सम्पन्नता का आगार है। हमारे पास अपार जमीन, खनिज पदार्थ, कच्चा माल, आर्थिक शक्ति है, जब कि दूसरे कई देशों को आर्थिक अभावों से जूझना पड़ रहा है, उनके पास कम जमीन, कच्चे मालों की कमी और अन्य सुविधाओं का अभाव है, इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक ज्ञानाभाव अथवा राजनैतिक विपदा के कारण उनकी प्रगति का पथ रुका हुआ है। ऐसे देशों को महत्तर उत्पादन-शक्ति के विषय में उपदेश देना ही पर्याप्त नहीं है और यह भी पर्याप्त नहीं है कि हम उन्हें अमरीकी उत्पादन-प्रणालियाँ

सिखलाएं क्योंकि अभी वे इतने परिपक्व नहीं हुए हैं कि यह सब सीख-समझ लें ।

विश्व-प्रगति की सुदृढ़ता

यदि हम अपने स्वदेश की महान् ही नहीं बरन् विस्मयकारिणी भावी-सिद्धियों का शान्तिपूर्वक सुखोपभोग करना चाहते हैं और चाहते हैं कि आगामी २०-२५ वर्षों की हमारी पीढ़ियाँ सुख-चैन से रहे तो निश्चय ही हमें सक्रिय कार्यों के द्वारा विश्व-प्रगति के एक सुनिश्चित आधार की रचना करनी होगी ।

इस कार्य को, हम दुनिया के बाजारों की अनिश्चित अवस्थाओं को दूर कर, सम्पन्न कर सकते हैं । साथ ही हमें विश्व-पूँजी के आधार को दृढ़ता देनी होगी—उपहार के रूप में नहीं, बरन् ऐसी अवस्थाओं की रचना के द्वारा कि जिनके कारण हमारे अति योग्य व्यापारी-नेता, पिछड़े देशों से सर्वथा सक्रिय सहयोग सत्वर कर सकें ।

यदि हमारा भविष्य विकासवंत वैभव और महान् आर्थिक अभ्युदय की मंजिल तक पहुँच जाता है, और जैसा कि हमारा विश्वास है, अवश्य पहुँच जाएगा, तो, हमें चाहिए कि इसकी प्राप्ति के समय, हम यह भी प्रयत्न करें कि हमारे साथ-साथ चारों ओर के लोग—शेष संसार भी दारिद्र्य पर विजय और प्रगति प्राप्त करे ।

शिल्प, विज्ञान और स्वचालन के नव क्षितिज : ४

[कथबर्ट सी० हर्ड, डाइरेक्टर इलेक्ट्रॉनिक डेटा प्रोसेसिंग, इंटरनेशनल बिजनेस मैनेज्मन्स कॉरपोरेशन]

स्वचालन के विषय में आज सब से बड़ी समस्याओं में से एक समस्या है कि किस प्रकार उसका वर्णन किया जाए या विवरण दिया जाए। क्योंकि संभावना है कि इसके सम्बन्ध में जिस-किसी का, जो जी चाहे, कह सकता है। मूलभूत आवश्यकता तो यह है कि कुछ बड़ी और श्रद्धा मशीनों, बड़े-बड़े यंत्रों और स्वचालन के बीच का अन्तर जान लेना—यह वह कार्य है, जिसका हमें काफी दिनों का अनुभव है और जो कि हमारे लिए नव क्षितिज नहीं कहा जा सकता। और जब हम यह जान लेंगे कि सचमुच स्वचालन क्या चीज है, तब अवश्य हम उसकी संभावनाओं, प्रक्रियाओं और प्रभावों का सही मूल्यांकन कर सकेंगे और उस रहस्य पर अपना स्वामित्व स्थापित कर सकेंगे।

वास्तविक स्वचालन बहुत अद्भुत और आकर्षक वस्तु या कार्य है। शायद, मेरे खयाल से, इसका एक कारण यह भी है कि आदमी अपने शरीर और मस्तिष्क में स्वचालन का अपरिमित स्वरूप और आधार पाता है। अतएव, वह इस संभावना से विस्मयाभिभूत होता है कि संभवतया वह एक ऐसा पदार्थ या यंत्र बना सके, जिसमें उसीके समान स्वचालन के अनेक गुण और वैशिष्ट्य हों। केवल इसी कारण मनुष्य उसके प्रति इस सीमा तक आकर्षित है।

इन सबके अतिरिक्त, एक दूसरा, मूलभूत सैद्धांतिक सवाल है कि क्या हम अब भी स्वाचालन को, मात्र औद्योगिक क्रान्ति को सतत अवस्थिति मानते हैं, अथवा यह किसी प्रकार की कोई नई क्रान्ति लाएगा? यह सवाल सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

अन्त में हममें से अनेक ऐसे व्यक्ति हैं, जो उन विचारों के प्रति अभिचिन्तित हैं, जिन्हें वे भली भाँति नहीं जानते, क्योंकि उन विचारों के लिए

प्रयुक्त शब्द और पदावली पूर्णरूपेण विजातीय एवं विदेशीय है, और क्योंकि वह सूचना-सिद्धांत के द्वारा, गणितशास्त्र के द्वारा और विद्युदगु यंत्रशास्त्र के द्वारा प्राप्त होती है।

स्वचालन का सही अर्थ क्या है, यह जानने के लिए, प्रथमतया यह जान लेना आवश्यक है कि स्वाचालन क्या नहीं है। इसमें कई प्रकार के स्वचालित यंत्रसाधन सम्मिलित हैं, और इनमें से कई, आज कारखानों में, कई कामों के लिए प्रयुक्त होते हैं। और अब तो ऐसे भी साधनयंत्र सुलभ हैं, जो लेखन, साधारण गणित और सूचना-व्यवहार के कतिपय कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न करते हैं। जब अमपूर्ण धारणाओं का निवारण हो जाएगा तो हमारे लिए स्वचालन का विवरणात्मक वर्णन देना सहज सरल हो जाएगा और यह भी कठिन न रहेगा कि वास्तविक स्वचालन की उपलब्धि के लिए क्या-क्या करना चाहिए, जो हमें करना ही है। हम तो पूर्णरूपेण स्वचालित व्यापार और पूर्णरूपेण स्वचालित निर्माणशाला चाहते हैं। इससे सम्बन्धित विशुद्ध आर्थिक पक्षों पर पाँचवें परिच्छेद में विचार-विनिमय किया गया है।

स्वचालित यंत्र-साधनों का वर्तमान क्षेत्र-विस्तार

निर्माणशालाओं में वर्तमान समय में जो-जो यन्त्र-साधन स्वचालित कृत्यों के सम्पादनार्थ हमें सुलभ हैं, उन्हें हम स्वचालन की श्रेणी में नहीं ले सकते। स्वचालित कृत्य का अर्थ है, मानवीय हस्तक्षेप के बिना एक ही बार में दो कार्यों का सम्पादन। अब, निरंतर हमारा प्रयत्न यह रहा है कि ऐसे स्वचालित कृत्यों का इसलिए विकास और अभिवर्द्धन करें कि प्रत्येक निर्माण-शाला-श्रमिक के हाथ में अधिकाधिक अक्षयशक्ति आ जाए। और परिणाम में अधिकाधिक वस्तु-पदार्थ बनें और समय और श्रम की बचत हो। यह तो प्रत्येक व्यक्ति चाहेगा कि अरुचिकर कार्य को दास-वृत्ति-सहित-करनेवाली भावना को नष्ट करें। और श्रमिक भी अवश्य चाहेंगे कि उन्हें उच्चतर प्रकार का कार्य मिले और व्यवस्थापक भी चाहता है कि वह निर्माणशाला में अवस्थित कार्यों के श्रमिकों को अधिकाधिक सन्तोष प्रदान करे। इस विषय में समस्त संसार के उद्योग ने महान् सफलता पाई है और यह सफलता

औद्योगिक क्रांति की उपलब्धि है। इस क्रांति का अभिचित्रण अधिकाधिक दुरूह यन्त्रों द्वारा अभिव्यक्त हुआ है।

सबसे अधिक दुरूह—स्वचालित साधन-यंत्र आज ऑटोमोबाइल उत्पादन-क्षेत्र में उपयोग में आता है। इससे कई समस्याएँ और समाधान प्रस्तुत होते हैं। हम सब उस महान् उत्पादन-संगर के विषय में जानते हैं, जो डेट्राइट आदि स्थानों की निर्माणशालाओं में चल रहा है, क्योंकि ये निर्माणशालाएँ उसी लागत में अधिक अच्छी मोटरकारें देना चाहती हैं अथवा उसी गुण और विशेषता से समन्वित मोटरकार कम लागत में देना चाहती हैं। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, सभी बड़ी ऑटोमोबाइल कंपनियों और विविध पुर्जों और हिस्सों के निर्माणकर्ताओं ने प्रत्येक सम्भव सीमा तक स्वचालित यन्त्रों की स्थापना की है। डेट्राइट का ऑटोमोबाइल उद्योग इस विषय में लाभ-सम्पन्न है, क्योंकि साधारणतया ऑटोमोबाइल के निर्माणकर्ता अपने प्रतिमानों में महत्तर परिवर्तन करते हैं, जिसका अर्थ यह हुआ कि किसी मोटरकार के रूपाकार में प्रत्येक दो या तीन वर्ष की अवधि में पर्याप्त परिवर्तन प्रस्तुत होते हैं। इस प्रकार ऑटोमोबाइल-उद्योग की स्वचालित यन्त्रावली में प्रयुक्त विशाल लागत उचित है।

डेट्राइट में प्रयुक्त सर्वाधिक शक्तिमान यन्त्र वे हैं, जिन्हें हस्तान्तरण-यन्त्र कहते हैं। ये यन्त्र आपकी इच्छानुसार योजनानुसार किसी भी प्रकार का कोई भी औद्योगिक कार्य सम्पादित करते हैं। इतना ही नहीं हस्तान्तरण-यन्त्र किसी पुर्जे या हिस्से को एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान तक ले जाता है और मानवीय हस्तक्षेपरहित प्रणाली-द्वारा ऐसे ही विविध कृत्य पूरे करता है।

उदाहरण के लिए क्रॉस टूल कम्पनी द्वारा निर्मित हस्तान्तरण-यन्त्र (ट्रान्सफर मशीन) अपनी शक्ति की दृष्टि से सर्वथा उल्लेखनीय है। इस यन्त्र के अधीन १०४ विभिन्न स्टेशन हैं। जिनमें विभिन्न प्रकार के स्टेशन हैं और प्रत्येक का अपना काम और तरीका है। यद्यपि यह सब प्रभावपूर्ण प्रतीत होता है, यही स्वचालन नहीं है।

यही स्वचालन नहीं है, क्योंकि हस्तान्तरण-यन्त्र की एक विशिष्टता यह

है कि उसके लिए कार्यक्रम की आवश्यकता पड़ती है, अर्थात् उसे स्थिति और सूचना विस्तारसहित मिलने चाहिए। एक प्रकार से यदि कोई व्यक्ति ऐसे यन्त्र मँगवाता है, तो अपने आदेशक्रम के साथ ही कार्यक्रम भी सूचित करता है और निर्माणशाला के व्यवस्थापक की वे सब स्थितियाँ और आवश्यकताएँ बतला देता है जिनमें इस यन्त्र को काम करना है। यंत्र की विशिष्ट स्थिति बदली नहीं जा सकती, क्योंकि उसके निर्माण के साथ ही स्थिति की भी रचना होती है। कार्यस्थिति और कार्यक्रम को किसी विशेष बिन्दु तक बदलने के लिए खरीदार को नए यन्त्र खरीदने पड़ेंगे। इस दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है कि साधारणतया डेट्राइट अपने माल के प्रतिमान, प्रति दो-तीन वर्ष में बदलता रहता है। अग्रिम कार्यक्रम-रचना और स्थिति निर्धारण के तथ्य हस्तान्तरण-यन्त्रों की उपयोगिता को सीमित कर देते हैं, विशेषकर उन उद्योगों के लिए, जो अपने प्रतिमान यदाकदा बदलते रहते हैं।

अतएव, प्रत्येक हस्तान्तरण का एक निश्चित कार्यक्रम होता है। उस कार्यक्रम के अन्तर्गत यह यन्त्र स्वनिर्णयित कृत्यों को नियमिततापूर्वक करता रहता है।

लीजिए, यह है हमारे डेट्राइट का 'स्वचालन'। इसी को वे उत्पादन का स्वचालित-यंत्र कहते हैं। इस प्रकार के यंत्र अनेक संभावनाएँ रखते हैं। इनके कई उपयोग और लाभ भी हैं। इनके अपने निश्चित कार्यक्रम हैं। ये कार्यक्रम अनिवार्यरूपेण प्रति नियत अवधि में परिवर्तित होते रहते हैं। लेकिन, यही, सही स्वचालन नहीं है। यह तो औद्योगिक क्रांति से आज तक जो दर्शनीय परिवर्तन-कार्य सम्पादित होता रहा है, उसका सहज स्वाभाविक प्रसारण है। अर्थात्, बड़े से बड़े और उलझन भरे यन्त्रों की दिशा में प्रगति !

आज तक स्वचालित उत्पादन की दिशा में जो प्रगति हुई है, उसका दूसरा उदाहरण विद्युदणु-अंक-प्रक्रिया-यंत्र का निर्माण है। जैसे 'यूनिवाक'।

एक विशाल विद्युदणु-यंत्र का निर्माण, संभवतः, १००० मल्टीप्लेबल यूनिट्स से होता है। और इन्हीं यूनिट्स का अपना विशिष्ट रूप और आकार-प्रकार है।

हाँ, विद्युदगु-अंक-प्रक्रिया-यंत्र की दूसरी पीढ़ी में हम इस भाँति के मल्टीप्लेबल यूनिट्स नहीं करेंगे। इनके स्थान में हम मुद्रित सरकिट का उपयोग करेंगे। इस सरकिट का भी अपना स्वरूप और तरीका है। मुद्रित सरकिट एक कार्ड पर बनता है।

इस कार्ड के रचयिता तत्व स्वचालन-प्रक्रिया-द्वारा एकत्रित होंगे। और इन कार्डों को एकत्र करनेवाला यंत्र 'ऑटोफ़ेब' कहलाता है, इस प्रकार का सर्व प्रथम यंत्र आई. बी. एम. को बेचा गया। इस यंत्र का निर्माण जनरल-मिल्स ने किया था। यह यंत्र हमारे स्वचालित यंत्र-संसार की शोभा को बहुत बढ़ा देगा।

स्वचालित सूचना-सम्पादन

अब तक हम स्वचालित यंत्रों के दो उदाहरणों पर विचार कर चुके हैं। ये यंत्र अपेक्षाकृत रूप में उत्पादन-क्रियाओं को अधिक तीव्रतर, सस्ते अथवा कम परिश्रम पर पूरा करने के लिए काम में लाये जाते हैं।

एक और नए और भिन्न प्रकार का यंत्र वह है, जो स्वचालित रूप में 'सूचना-सम्पादन-कार्य' करता है। यह अभिप्रेय है कि दो सुविशाल क्षेत्रों में सूचना-कार्य स्वचालित प्रणाली से हो। यद्यपि ये क्षेत्र एक केन्द्र-बिन्दु में विलय होते हैं, एक लक्ष्य स्थान पर मिलते हैं। इनमें से प्रथम—वैज्ञानिक और यंत्रविद्या-क्षेत्र है, और दूसरा—व्यापार व्यवस्थापन-क्षेत्र है।

प्रथम क्षेत्र में कोई व्यक्ति जो भी कार्य करता है, उसे परिमाणसूचक पदावली-द्वारा वर्णन कर सकते हैं—सांख्यिक प्रणाली के द्वारा किसी भी यंत्र अथवा यंत्रालय का विवरण पूर्णरूपेण दिया जा सकता है।

वैज्ञानिक और यंत्रविद्या-क्षेत्र में स्वचालित सूचना-सम्पादन-कार्य के एक उदाहरण के रूप में हम केटालिटिक क्रैकिंग प्लांट के निर्माण की समस्या पर विचार करें, ताकि हम कार्यों को अभिच्छीत उत्तमोत्तम अनुकृति और विस्तार दे सकें। ऐसे साकार और प्रत्यक्ष यंत्र-साधन की उत्तम आकृति अथवा रूपरेखा-प्राप्ति का सीधा उपाय आज तक नहीं पाया जा सका है। और शायद कभी न पाया जा सकेगा। अतएव यह आवश्यक हो जाता है

कि अनेकानेक विभिन्न एवं संभावित अनुकृतियों के चुनाव के निमित्त कई परीक्षण और प्रयोग किए जाएँ। लेकिन, यह स्मरण रहे कि ऐसे प्रयोग-परीक्षण अत्यन्त व्ययशील हैं। केवल एक केटालिटिक क्रैकिंग प्रोसेस के प्रयोग-परीक्षण के लिए बननेवाले यंत्रालय का खर्च तीन करोड़ डॉलर है। आप ऐसा यंत्रालय बनाकर चला सकते हैं और यह देख सकते हैं कि आया यह इच्छित-उत्पादन या कार्य करता है या नहीं। परन्तु यह सोदा बहुत महंगा पड़ेगा, क्योंकि तीन करोड़ डॉलर का अर्थ हुआ एक बड़ी तेल कम्पनी का विनाश !

अतएव, सीधा और अच्छा उपाय—ऐसा उपाय जिसे सभी अधिकतर काम में लाते हैं—यह है कि हम उन यंत्रविदों को खोज लें जो रसायन, शोधन और पेट्रोलियम आदि के निष्णात हैं। ये यंत्रविद क्रैकिंग प्रोसेस के तौर-तरीके को भली-भाँति जानते हैं, उनके सांख्यिक अथवा परिमाणात्मक वर्णन-विवरणों से भी परिचित रहते हैं—हम उनसे पूछें कि भाई, जरा काराज और पेन्सिल लो और हमें बतलाओ कि अमुक अवस्थाओं में प्रस्तावित पेट्रोलियम-यंत्रालय का क्या रूप, स्वरूप और रख रहेगा।

और अन्ततया, इस कार्य को करने का सबसे उत्तम उपाय तो यह है कि बड़े पैमाने की स्वचालित काम्यूटिंग मशीन प्राप्त करें। काम्यूटिंग मशीन इस भाँति पूर्णरूपेण काम कर सकती है, मानो यह स्वयं ही केटालिटिक क्रैकिंग प्रोसेस-मशीन है। ऐसे यंत्र की सहायता से आप सैकड़ों ही नहीं, हजारों नियंत्रण-प्रणालियों, उत्पादन आदि का परीक्षण कर सकते हैं, और अन्त में आपको अपने इच्छित यंत्रालय का विवरण और वर्णन प्राप्त हो जाता है। ऐसा यंत्रालय, जिसका आप निर्माण करना चाहते हैं।

ऊपर कथित द्वितीय क्षेत्र—व्यापार व्यवस्थापन-क्षेत्र—संसार के किसी भी व्यापार के लिए आपको विक्रय-शक्ति के रूप में सूचना प्राप्त होती है। जब 'होम ऑफिस' के विक्रय-विभाग के द्वारा माल के लिए एक आदेश जाता है तो, तुरन्त यह निर्णय करना पड़ता है कि क्या हमारे भाण्डार के माल से इस आदेश का स्वरित पूर्ति की जा सकती है। यदि की जा सकती है, तो ग्राहक तक माल किस प्रकार पहुँचाया जाए। यदि भाण्डार से पूर्ति नहीं हो

सकती तो, वह कौन-सा स्थान है जहाँ माल बन सकता है, कहाँ से कच्चा माल मिल सकता है, यंत्रों को किस भाँति व्यवस्थित किया जाए, ताकि वे माल बना सकें और सर्वान्त में माल या उत्पादन को किस प्रकार जहाज़ पर चढ़ाया जाए। देखिए, ये तो हज़ारों में से सिर्फ़ चन्द निर्णय हैं, जो हमें करने ही पड़ते हैं। और इनमें से प्रत्येक—पर्याप्त सूचना की, उपस्थिति में आरंभिक मात्र है। प्रत्येक निर्णय को स्पष्ट किया जा सकता है, और जहाँ तक केटालिटिक प्रोसेस का सवाल है, उसे संख्याओं और वर्णमाला के प्रतीकों में वर्णित किया जा सकता है।

एक बार जब मूल एवं साधारण नीति की स्थापना हो जाती है, तो कोई व्यापारी ऐसे आरंभिक निर्णय करना पसंद नहीं करता। इसके अतिरिक्त निष्णात व्यक्ति अनुकूल अवस्थाओं में ऐसे कृत्य एक घण्टे में कई सौ की गति से सम्पादित करता है। दूसरी ओर, एक विद्युदणु-अंक-प्रक्रिया-यंत्र ऐसे कृत्य प्रति घंटा दस हज़ार की गति से हल करता है। उपरोक्त विवरण पढ़ने से, उस पर विचार करने से हमें यह विदित होता है कि एक बार नीति-निर्धारण होने पर, ये सब कृत्य पूर्णरूपेण सहज हैं।

विद्युदणु-अंक-प्रक्रिया-यंत्र आई. बी. एम. ७०५ के प्रमुख विभाग में अध्ययन और लेखन और सुविधाएँ हैं। स्मृति और प्रक्रियाओं का काम भी लिया जाता है। पठन और लेखन का काम, मुख्यतया, चुम्बकीय पट्टी से लिया जाता है, जो प्रति सेकण्ड १५००० वर्ण प्रेषित करती है। इसी प्रकार, स्मृति-विभाग की भी व्यवस्था है।

अब हम यहाँ एक दिलचस्प तुलना करेंगे। लोग, वैसे, तुलनाएँ किया करते हैं। इस यन्त्र में १४०००० स्मृतिस्थल हैं। अर्थात् १४०००० स्थल ऐसे हैं जहाँ आप तनिक-सी सूचना रखते हैं अथवा नहीं रखते हैं। आप को यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस तन्त्र के समान मनुष्य के मस्तिष्क में भी १००००० स्मृतिस्थल हैं।

इस यंत्र का कार्य-कलाप प्रति सेकण्ड १०००० कृत्य की गति से चलता है। यह सब कार्य और गतियाँ अवश्य इस कारण संभव है कि प्रत्येक विभाग

की गति और विद्युदणु मिश्रण इस प्रकार निर्वाचित हुए हैं कि आई. बी. एम. टाइप ७०५ यन्त्र पूर्णरूपेण सन्तुलित और सुव्यवस्थित हैं।

कार्यकर्ता द्वारा लिखित आदेशमालाओं के आधार पर यन्त्र का नियंत्रण संचालित होता है। साधारणतया एक आदेश किसी संख्या की स्मृति में स्थल का स्पष्टीकरण करता है। और यह भी बतलाता है कि संख्या का क्या किया जाए। उदाहरण के लिए—“स्मृति स्थल के ११०२ की संख्या का योग कीजिए।” अब यदि यन्त्र में व्यवस्था यह है कि ‘जोड़ करने’ के आदेश प्रति वेला ‘२’ की संख्या लिखकर दिया जाता है, तो उपरोक्त आदेश देते समय आपको लिखना चाहिए—“‘२’ ११०२”। इसी प्रकार अन्य कई प्रकार के कृत्य, जैसे कि शेष-बाकी, गुणा, भाग आदि किए जा सकते हैं और इनमें से प्रत्येक को एक छद्म संख्या देकर यन्त्र की माँग की पूर्ति की जा सकती है। इसके फलस्वरूप, यन्त्र की विविध सूचनाएँ परस्पर उलझ कर गड़बड़ी पैदा न होने देंगी।

यन्त्र को सूचनाएँ देने के लिए एक संचालक रहता है। इस प्रकार के एकत्रीकरण से सम्पन्न प्रत्येक यन्त्र संचालक-द्वारा संचालित हो सकता है। प्रायः यन्त्रों में मानवीय हस्तक्षेप नहीं होता, क्योंकि ये यंत्र मानवीय हस्तक्षेप से रहित घंटों तक, प्रति सेकंड १०००० कृत्य की गति से निरन्तर चलते रहते हैं। यदि कभी, कहीं कोई त्रुटि हो जाती है या ऐसी त्रुटि का उत्तर-दायित्व यन्त्र पर होता है, क्योंकि यन्त्र से भी प्रति १००,०००००० कृत्य पर एक त्रुटि होती है। अथवा जिस समस्या के हल की माँग की जाती है, उसका कार्यक्रम रखने में यदि कोई त्रुटि रह जाती है, तब भी यंत्र गलती करता है। अथवा अंट-संट सूचना या सम्पादन-रहित सूचना मशीन में रख दी जाती है, तब भी गलतियाँ होती हैं, लेकिन ये गलतियाँ दूर की जा सकती हैं और मशीन को बीच में रोका भी जा सकता है। यंत्र में व्यवस्था है कि त्रुटिस्थल संचालक के सामने आ जाता है, ऐसे समय, यह संचालक पर निर्भर है कि आगे क्या करना है और आवश्यक है कि वह अपना निर्णय तुरन्त करे।

यह ठीक है कि उसके निर्णय के लिए चिन्तन, मनन और सोच-विचार

की आवश्यकता होती है, परन्तु किसी यंत्र में यह सब तो नहीं रखा जा सकता। यंत्र, आखिर यंत्र है।

ऊपर लिखित सूचनाओं द्वारा हमें ज्ञात होता है कि सूचनाओं का वर्णन संख्याओं से हो सकता है और चूंकि कोष-विशेष में संख्याएँ संग्रहीत होती हैं, तो स्पष्ट है कि वहाँ सूचनाएँ भी एकत्र हो सकती हैं। और चूंकि विशेष कोष उन संख्याओं का कार्य-विशेष सम्पादन करता है, जो कि उसकी स्मृति में संग्रहीत रहती हैं, तो स्पष्ट है कि वह सूचनाओं का प्रतिनिधित्व करनेवाली संख्याओं का संचालन भी कर सकता है, अथवा तथ्य-संगत तुलनाएँ अथवा जोड़-बाकी निकाल सकता है और चूंकि उसकी स्मृति में संख्याओं के समान ही सूचनाएँ भी संग्रहीत रहती हैं, यन्त्र-सूचनाओं के आधार पर गणित के अनुसार शेष या बाकी निकाल सकता है। अथवा कई अनुगामी-सूचना-समूहों में से एक समूह का चयन कर सकता है।

सही स्वचालन—फ्रीडबैंक

इसका यह अर्थ हुआ कि किसी प्रक्रिया की उस अवस्था पर निर्भर रहता, जिसमें कांप्यूटर अमुक समय में समस्या में स्मृति की दशा रखता है—जिसे स्वचालित फ्रीडबैंक कहते हैं ! और इतना ही नहीं, उसी समय, स्वयं ही अभिनव सूचनाओं का निर्माण कर सकता है। इस प्रकार, यंत्र की अवस्था का माप उसी यंत्र के भावी या दूसरे कृत्य का निर्णय करता है। इस प्रकार, यंत्र की अवस्था का नाप उसी यंत्र के भावी या दूसरे कृत्य का निर्णय करता है। यह फ्रीडबैंक है। यही स्वचालन है। यही साइबरनेटिक्स है। यही स्वचालित नियन्त्रण है। कृपया, उस अन्तर पर ध्यान दीजिए, जो हमारे-द्वारा प्रथमतः वर्णित डेट्राइट स्वचालन और इस स्थल पर वर्णित 'फ्रीडबैंक स्वचालन'-द्वारा उपस्थित होता है। प्रथमावस्था में यानी डेट्राइट स्वचालन में उत्पादन के यंत्र अथवा माल का सम्पादन करनेवाले स्वचालित यंत्र, निश्चित कार्यक्रम के नियन्त्रण में अमुक संख्या तक कृत्यों का सम्पादन करते हैं, और स्वयं स्वचालित रूप से, मानवीय हस्तक्षेप के बिना ही कर लेते हैं। लेकिन द्वितीय प्रकार का यह यंत्र जिसे हम 'स्टोर्ड प्रोग्राम-ऑटोमैटिक'

काम्प्यूटर' यंत्र कहेंगे, मानवीय हस्तक्षेपरहित-प्रणाली के द्वारा न केवल कई कृत्यों की स्थिति का ही सम्पादन करता है, किन्तु स्मृति की किसी दशा को देखकर, सूचना देने में भी समर्थ है, ताकि अभिनव नियंत्रण का प्रयोग हो सके। अतएव, स्वचालन में सर्वथानिवार्य वस्तु है—स्वचालन।

स्वचालन की रचना करनेवाले अंगों और मिश्रणों के परिभाषिक यांत्रिक नाम हैं। प्रथम—प्रोग्राम कंट्रोल। द्वितीय—कम्प्युनिकेशन्स सिस्टम। तृतीय—फिजिकल कॉन्फिगरेशन। और अन्त में वह कम्प्युनिकेशन सिस्टम, जो फिजिकल कॉन्फिगरेशन से सूचना प्राप्त कर फीडबैक करता है।

साधारणतया, पिछले जमाने में स्वचालन का प्रथम उदाहरण 'गवर्नर' था। इसका उपयोग वाष्पयंत्र की गति को नियंत्रित रखने के लिए किया था। 'गवर्नर' प्रमुख शेफ्ट में सीधा रखा जाता था। सीधे शेफ्ट से दो डण्डे जुड़े रहते थे और प्रत्येक डण्डे के अन्त में एक फोलादी गेंद लगा रहता था। इन यन्त्रों और पुर्जों की कार्यविधि देखने पर, आज हमें तुरन्त विदित होता है कि नियंत्रण अथवा फीडबैक किस प्रकार अपना काम करता है!

वर्तमान रसायन-उद्योग में भी हमारे पास वह चीज है, जिसे स्वचालन कहते हैं। गणित-शास्त्र से शब्द-पद उधार लूँ तो, मैं इसे 'लघु स्वचालन' कहूँगा। यदि कोई व्यक्ति किसी बड़े कारखाने में पोलिथाइलिन का उत्पादन कर रहा है, तो वह यंत्रविद् से कहेगा कि विशिष्ट प्रकार की सूचनाएँ उसे दी जाएँ। तदुपरान्त अनेक कार्य-कलापों का जो दृश्य उपस्थित होता है, वही स्वचालन है।

इस प्रकार विशेष नियंत्रणों की अवस्थिति पर आप कारखाने के अन्त-स्थल तक जाते हैं और विशाल स्पेक्ट्रोमीटर का अध्ययन करते हैं और अंक-ग्रहण करते हैं, जिनका आप प्रति दो-तीन घंटे की अवधि पर विश्लेषण कर सकते हैं, यदि आपके पास साधारण स्वचालित काम्प्यूटर भी हो, तब तो आप, सहज ही यह निर्णय कर सकते हैं कि आप जिस चीज का उत्पादन कर रहे हैं, उसकी क्वालिटी अथवा गुण-योग्यता आपकी आशाओं और आपके स्तर तथा विवरणों के अनुरूप है या नहीं। यदि, नहीं है, तो आप अपने निष्णातों की बैठक बुलाते हैं और तय करते हैं कि यंत्रों में कौन से नए

पुर्जें लगाए जाएँ या कौन-कौन से परिवर्तन उनमें आवश्यक है। अतएव मैं इसे 'लघु स्वचलन' कहता हूँ, क्योंकि निश्चय ही आप इस कारखाने के प्रत्येक विभाग को स्वाचालन-प्रणाली पर चलाते और फ्रीडबैक भी करते, परन्तु अब तक आप इसे इस प्रकार पूर्णरूपेण स्वाचालन-प्रणाली पर नहीं चला रहे हैं कि प्रति वेला उत्तमोत्तम परिणाम प्राप्त कर सकें।

वस्तुछोग, (जिसमें कई वृहत्तर समस्याएँ समन्वित हैं) में स्वचालित व्यापार का अर्थ यों है—आप क्षेत्रों से बिक्री के वे सब आँकड़े लेते हैं जो सहज ही आपको प्राप्त हो सकते हैं। तत्पश्चात् आप स्वयमेव ही आवश्यक निर्णय करना चाहते हैं, फिर भले आपके पास पर्याप्त सम्पत्ति-सूचियाँ हों अथवा आपको तैयार करनी पड़े। पुर्जों और ओज़ारों का आदेश कहाँ और किस संख्या में भेजा जाए और यंत्रालय के सामान का भार कैसे और कहाँ ढोया जाए। माल का निकास रेल्वे लाइन तक कैसे हो और श्रमिकों की व्यवस्था किस भाँति हो—उनकी ही नहीं, आपके उच्च श्रेणी के व्यवस्थापकों की भी। इसके अतिरिक्त माल जहाज़ पर किस प्रकार चढ़े। इसके बाद ग्राहकों की प्रतिक्रिया पर निर्भर रहकर, आप क्षेत्रों से नई सूचनाएँ ग्रहण करते हैं, उनसे आपको पता चल जाता है कि दुबारा माल किस भाँति और कब जहाज़ पर चढ़ाया जाए। यह सब, आप स्वचालित रूप से, ग्राहकों की प्रतिक्रिया पर आधारित फ्रीडबैक प्रणाली पर करना चाहते हैं।

जैसा कि उल्लेख किया गया है 'वृहत्-स्वचालन' निश्चय ही संभव है। प्रथमतया, यह, इस हेतु संभव है कि विद्यमान यंत्र और शिल्प-विज्ञान-विद्याओं ने बड़े ही नाजुक और संवेदनशील-यंत्रसाधन हमारे लिए सुलभ कर दिए हैं। नाप-तोल और वार्ता-व्यवहार के लिए भी यंत्रसाधन उपलब्ध है। यांत्रिक-शिल्प-विज्ञान ने हमारे लिए विद्युदगु-अंक-प्रक्रिया-यंत्र जैसी मूल्यवान मशीनें उपलब्ध की हैं। आज पूर्णरूपेण-स्वचालित-निर्माणशाला या कारखाने के लिए सभी सामान सुलभ हैं। पूर्ण स्वचालित-व्यापार संभव है। अब तो, आपके लिए यही शेष रह जाता है कि आप अपने यंत्रविदों को, तनिक कष्ट कर, इतना-भर बता दें कि आप कौन-सी चीज़ बनवाना चाहते हैं।

किन्तु यंत्रविदों को आदेश देने के पूर्व, हमें उनके लिए एक प्रतिमान प्रस्तुत

करना चाहिए। हमें पूर्ण विवरण तैयार करना ही होगा, इस विवरण में नाप-जोख के आधार पर पूर्ण सूचना सुलभ रहे। और पूर्ण विवरण उस नाप-जोख के आधार पर तैयार होगा जो, एक सेकण्ड के कई लाखवें अंश के सहारे की जाएगी। इसी प्रकार उचितरूपेण, हमें रासायनिक निर्माण-के नियंत्रण सुव्यवस्थित करने चाहिए, अर्थात् पूर्ण प्रत्याशित उत्पादन की दिशा में प्रगति करते हुए इसके लिए, उस शोध-कार्य को विपुलता प्रदान करनी होगी, जो आज संसार भर के विश्वविद्यालयों में सम्पन्न हो रहा है। हमें तो रसायन से पूर्णरूपेण गणितात्मक प्रतिमान की रचना करती होगी। यदि हम चाहें कि हमारे यंत्रविद् विक्रय-विश्लेषण और अन्यान्य सुविधाओं से भरपूर पूर्ण स्वाचालित कारखाना बना दें, तो, उसके लिए, हमें उन्हें व्यापार का व्यवस्थित प्रतिमान देना होगा। इस स्वाचालित कारखाने में निम्नलिखित साधन रहेंगे—क्षेत्रों से और विक्रय-केन्द्रों से निर्माणशाला तक, आनेवाले स्वचालित सूचना-प्रसारण के साधन : स्वाचालित सम्पत्ति-सूची-नियंत्रण; उत्पादन की स्वाचालित परिगणना : यंत्रस्थल की स्वाचालित परिगणना : जहाज पर स्वाचालित रूप से माल चढ़ाना : बिक्री के आँकड़ों के आधार पर स्वचालन द्वारा-फीडबैक—अथवा माल की पूर्ति।

उपरोक्त कार्यों की पूर्ति के निमित्त, बौद्धिक कार्यक्रम में, दूसरे सहयोगियों को भाग लेना पड़ेगा। सबको बौद्धिक अनुशासन पर ध्यान देना होगा और व्यापारी तथा गणित-विद्या-शास्त्री को समझना पड़ेगा और गणिताचार्य के लिए भी आवश्यक होगा कि वह व्यापारी के मन-मानस को पहचाने और सब दोनों मिलकर यंत्रविद् को समझें, ताकि हमें उसी प्रकार के तर्कसंगत प्रतिमान प्राप्त होते रहें, उसी प्रकार के गणितात्मक प्रतिमान प्राप्त हों और उसी प्रकार के विवरणपूर्ण-वर्णन व्यापारिक कार्य-कलापों के सम्बन्ध में भी सुलभ हों, जैसे कि विगत दो हजार वर्षों की शोध में, पदार्थ-विद्या के द्वारा हमें प्राप्त हुए हैं। आज तो, इसकी आवश्यकता को स्वीकार किया जा चुका है। अमरीका के कई उच्च विद्यालयों में या तो शोध-प्रवृत्तियों की स्थापना हो चुकी है, या हो रही है। और वहाँ, इस प्रकार के, व्यवस्थापन को विशेष-विज्ञान के रूप में देखा जाता रहा है और व्यापारिक अर्थशास्त्र के भूलभूत सिद्धांतों को स्वचालन के विकासाम्युदय से श्रृंखलाबद्ध करने का प्रयत्न चल रहा है !

स्वचालन के आर्थिक पक्ष : ५

[लिओ बार्नेस : प्रमुख अर्थशास्त्री, प्रेन्टिस हाल इन्कॉर्पोरेशन ।

‘युअर इन्व्हेस्ट्मेण्टस्’ के लेखक]

स्वचालन के आर्थिक पहलुओं पर अलग से विचार नहीं किया जा सकता, अर्थात् उन्हें अपने से सम्बन्धित अन्य पक्षों से काटकर, विचारवस्तु नहीं बनाया जा सकता । स्वचालन हमें लाभ पहुँचाएगा या हानि पहुँचाएगा—यह तो उस समस्त सामाजिक, आर्थिक गुथी पर दृष्टि डालने से विदित होगा, जिसका यह एक अंग है । इस परिच्छेद में यह वृहत्कार्य हाथ में लिया जा सकता है । साधारण कार्य के मात्र एक दशास्वरूप से यहाँ हमारा सम्बन्ध है अर्थात् श्रम की अवस्था और सेवानियोजन के विषय में स्वचालन के कारण, जो-जो समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, उन पर हमें विचार करना है ।

स्वचालन और सेवानियोजन

यदि कोई सन् १९५३ से १९५५ की उस अवधि पर विचार करे, जिसमें कि स्वभावतया हमारी दिलचस्पी है, तो उस विचारवान् व्यक्ति को यह विदित होगा कि वर्द्धमान-स्वचालन के फलस्वरूप और दूसरे तथ्यों के कारण (जिन्होंने प्रति मानवीय श्रम-घंटा उत्पादन में वृद्धि की है) सेवानियोजन का ह्रास हुआ है और बेकारी का विकास हुआ है । फिर भी हमें आशा है कि दोनों अस्थायी हैं ।

सन् १९५३ के बाद, यद्यपि कुछ कमियाँ आईं, परन्तु अब हम सन् १९५३ के उत्पादन की सर्वोच्च चोटी के सन्निकट हैं । फिर भी, वर्द्धमान स्वचालन, यंत्रीकरण और उन सभी शक्तियों के रहते हुए भी कि जो उत्पादन-शक्ति को बढ़ाती हैं—आज का निर्माणित उत्पादन १९५३ के सर्वोच्च स्तर से, दो प्रतिशत से भी, नीचा है । हाँ, यह ठीक है कि निर्माण के लिए प्रयुक्त मानवीय श्रमघंटे उस स्तर से लगभग दस प्रतिशत कम हैं ।

आर्थिक शक्तियों का सन्तुलन

अतएव, स्वचालन भविष्य की वास्तविक और कठिन समस्याएं पेश करता है। इसका उद्देश्य है : उन शक्तियों की रक्षा करना, जो मानवीय श्रम को बचाती हैं। साथ ही अधिकाधिक नए कामों की रचना करनेवाली और बेकारी को घटानेवाली शक्तियों को भी यह सुरक्षित रखता है। यह और भी अच्छा है कि स्वचालित सेवानियोजन के सम्पूर्ण स्तर को बनाए रखे। यह कोई साधारण काम नहीं है, खासकर शान्तिकाल में, जब कि हमारे सामने युद्ध की अनिवार्यताएं नहीं रहती हैं। दूसरे शब्दों में यदि हमारे पास स्वचालन है (और वह जल्द ही अस्तित्व में आएगा) तो हमें उद्योग-प्रसार करना ही होगा, नौकरियों और नए कामों की संख्या में वृद्धि करनी होगी। औद्योगिक नवान्तर और नए आविष्कार करने पड़ेंगे। और इसी प्रकार कई काम करने पड़ेंगे, यदि हम बेकारी को बड़े पैमाने पर दूर करना चाहते हैं। आपमें से कई सज्जनों ने जनरल मोटर्स के वाल्टर रूथर और हाल्लोर्कटिस का वार्तालाप सुना होगा। एक दिन की बात है दोनों अपने सूने, पर, सुन्दर कारखाने में कदम से कदम मिलाकर चल रहे थे। (कारखाने के सभी यंत्र स्वचालित हैं।) इस सैर के समय श्री कटिस ने श्री रूथर की ओर देखकर कहा—‘तो वाल्टर, क्या बात है, मैं यहाँ तुम्हारी यूनियन का नामोनिशान नहीं पाता हूँ। इस पर श्री रूथर ने तुरन्त जवाब दिया—और हाल्लो साहब, मैं भी यहाँ, आपके ग्राहकों के स्थान पर, एक चिड़िया भी नहीं देख रहा हूँ।”

प्रति मानवीय श्रम-घंटा के वर्द्धमान उत्पादन (जिसका कि स्वचालित मात्र एक अंग है) के प्रभावों पर व्यक्त किए गए अर्थशास्त्रियों के दृष्टिकोण अजाने नहीं हैं। सबको उनकी असलियत मालूम है। यदि किसी यंत्रालय में योग्यता बढ़ती है, तो निश्चय है कि पूर्वापेक्षा गिनती के चन्द आदमी उतना ही माल पैदा कर लेंगे। इसका, यह अर्थ हुआ कि कई श्रमिकों को बेकार हो जाना पड़ेगा और फर्म या संस्थान को बहुत अधिक लाभ-राशियाँ प्राप्त होंगी, तथापि ये अधिकाधिक लाभ की राशियाँ किसी नए काम में

लगनी ही चाहिए—बेकार न रहें। दूसरा उपाय यह है कि मूल्य के दर घटा दिए जाएँ, ताकि उपभोक्ताओं का अतिरिक्त द्रव्य दूसरे सामान और माल पर खर्च हो। अथवा, समानान्तर प्रभाव के फलस्वरूप वेतन बढ़ सकते हैं। इन सबके कारण नई माँगें उत्पन्न होंगी, ऐसी माँगें जो पहले विद्यमान नहीं थीं। ग्राहकों की इन नई माँगों की पूर्ति के लिए उत्पादन-हेतु अधिकाधिक श्रमिकों की आवश्यकता होती है और इस प्रकार कम से कम उतने श्रमिकों तो काम में लग ही जाते हैं जितने, स्वचालन के प्रथम प्रयोग के समय बेकार हो गए थे।

यह साधारण विश्लेषण जिस प्रकार का संकेत देता है, वह अधिक उल-भूतभरा है। हम जानते हैं कि प्रायः काम इस प्रकार नहीं होते, विशेषकर अल्पावधि में, किन्तु हम यह भी जानते हैं कि दूरावधि में वे सम्पन्न होते ही हैं और पिछले एक सौ वर्षों का अनुभव यही बतलाता है। हाँ, कभी-कभी कुछ भयंकर बाधाएँ भी आती हैं।

जब औद्योगिक नेता स्वचालन का पक्ष लेते हैं और उसके बचान में खड़े होते हैं तो अक्सर वे १९३६ की तुलना १९५३ से करते हैं। उभय वर्षों के बेकारों और नौकरियों की संख्या की भी तुलना करते हैं। और हमें कहते हैं। और हमें कहते हैं कि देखो, इस अवधि-विशेष में किस प्रकार लागत और उत्पादन-शक्ति के क्षेत्रों में अपार विकास हुआ। यह कहकर वे सदा-बढ़नेवाले स्वचालन के लाभकारी प्रभाव प्रदर्शित करना चाहते हैं। लेकिन यह मान लेने के पहले, हमें ज़रा १९२६ और १९३६ की अवधि का भी हिसाब लगाना चाहिए। इससे तो विपरीत बात प्रकट होती है अतएव, वर्द्धमान स्वचालन की छाया में भावी मूल्यावपात और मंदी से बचने के लिए हमें श्रम-प्रसारक और श्रम-विघातक शक्तियों के बीच सन्तुलन रखना होगा और जिन स्थलों पर स्वयमेव ही ऐसा नहीं होता, वहाँ हमें जानबूझ कर ऐसा करना ही पड़ेगा। ताकि अमरीकी जनता के अभिमत की तुष्टि हो कि उचित अनुमानानुरूप पूर्ण-सेवानियोजन के वचन का पालन किया जाएगा।

कार्य-रचयिता शक्तियाँ

अब ज़रा हम इस बात पर विचार करें कि हमारी अर्थ-व्यवस्था में ऐसी

कार्य-रचयिता और श्रमभोक्ता शक्तियाँ कौन-सी हैं, जो स्वचालन की कई कठिनाइयाँ दूर कर दें ! प्रथम और सर्वाधिक महत्वपूर्ण है—नवान्तर, नये उत्पादन, नई प्रक्रियाएँ, नई सेवाएँ और उपभोक्ता को उनका अधिक प्रभाव-शील वितरण ।

द्वितीय है—वर्तमान प्रकार के उत्पादन, प्रक्रिया और सेवा का प्रसारण—यह कार्य, उनके लिए अधिकाधिक माँग बढ़ा देने पर संभव हो सकेगा । इस कार्य को, एक शक्ति है जो स्वयमेव ही स्वचालित रूप से सम्पादित करेगी, वह है हमारी महान् जन-संख्यावृद्धि । आगामी दशक में संयुक्त राज्य अमरीका की जन-संख्या बीस प्रतिशत बढ़ जाएगी, ऐसी पूर्णांशा है ।

साथ ही हमारा यह सुप्रयत्न चल रहा है कि हम वस्तुओं का उपभोग पूरे पैमाने पर कर सकें यानी अपने द्रव्य को विभिन्न तरीकों से खर्च कर सकें । कुछ ऐसी आर्थिक-सामाजिक शक्तियाँ हैं, जो निश्चय ही कार्य-रचयिता और नौकरी दिलानेवाली हैं, क्योंकि वे उपभोग-क्रिया को बहुत बढ़ा देती हैं इनमें से कुछ ये हैं—आय का पुनर्वितरण, हमारी अर्थ-व्यवस्था में यह कार्य अस्तित्व में आ रहा है : उच्च एवं अधिक वेतन, सामाजिक संरक्षण-प्रणाली का प्रसारण, बेकारी के दिनों में अधिकाधिक अनुदान और परितोषण, प्रत्याभूत वार्षिक पारिश्रमिक अथवा क्रय-शक्ति बनाए रखने के लिए समान-शैली की प्रक्रियाएँ, समाजोपयोगी कार्यों पर अधिकाधिक व्यय, जैसे—नए स्कूल, अस्पताल बनवाना ।

हमारी जनता का, अधिकाधिक उपनगरों की ओर अग्रसर होना और वहीं बस जाना—बिक्री की वृद्धि और जीवनस्तर के उत्थान में बहुत सहायक हुआ है । भौतिक पदार्थों की दृष्टि से सोचें तो उपनगरों का जीवन अधिक श्रमिक, उच्चस्तर और जीवनस्तर के उत्थान में बहुत सहायक हुआ है । भौतिक पदार्थों की दृष्टि से सोचें तो उपनगरों का जीवन अधिक श्रमिक, उच्चस्तर और माल चाहता है, इतना ही नहीं, नगरों या खेत-खलिहानों की अपेक्षा उपनगरों का जीवनस्तर अधिक ऊँचा बढ़ता जा रहा है ।

इनके अतिरिक्त अन्य, कार्य-रचयिता-शक्तियाँ भी हैं, जो अपने काम में व्या. नं. ५

लगी हुई है, उनमें अधिकाधिक विज्ञापन और विक्रय है, ताकि अधिक लोग खरीदार बनें, अधिक विक्रय-विकास हो, ताकि प्रचलित प्रतिमान खरीदने के लिए आएँ। इसके अतिरिक्त आवश्यक है कि हमारा देश दूसरे देशों को अधिकाधिक 'सहायता' दे और अविकसित क्षेत्रों और पिछड़े हुए देशों में अधिकाधिक पूँजी लगाए।

बेकारी को घटानेवाली शक्तियाँ

लेकिन कार्य-रचयिता-शक्तियाँ ही काफी नहीं हैं। विशेषकर उस दशा में, जब कि हम दूसरा युद्ध टाल रहे हैं। हमें बेकारी-घटानेवाली अन्यान्य शक्तियों की सहायता लेनी ही पड़ेगी, यदि हम स्वचालन को सहा बनाना चाहते हैं। उदाहरण के रूप में, ऐसी शक्तियों के साप्ताहिक कार्यकाल में कटौती का कदम शामिल है। मेरे विचार से हमें कार्यकाल में बहुत पहले ही कटौती कर लेनी चाहिए थी। द्वितीय महायुद्ध और युद्धान्त उपरान्त की माँग के कारण, हमने कई वर्ष तक प्रतिसप्ताह काम के घंटों में कमी नहीं की। सन् १९३० के आस-पास की अवधि में जो कटौती हमें बलात् करनी पड़ी थी, तब से अब तक हम चुप बैठे रहें।

अन्तर यों स्पष्ट होगा कि सन् १९१० से १९२० के मध्य निर्माण-क्षेत्र के औसत कार्यकाल में कटौती हुई, जो ५१ से कटकर ४७.५ प्रतिशत हो गई। यही न्यूनतांक और कटकर सन् १९२९ में ४४ तक आ गया। फिर युद्धान्त-काल में औसत रूप में ये आँकड़े ४० घण्टा के कार्यकाल के ऊपर टिके रहे। स्वचालन के चमत्कार और अजूबों के फलस्वरूप, श्रम कम करनेवाले वैज्ञानिक साधनों के कारण और निकट भविष्य में बननेवाले विस्मयकारी यंत्रों के परिणामरूप यह सहज संभव है कि औद्योगिक कार्यकाल में कटौती होगी ही। मेरा अनुमान है कि शीघ्र ही उद्योग-क्षेत्रों में सात घण्टे का दिन और पाँच दिन का सप्ताह संभव होगा। यदि हम दूसरे महायुद्ध से दूर रह सकें तो भी, यह अनिवार्य कार्य होगा।

आगामी वर्षों में एक और, बेकारी घटानेवाली शक्ति (जिसे अधिकाधिक उत्तेजन दिया जाएगा) है—उच्च एवं प्रौढ़-शिक्षा की तीव्र अभिवृद्धि।

सन् १९६५ तक, सन् १९५५ की अपेक्षा १५ से १९ वर्ष तक के विद्यार्थी ५५ प्रतिशत बढ़ जाएंगे। यह अनन्त वृद्धि हमारे युद्धांतकाल की 'शिशु-फसल' का परिणाम है। ये बच्चे भावी दशक में तरुण नवयुवा बन जाएंगे। इसके प्रभाव और परिणाम के स्वरूप महाविद्यालयों में प्रवेश की माँग अति विशाल पैमाने पर बढ़ जाएगी। और उस अवस्थासमूह के विद्यार्थियों का अनुपात आगे न भी बढ़ता है तो भी, सन् १९६५ तक महाविद्यालय दस-लाख नए विद्यार्थियों की भीड़ की आशा रख सकते हैं। यों लगभग चालीस लाख विद्यार्थी हो जाएंगे। सन् १९५४ में कुल महाविद्यालयीय उपस्थिति २५ लाख थी और १७ से १८ वर्ष तक के उन विद्यार्थियों का अनुपात, जो महाविद्यालयों में नए भरती हुए थे, १४ प्रतिशत था।

एक अन्य तथ्य, जिसका हम अधिक स्वागत नहीं कर सकते, पर जो अनिवार्य है—वह है, निरन्तर सैन्य प्रशिक्षण, यह काम हमारी, श्रमिकों की माँग की पूर्ति को कम कर देगा। इसी प्रकार एक और, श्रमशक्ति घटानेवाला तथ्य है—६५ वर्ष की आयु में अनिवार्य श्रमकाश-ग्रहण। हालाँकि, प्रत्येक बार यह अभिप्रेय नहीं है, क्योंकि वर्तमान वैज्ञानिक औषधियाँ जीवनमान को निरन्तर बढ़ा रही हैं।

श्रम पर अन्य प्रभाव

सेवानियोजन के प्रभावों के अतिरिक्त, श्रम पर स्वचालन के अन्यान्य प्रभाव भी अवश्य पड़ेंगे। दूरावधि में स्वचालन का परिणाम श्रमशक्ति विकास में प्रकट होना चाहिए। हम उस सुयोग की प्रतीक्षा कर सकते हैं, जब दैनंदिन के श्रमचक्र कार्यों का अन्त आएगा। और किसी आशंका की अपेक्षा लाभकारी सुविधा ही प्राप्त होगी। फलस्वरूप उत्तरदायित्व और चुनौतीपूर्ण नई नौकरियाँ मिलेंगी और काम भी बढ़ेगा। निष्णात कारीगरों और व्यवस्थापकों की भारी माँग आएगी। और साधारणतया उच्चतर स्तर के प्रशिक्षण प्राप्त कारीगरों की जरूरत बढ़ेगी। इसके परिणामरूप शिक्षा का प्रचार बढ़ेगा।

दूसरी ओर, निस्सन्देह, श्रमिकों के सामने कई नई समस्याएँ उपस्थित

हो जाएँगी, जैसे—उनकी पुनर्नियुक्ति, पद की उच्चता के प्रश्न, कुशलता-अकुशलता की जाँच, स्वीकृति आदि । लेकिन, इससे उत्पन्न असुविधाएँ पूर्ण-सेवानियोजित अर्थ-व्यवस्था की छाया में दूर हो जाएँगी ।

भविष्य में यह भी पूर्ण सम्भावना है कि स्वचालन के लिए प्रयुक्त श्रम-शक्ति की प्रतिशतता सीमित हो जाए । वह प्रथम स्थान, जहाँ फ्रीडबेक से युक्त स्वचालन-यंत्र पूर्णरूपेण अपना प्रभाव जमाएगा, लिपिक (क्लैरिकल) व्यवसाय है । किन्तु कुल श्रम-शक्ति में लिपिक श्रमिकों का भाग मात्र १३ प्रतिशत है । जहाँ तक सम्पूर्ण उद्योग का सम्बन्ध है, उसमें सिर्फ सम्भवतया ५ प्रतिशत उद्योग ही ऐसे हैं, जो स्वचालित उत्पादन कर सकते हैं या उस प्रकार की व्यवस्था के अनुकूल योग्यता ग्रहण कर सकते हैं । क्योंकि, अधिकतर क्षेत्रों में स्वचालन के पूर्णोपयोग के निमित्त वृहदाकार इकाइयों की आवश्यकता पड़ती है ।

उपसंहार

स्वचालन के प्रभाव और परिणाम हमारे हाथ में हैं । यदि, प्रत्येक काल में बहुमतप्राप्त लोक-निर्णय-पूर्ण सेवानियोजन के संचालन की सद्भावना से प्रेरित होकर हम अपने कृत्यों का मार्गनिर्देशन करते रहें, तो, स्वचालन नई नौकरियों और काम देनेवाली शक्तियों की सामर्थ्य पूर्णतया देगा । काम देनेवाली शक्तियों के अतिरिक्त, बेकारी घटानेवाली शक्तियों के कितने सहयोग की जरूरत पड़ेगी—यह सामाजिक और अन्तर्राष्ट्रीय अवस्थाओं पर अवलम्बित है । और ऐसी अवस्था पर भी निर्भर है, जब माल का सतत वर्द्धमान प्रतिशत शांतिकालीन सामान और सेवाओं में लगाया जा सके । यदि यह अवस्था रही, तो मेरा विश्वास है, व्यापार, श्रम और सरकार—तीनों के सहयोग पर स्वचालन मानवजाति के अम्युदय और सुख का साधन बन जाएगा, ठीक उस प्रकार कि जिस प्रकार औद्योगिक क्रांति दूरावधि में हितकर साबित हुई । परन्तु इस बार, औद्योगिक क्रांतिकालीन आपदाएँ और अड़चनें उपस्थित न होंगी । और न ही शिल्प-विज्ञान के विकास-मार्ग में बनावटी रुकावटें, सीमाएँ और विघ्न-बाधाएँ ही प्रस्तुत होंगी ।

समय की समस्या : ६

[जार्ज एल. रिज्वे, डायरेक्टर आफ़ इकनॉमिक रिसर्च,
इन्टरनेशनल बिज़नेस कॉर्पोरेशन]

चाहे हम पसन्द करें या न करें, हमारे भौतिक-विज्ञानशास्त्री, गणिता-चार्य और यंत्रविद् हमें, अर्थात् अर्थ-शास्त्रियों और समाज-शास्त्रियों को स्वचालन पर किए गए उनके कार्य-श्रम के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों पर पहले ही सोच लेने को बाध्य कर रहे हैं। उन्होंने तो हमें उनकी अपनी भाषा, 'फीडबैक' और कंट्रोल', में बात करनेवाला बना दिया है। यह सब काफ़ी मज़ेदार चीज़ें हैं, लेकिन, मानवता के प्रश्न का दूसरा पहलू भी है, यांत्रिक भाषा या बोली में जिसका स्पष्टीकरण नहीं किया जा सकता। यह पहलू अपने स्वरूप में मनोवैज्ञानिक और सामाजिक है।

स्वचालन के आर्थिक प्रभावों के पूर्वाभास प्राप्त करने के लिए, हमारे सामने यह बात स्पष्ट होनी चाहिए कि आया हम अल्पावधि, मध्यावधि अथवा दूरावधि के विषय में सोच रहे हैं। समय-विचार महत्वपूर्ण है। जिसे हम स्वचालन कहते हैं, वह यदि धीरे-धीरे विकसित होता है, तो, हममें से कुछ ही ऐसे होंगे, जिन्हें इस बात की बड़ी चिन्ता होगी कि अमरीकी अर्थ-व्यवस्था की योजना यंत्र-विज्ञान की इस प्रगति के अनुकूल बने। दूसरी ओर, स्वचालन पूर्ण वेगपूर्वक उपस्थित होना चाहिए। और विश्वविद्यालयों को इसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए। इससे निर्वाह की समस्या बहुत अंशों में सुलभ जाएगी।

सेवानियोजन के आँकड़ों को देखते हुए, स्वचालित परिवर्तन के परिमाण पर दृष्टि रखते हुए, हमें यह विश्वास होता है कि भावी घटनाएँ इस गति से घटित होंगी कि समाज-विज्ञान-क्षेत्र में हमें समस्याओं का सामना करने का अवसर मिल जाएगा। इस दिशा में, सम्भवतया, जो तथ्य सबसे अधिक सहायक होगा, यह है अमरीकी जनता की लगन और प्रेरणा और उसका वह उत्साह, जिसके कारण यह विकास-कार्य सम्पन्न हुआ है। आज तक ऐसा

एक भी परिवर्तन या क्रांतिप्रवाह प्रकट नहीं हुआ, जिसका स्वरूप इतना सहज साधारण और युक्तिमूलक हो, जितना स्वचालन का आन्दोलन।

जिस प्रेरणा और लगन से हम स्वचालन के विकासक्षेत्र में काम कर रहे हैं, उसका शुभ परिणाम है कि हमें स्वचालन को भय और आशंका की नज़र से नहीं देखना चाहिए। अतएव, औद्योगिक क्रांति के प्रारम्भिक दिनों से हमने इसकी तुलना की है। अब, हम निकट भविष्य के उन परिवर्तनों की प्रतीक्षा कर सकते हैं, जो हमारा उत्साह बढ़ाएंगे। यदि विकास की यह प्रक्रिया सन् १९७० तक संचालित रहा तो, वह शुभ दिन दूर न होगा, जब कार्य-सप्ताह चार दिवस का होगा और सप्ताहान्त शनिवार से लेकर सोमवार तक रहेगा और हमारी औसत आय २० प्रतिशत बढ़ जाएगी। और ऐसा कौन है जो चार दिवस के कार्य-सप्ताह का विरोध करेगा? अथवा, अपनी वेतनवृद्धि उसे अच्छी न लगेगी। इस प्रकार की क्रांति, साधारणतया, अमरीकी जनता के स्वभाव से मेल खाएगी।

यह एक-ऐसा दृष्टिकोण है, जिससे कई लोग प्रोत्साहित होंगे। तथापि, एक आवश्यक शर्त है कि जितनी तीव्र गति से 'हार्डवेयर'—नए स्वचालन के साधन विकसित होंगे, उतनी ही तीव्रगति से कदम मिलाकर, उन सभी लोगों को चलना होगा, जो अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और राजनीतिक शास्त्र के क्षेत्रों में काम कर रहे हैं, ताकि स्वचालन के नवीन शिल्प-विज्ञान का रचनात्मक उपयोग सम्भव हो सके।

लागत-पूँजी के नव क्षितिज : ७

[बेन्जामिन ग्राहम : 'द इंटेलिजेन्ट इन्वेस्टर्' के लेखक]

‘क्षितिज’ शब्द दूर-भविष्य की किसी चीज का पूर्वाभास देता है। अतएव प्रस्तुत लेख में, प्रत्याभूतियों की त्वरितावस्था के बजाय, दूरावधि भविष्य पर जोर दिया जाएगा। हम विषयवस्तु को पाँच भागों में विभक्त कर सकते हैं। प्रथमतः साखपत्र अथवा प्रत्याभूति में लगी हुई राशि की भावी आर्थिक पृष्ठभूमि। द्वितीय, सांकेतिक दूरावधि लागत-नीति और ऐसी नीति की कठिनाइयाँ। चतुर्थ, लागत-नीतियों पर कर-सम्बन्धी विचार-निर्णयों के भावी प्रभाव और अन्ततया, हिस्सेदारों और व्यवस्थापकों के पारस्परिक सम्बन्धों का विकास।

भावी आर्थिक वातावरण के सम्बन्ध में, हम इस पूर्वानुमान को लेकर चलते हैं कि आणविक युद्ध नहीं होगा।

दूसरा एक दावा, जिसे, मैं बिना किसी आवश्यकतावश यानी अपनी स्वेच्छा से स्वीकार करता हूँ—वह, यह है कि हमारा देश सतत बढ़ता रहेगा। हमारा कुल राष्ट्रीय उत्पादन दृढ़तापूर्वक निरन्तर बढ़ेगा और इस वृद्धि का आधार होगा—वर्द्धमान उत्पादन-शक्ति और इसे सरकारी अभिवचनों का आधार भी मिलेगा—ये अभिवचन, लगभग पूर्ण सेवानियोजन के संनिर्वाह के सम्बन्ध में दिए जाएँगे। मेरा खयाल है, भविष्य में बड़े पैमाने की बेकारी और भारी मंदी और मूल्यावपात की अपेक्षा बड़े पैमाने पर मुद्रास्फीति की अधिक सम्भावना है।

भविष्य के तृतीय संकेत निर्देशक के रूप में, हम आर्थिक कांग्रेस की संयुक्त सभा-द्वारा प्रस्तुत आर्थिक प्रतिवेदन के परिआयोजनों का प्रयोग कर सकते हैं। जो उचित एवं पूर्ण सेवानियोजन की परिकल्पना पर, सन् १९६५ में अस्तित्व में आनेवाले आर्थिक नक्शों का वर्णन करते हैं। इसका, यह अर्थ नहीं कि वे पूर्वानुमान या भविष्यवाणी प्रकट करते हैं। वे तो मात्र

सुदृढ़ सम्भावनाओं का उल्लेख करते हैं। नैगम लाभ के लिए, ये परियोजनाएँ उत्साहप्रद हैं। हम यहाँ तत्सम्बन्धित कुछ अंक प्रस्तुत करते हैं :

सन् १९५४ से १९६५ तक कुल राष्ट्रीय उत्पादन का परियोजित विकास ७७ प्रतिशत अर्थात् ५३५ बिलियन डॉलर है। करों के चुकारे पर बनानेवाली रकम जिसमें नैगम लाभराशियाँ भी सम्मिलित हैं, अपनी गिरावट पर यह प्रदर्शित करती हैं कि करों के पूर्व नैगम लाभराशि १९६५ के लिए ५६ बिलियन डॉलर है, जब कि १९५३ में ३९.५ बिलियन डॉलर थी। इसे देखते हुए ४२ प्रतिशत की वृद्धि प्रकट होती है। करों के चुकारे पर परिकल्पित लाभराशि १९५४ के १८.३ बिलियन डॉलर की अपेक्षा १९६५ के लिए ३० बिलियन डॉलर की वृद्धि दिखलाती है जो ६४ प्रतिशत है। प्राप्त लाभांश की राशि ९.४ बिलियन डॉलर की वृद्धि की तुलना में ६०% १८ बिलियन डॉलर की वृद्धि दिखलाती है। तथापि, लाभांश के विषय में आपको सावधान रहने का संकेत दूँगा, क्योंकि, लाभांश-तथ्य इन अंकों में परिवर्तन प्रस्तुत करेगा।

इस विश्लेषण में सम्पूर्ण नैगम चित्र वृहत्तर वृद्धि-दर प्रदर्शित करता है, जब कि अर्थ व्यवस्था के अन्यांश ऐसा नहीं करते। बड़े बड़े प्रतिशतांश पूंजीवाद के अभिनय और कार्य की विशालता के द्योतक हैं। वे उन नैगम लाभराशियों का भी संकेत देते हैं, जो अमरीकी अर्थ-व्यवस्था के पूर्ण-प्रसारण में योग देती हैं। अमरीकी व्यवसाय में राजनैतिक असमर्थताएँ रहते हुए भी, सन् १९३३ के पश्चात् यह निरन्तर आगे ही बढ़ी है और विश्वास है, इसी प्रकार बढ़ती रहेगी, क्योंकि देश को इतनी जरूरत है।

द्रावधि लागत-नीति

और ये आशाप्रद परियोजनाएँ किस प्रकार की भावी-लागत-नीति का निर्देशन देती हैं? अनिवार्यतः वैसी ही नीति का निर्देशन ये करेंगी, जैसी कि विगत वर्षों में अपनाई जाती रही है। संक्षेप में हम इसे यों कह सकते हैं—औसत या साधारण प्रतिनिधि पूंजी लगानेवाला अपनी राशि का एक-तिहाई सरकारी ऋण-पत्रों अथवा करमुक्त साखपत्रों में लगाएगा और दा-तिहाई

अन्य प्रकार के साखपत्रों में लगा देगा। अथवा दो-तिहाई सरकारी साखपत्रों में अथवा सममूल्य को नक़द में और एक-तिहाई अन्य प्रकार के साखपत्रों में। यों लागत के दो छोर होंगे।

अन्य लागतों का सही अनुपात क्या होगा, यह अनेक निजी-निर्णयों पर निर्भर है। उनमें भावी मुद्रास्फीति से सम्बन्धित सम्भावनाएँ और आशाएँ भी हैं। यह स्पष्ट है कि वर्तमान वर्षों में जो लोग साधारण स्टॉक को सम्मिलित न कर सके, वे, वास्तव में समय का संकेत नहीं पहचान सके हैं। पूर्वानुभव की मान्य साक्षी का भी उन्होंने अध्ययन नहीं किया है, यही प्रतीत होता है।

दूसरी ओर, आप इस दिशा में सुदूर तक जा सकते हैं। भविष्य में मुद्रास्फीति की जो सम्भावना है, उसका यह अर्थ नहीं कि श्रेष्ठि-चत्वर के जो पूर्णरूपेण अतिक्रमित स्तर माने जाते हैं, आगे उनका वही रूप न रहेगा। भूत की दृष्टि से उच्च मूल्य के साखपत्र-मूल्य-स्तर यदि आपके पास हैं तो, उनके लिए सदैव अच्छे कारण उपस्थित रहेंगे। वर्तमान 'बुल-मार्केट' के पीछे विद्यमान-उद्देश्यावली के रूप में, जो कारण सहज ही पेश किया है, उदाहरण के लिए, वह है मुद्रास्फीति-तथ्य और पूर्ण सेवानियोजन का तथ्य, जिसके कारण अधिक मुद्रास्फीति का संकट आने की आशंका है। लेकिन, इस तर्क या विश्लेषण को ज्यों का त्यों मान लेने में भी एक संकट है, क्योंकि, एक ऐसा समय आता है, जब यह तथ्य माल के मूल्यों का अधिक नियंत्रण करने में पूर्वापेक्षा असमर्थ हो जाता है। पहले इसने जिस सीमा तक नियंत्रण किया था, उस सीमा तक अब यह नहीं पहुँच सकता है। कुछ और ही चीज़ें प्रविष्ट होती हैं—जैसे, व्याज के ऊँचे दर; कतिपय अव-रोध; परिस्थितियाँ, जिनके कारण स्टॉक के मूल्यों का पतन होता है।

इस निश्चित स्वरूप के ह्रास और उल्लंघन भी हैं। क्योंकि सहस्रों ऐसे संस्थान हैं, जो किन्हीं व्यक्तियों-द्वारा संस्थापित हैं : किन्तु उक्त उल्लंघनों के लिए विशिष्ट कारण होने चाहिए। पूँजी लगानेवाले लोगों के पास प्रशिक्षण और योग्यता के रूप में विशिष्ट साधन होना चाहिए। इसे भली-भाँति समझने के लिए, निर्धारित नीति के विपरीत उल्लंघनों पर हमें

विचार करना चाहिए। एक ओर वह महत्व या प्रभाव है, जो वृद्धि अथवा सगुण स्टॉक्स पर रखा जा सकता है। दूसरी ओर, माध्यमिक अथवा सदैव के विषयों पर जोर दिया जाता है, जो अपेक्षाकृत कम मूल्य के हैं। दोनों ही दशाओं में, उन क्षेत्रों में लगनेवाली पूँजी पूर्ण विचार-विनिमय और पर्याप्त साधन-सम्पन्नता सहित होनी चाहिए।

जहाँ तक उच्चमूल्य के विषयों का सवाल है। सक्रियता की दृष्टि से, मेरा विचार है कि पूँजी लगानेवाले किसी व्यक्ति विशेष के लिए यह कदम संकटप्रद है कि वह 'अ' संस्थान को पसंद करता है तो किसी भी मूल्य पर उसे खरीद ले। और चूँकि वह, यह काम नहीं उठा सकता, मुझे यह निर्णय करना कठिन-सा प्रतीत होता है कि उसे कितनी राशि चुकानी चाहिए ! यह राशि साधारण रकमों से कितनी अधिक हो ? अब ! मेरा विश्वास है कि स्टॉक क्षेत्र में पर्याप्त आकर्षण तो है, परन्तु, साधारणतया सम्पत्ति लगानेवाले के लिए इस क्षेत्र में वर्षों तक निरन्तर काम करते रहना कठिन है।

तथापि, लोकहित के सार्वजनिक स्टॉक्स पर ध्यान देकर, एक क्षेत्र स्थापित किया जा सकता है। यह कहा जा सकता है कि इस समूह की विशेष स्थिति है। इसमें विकास के संतोषप्रद दर के साथ, पर्याप्त दृढ़ता की प्रत्याभूति सम्मिलित है। औद्योगिक मामलों में, हमें, विकास-दर की जिस विविधता का अनुभव होता है, वह इसमें नहीं है। लेकिन, दृढ़ता का तथ्य इसमें अधिक होगा। यदि लोकोपयोगी क्षेत्र में कोई काम किया जाता है, तो, बाज़ार की वर्तमान दशा देखते हुए इस निर्णय को तर्कसंगत माना जा सकता है।

सरकार के सेविंग्स बॉन्ड्स और कर-रहित साखपत्रों को छोड़कर नैगम बॉन्ड्स और स्टॉक्स खरीदने में, मैं कोई औचित्य नहीं देखता—कम से कम, निकट भविष्य में तो पूँजी लगानेवाले व्यक्तियों को ऐसा नहीं करना चाहिए। इसका कारण है—कि जितना खतरा मोल लिया जा रहा है, उसकी तुलना में उच्चतर उपलब्धियाँ भी क्षतिपूर्ति के लिए पर्याप्त न होंगी। और उच्चतर उपलब्धियों के लिए कई कार्य आवश्यक हैं, जिनके लिए

अधिकाधिक योग्यता और चातुर्य आवश्यक है, खतरा भी उठाना पड़ता है, और निरन्तर सावधान रहना पड़ता है।

जहाँ तक विदेशी संस्थानों और व्यवसायों में लगनेवाली लागत का सवाल है, मेरा अनुभव यह कहता है कि यह अधिक लाभप्रद काम नहीं है। इस कथन के विपरीत आप कहेंगे कि आर्थिक लाभ की दृष्टि से तो यह बुरा नहीं है, लेकिन, मैं कहूँगा, मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अवश्य बुरा है। तथापि विदेशों में लगनेवाली हमारी पूँजी का परिमाण और अनुपात बढ़ता जाएगा। अब यह देखना है कि यह लागत कहाँ तक सुदृढ़ रहती है, और भविष्य में कहाँ तक लागत लगानेवाले खुश रह पाते हैं !

भावी श्रेष्ठि-चत्वर (स्टॉक मार्केट)

हमारी वार्ता का तृतीय विषय भावी श्रेष्ठि-चत्वर (स्टॉक मार्केट) के सम्बन्ध में है। इससे हम किस प्रकार के व्यवहार या रुख की आशा रख सकते हैं। क्या, व्यापार से अपेक्षित कार्य-कलाप, यह भली भाँति निभा सकेगा ? इसका तात्पर्य यह हुआ कि यह सुगमता सुदृढ़तापूर्वक आगे बढ़ेगा। और अधिक-से-अधिक कठिनाई आई तो भी साधारण रुकावटें ही आएँगी।

यह स्वरूप काफ़ी सम्मोहक है।

श्रेष्ठि-चत्वर में काम करनेवाले लोगों की यही आदत है। व्यक्तिगतरूप से मैं इसे पसन्द नहीं करता। यह सत्य है कि अभी भी व्यापारिक लाभ के विकास-दर—भावी प्रतिनिधि, साधारण स्टॉक के विकास-दर का निश्चय ही नियन्त्रण करेंगे। उनकी उपलब्धियाँ, लाभांश और मूल्यादि भी इनसे परिचालित होंगे। लेकिन, व्यापार-व्यवसाय के उतार-चढ़ाव स्टॉक मार्केट के उतार-चढ़ाव को अधिक अथवा अल्पांश में अपने शासन में न रख सकेंगे।

श्रेष्ठि-चत्वर के उतार-चढ़ावों का बड़ा निर्माता—पूँजी लगानेवालों का रुख है। सटोरियों का दृष्टिकोण है और स्कन्ध मूल्यों के विविध तत्व हैं। श्रेष्ठि-चत्वर में अतिरिक्त मूल्यांकन और न्यून मूल्यांकन की विपुलता के हमारे जो अनुभव हैं, वे आशा और निराशा के प्राबल्य के द्वारा पुनः पुनः उत्पन्न होते रहेंगे। भविष्य के बाज़ार-चक्र व्यापार-चक्र से सर्वथा स्वतंत्र रहेंगे।

और इतना ही नहीं, सम्भावना तो यह है कि व्यापार-चक्र का पता ही न चले—ऐसी स्थिति भी आ सकती है—यह अपने आप में एक कल्पना है, जो सम्भव-स्वरूप ग्रहण कर सकती है ।

और वाल स्ट्रीट के विषय में मेरा जो पुराना अनुभव है, उसे मैं सहज ही नहीं छोड़ सकता कि ज्यों-ज्यों, अधिक यह (वाल स्ट्रीट) बदलता है, त्यों-त्यों वैसा ही रहता है ।

अब मैं स्कंध-मूल्यों के उतार-चढ़ाव पर प्रकाश डालना चाहूँगा । अब तक मैंने जितने विषयों और समस्याओं पर विचार-विनिमय किया है, उन सबमें यही विषय अधिक दिलचस्प और अधिक उलझन भरा है ।

अनुभव के आधार पर मार्केट के जिन मूल्य-स्तरों को हम 'अधिक' कहते हैं, वास्तव में वे आरम्भिक रूप में ही अधिक हैं । स-तर्क या सकारणवश वे 'अधिक' नहीं हैं । किसी भी आचार्य के संतोष के लिए यह सिद्ध कर दिखाना कठिन नहीं है कि लाभांश की उपलब्धियाँ बाँड या साखपत्रों की उपलब्धियों से अधिक न होनी चाहिएँ । आप कहेंगे कि स्टॉक में पूँजी लगानेवाला प्रतिनिधि व्यापारी उन मूल्यों पर वही आय ही नहीं प्राप्त करता जो उसे बाँड से मिलती है, वरन् पुनर्लागत की आय का लाभ भी पाता है—यों, वह देश के विकास-कार्य में हाथ बँटाता है और मुद्रास्फीति के विरुद्ध सुरक्षा प्राप्त करता है । अतएव, यह कहना सरल है कि यदि आपके पास बाँड जितना ही लाभ देनेवाला अच्छा स्टॉक है तो बाँड की अपेक्षा आपकी लागत अच्छी है ।

निस्सन्देह, इस प्रकार का तर्क श्रेष्ठि-चत्वर से स्कंधों के क्रयकार्य के निमित्त सटोरियों के अडिग विश्वास का द्योतक है और उनकी क्रय-सम्बन्धी अभिलाषा सिद्ध करता है । यद्यपि हम सटोरियों की किसी चीज़ पर गौर न करके, बिना सोचे-समझे दौड़ जानेवाले व्यक्ति कह सकते हैं, परन्तु बाज़ार के कुशल अनुभवी भी अपनी पूँजी लगाने के लिए इस ओर अग्रसर होते हैं । दूसरी ओर विगतानुभव स्पष्टरूपेण यह प्रदर्शित करता है कि साधारण स्कंध का साधारण अथवा औसत मूल्य इस सैद्धांतिक दूरावधि मूल्य रेखा से नीचे ही रहता है । इसका कारण समझ लेना कठिन नहीं है । 'बीमा अधिशुल्क'

नामक एक तत्व है, जो साधारण स्कंध-क्षेत्र में प्रविष्ट होता है। साधारण समय में, लागत लगानेवाला इस बात पर जोर देता है कि उसे मूल्य से ऊपर, अतिरिक्त भी कुछ चुकाया जाए, क्योंकि उसने कई प्रकार के संकट मोल लिए हैं। और बाज़ार भी पूँजी लगानेवालों को, ऐसे संकट उठाने के लिए विशेष प्रकार का अधिशुल्क देता है।

इस अवस्था जैसी ही स्थिति और अवस्था—दुर्घटना और अग्निबीमा के दरों की है। अग्नि-बीमा-संस्थान अपनी कुल हानि का दुगुना अधिशुल्क प्राप्त करते हैं। अतिरिक्त अधिशुल्क (ज़रा इस शब्द 'अधिशुल्क' पर गौर कीजिए, इसका अर्थ है अनुमानित संकट के लिए अतिरिक्त शुल्क) आप ही वह देते हैं, क्योंकि आप अपने बीमारहित मकान या मोटरकार से सम्बन्धित चिन्ता के मनोवैज्ञानिक तूफ़ान से बचना चाहते हैं।

इसी प्रकार, किन्तु तनिक विपरीत तरीके से साधारण बाज़ार का, पूँजी लगानेवाला भी अपनी साहसिक वृत्ति के पुरस्कार-रूप में इसी भाँति का अतिरिक्त अधिशुल्क प्राप्त करता है, क्योंकि इस व्यक्ति ने बाँण्ड खरीदने के बजाय स्कंधों में अपनी पूँजी लगाई है। मेरा यह सिद्धांत है कि साधारण स्कंध के सम्बन्ध में संकट उठाने की यह प्रवृत्ति जारी रहेगी और बहुत दिनों तक श्रेष्ठि-चत्वर की एक प्रचलित परम्परा रहेगी।

वास्तव में तो यह पूँजी लगानेवालों की विचार-प्रणालिका की विचलित और लड़खड़ाती मनोदशा का परिणाम है, क्योंकि पूँजी लगानेवाले का भरोसा और आत्मविश्वास ज्यों-ज्यों बदलता है, त्यों-त्यों वह उसे एक वक्त तो गुलाबी और हरा-भरा रंग दिखाता है, दूसरे वक्त काला कुहरा दिखाकर डराता है। स्थिति का यह विषयगत तत्व ध्यान को लक्ष्य से हटाकर साधारण स्कंध-मूल्यों के क्षेत्र में बट्टा-प्रणाली की रचना करता है। साधारण स्कंध-मूल्यों के ढाँचे से सम्बन्धित एक और विपरीतार्थक स्थान है—साधारण स्कंध मूल्यांकन के प्रति आधुनिक वृत्ति के अन्तर्गत दशा यह है कि कोई कम्पनी या संस्थान जितने ऊँचे प्रकार और स्थिति की होगी, उतना ही अधिक उसके मूल्यों को लेकर सट्टा खेला जाएगा। और उतना ही अधिक वह मूल्यों के उतार-चढ़ाव और परिवर्तनों का शिकार बनेगा।

कम्पनी या संस्थान के प्रकार और गुणों के आधार पर साधारण स्कंधों के मूल्यों का अनुमान और वर्णन दिया जाता है। और इसी आधार पर स्वीकार किया जाता है कि संस्थान की भावी आय क्या होगी। जब हम किसी सुदृढ़ संस्थान के सम्बन्ध में चर्चा करते हैं या उसके स्कंधों का सौदा करते हैं तो इसका तात्पर्य यह होता है कि हम ऐसे संस्थान से सम्बन्ध बना रहे हैं, जो भविष्य में काफ़ी कमाएगा और अपनी आय को विकास और दृढ़ता देगा। अतएव, लोग आय सम्बन्धी इन्हीं सम्भावनाओं पर सट्टा खेलते हैं और उदारतापूर्वक अपनी पूँजी लगा देते हैं।

लेकिन ये, दोनों ही निर्णाय अनिवार्यतः वाद विषयक हैं। ऐसा कोई तरीका नहीं है कि ठीक-ठीक कोई यह बता सके कि अमुक भावी आय और कमाई क्या हो सकती है। और इसकी अपेक्षा यह बताना तो और भी मुश्किल है कि ऐसी आय पर पूँजी के दर क्या हो सकते हैं ?

कोई यह कह सकता है कि साधारण की अपेक्षा उच्चतर प्रकार की प्रतिभूतियाँ उच्चतर दर कमा सकेंगी, परन्तु मेरा अनुभव यह कहता है कि जब आप अमुक रेखा से आगे चले जाते हैं तो, अवश्यमेव आप वादग्रस्त अथवा सट्टे के क्षेत्र में प्रविष्ट होते हैं। पर्याप्त रूपेण आप इस बात का सहारा लेते हैं कि भविष्य में आपके स्कंध के विषय में पूँजी लगानेवालों के क्या-क्या सोचने की सम्भावना है।

आप अच्छे स्कंधों का मूल्यांकन अनुमानित भावी आय और उपलब्धियों के आधार पर निकाल सकते हैं और ऐसा करते समय साधारण गुणक का प्रयोग कर सकते हैं। लेकिन पिछली आय के अंक लेकर उनसे उच्चगुणक का योग करना अनुचित होगा। साधारणतया श्रेष्ठि-चत्वर का तरीका यह है—भावी उच्च आय का प्राक्कलन प्राप्त करना और उसके योग में उच्च गुणक का उपयोग करना। तदुपरांत यह भी वृत्ति है कि इसी तरीके को दुबारा गिनना। परिणामस्वरूप उच्च प्रकार के संस्थानों के मूल्य का अधिकांश—पूँजी लगानेवालों के वाद विषयक युक्त दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित करता है और इस बात को भी प्रकट करता है कि इस वेला इन कम्पनियों के भविष्य के विषय में, इन लोगों का विश्वास किस अंश तक है ? यही वह

स्थिति और स्वरूप है जो अनिवर्यतः प्रशस्त अंशरेखा पर चढ़ता-उतरता है। वित्त के विषय में यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि लोगों की मनो-वैज्ञानिक मनोदशा, दूसरी किसी चीज़ की अपेक्षा अधिक दृढ़तापूर्वक बदलती रहती है। मानव-स्वभाव सबसे कम बदलता है। अतएव, आपके सामने जो कुछ प्रस्तुत है, वह—पूँजी लगानेवालों की मनोदशा के महान उतार-चढ़ावों और उनके अनिवार्य चरित्र-स्वभावों की परिवर्तनरहित-अवस्थाओं का मिश्रण मात्र है।

अब इस चित्र में मुझे पारस्परिक कोष-निधि के विषय में एकाघ रेखा जोड़ने दीजिए। मेरा खयाल है कि कुल मिलाकर पारस्परिक कोष, भावी प्रतिभूतियों के स्वामित्व के क्षेत्र में अबलता के बजाय सबलता देनेवाले, तत्व होंगे। इस विषय पर चर्चा करने का सरलतम उपाय यह होगा कि एक ऐसा व्यक्ति लें, जो पारस्परिक कोष के साखपत्रों का स्वामी है। और वही, निधि के साखपत्रों का सीधा स्वामी है, दोनों की तुलना की जाए। मेरा खयाल है, वह व्यक्ति सीधा स्वामित्व छोड़कर अपने पारस्परिक कोष के सम्बन्ध में मूर्खता दिखलाएगा। अधिक संभावना यही है। इसके लिए कुछ कारण भी हैं, विशेषकर इस हेतु कि एक साखपत्र के विषय में चिन्ता करना अधिक स्वाभाविक है बनिस्बत सौ-साखपत्रों के।

कर-नीतियों के प्रभाव और परिणाम

अब हमें भावी लागत-नीतियों और नैगम-नीतियों से सम्बन्धित करों के प्रभाव और परिणामों पर विचार करना चाहिए। भविष्य में स्कंध-चत्वर सुदृढ़ रहेगा—इस विचार प्रणाली के विपरीत आगाह कर देने का मेरा कारण यह है कि व्यापार की दृष्ट्यावली दृढ़ रहेगी—यह एक भ्रमप्रतीति है। और यह सोच लेना लागत लगानेवालों और नैगम-व्यवस्थाओं की विगत बीस बरसों के विकास के प्रति प्रदर्शित प्रभाव की धीमी प्रतिक्रिया है। यदि लागत लगानेवालों को यह महसूस करने में तीस से अधिक वर्ष लग जाएँ कि नए कर-ढाँचे का, लागत और नैगम नीतियों के विषय में सही अर्थ क्या है तो उन्हें यह स्वीकार कर लेने में तीस या पचास वर्ष और लग

जाएँगे कि साधारण स्कंध हमारे भावानुसार उतने ही अच्छे हैं, जितने, अपने आप को वे अब तक प्रमाणित करते रहे हैं।

अब हम यह महसूस करने लगे हैं कि भूल ५२ प्रतिशत नैगम कर-दर तथा व्यक्ति की १८ हजार डॉलर की कर-लगने-योग्य-आय पर ५० प्रतिशत व्यक्तिगत कर-दर मिल कर-हमें नैगम-वित्त-नीति और लागत लगानेवालों की वृत्ति के विषय में सोचने को बाध्य करते हैं। हमारा यह सोचना सन् १९०० या १९२५ की जीवन-प्रणालियों की तुलना में होना चाहिए।

नैगम कमाई और उपलब्धियों पर लगनेवाले वैधानिक दुहरे करों से बचने के लिए व्यापार और व्यापारी कतिपय तौर-तरीके तैयार कर रहे हैं। लेकिन इसकी जरूरत नहीं, क्योंकि सन् १९५४ के कर-विधेयक के समान, कतिपय नियम-विधियों के द्वारा करों से कुछ मुक्ति मिलने की संभावना है। उक्त कर-विधेयक ने जनता का बहुत ध्यान आकर्षित किया है, यद्यपि यह सर्वथा साधारण वैधानिक-मुक्तिदाता विधेयक था, तथापि इसने अपने विरुद्ध पर्याप्त राजनैतिक प्रतिक्रिया खड़ी कर ली और यह सब देखते हुए मेरा तो अनुमान है कि अब हमें कर-मुक्ति के क्षेत्र में, अधिक अपेक्षा और कामना नहीं रखनी चाहिए।

मेरा विश्वास है, सुदूर सीमा तक करों से बचने की भावना—नैगम और लागत-नीतियों से सम्बन्धित परिवर्तनों का विकास करेगी। और कांग्रेस या वित्त-विभाग इसमें हस्तक्षेप नहीं करेगा, क्योंकि नैगम-लाभ पर लगनेवाले दुहरे करों के विषय में वाशिंगटन की नीति कुछ अच्छी नहीं है।

यदि नैगम-कर-लागत अथवा व्यक्तिगत-कर बचा लिए जाएँ तो परिणाम यह होगा कि वर्तमान स्कंधधाराओं की आय दुगुनी हो जाएगी। यह एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है और मेरा विश्वास है कि वॉल स्ट्रीट के लोग नैगम-नीति के क्षेत्र में गलतियाँ करने के बजाय सही मार्ग अपनाने के लिए राजी कर लिए जाएँगे; यद्यपि वे अपने विचार और कार्य में काफी सुस्त हैं।

कर-मुक्ति का यह कदम दो स्वरूप ग्रहण करेगा—या दो कतिपय उपलब्धियों पर लगनेवाले नैगम-कर से बचाव अथवा उन्हीं उपलब्धियों के

व्यक्तिगत-करों से बचाव । कर्ज के स्थानान्तरण का प्रभाव नैगम-करों की बचत पर पड़ेगा, क्योंकि कर्ज की रकम—उच्च प्रकार के स्कंधों अथवा साखपत्रों पर लगाई जाएगी और इसी प्रकार दूसरे कार्य भी सम्पन्न होंगे ।

बड़े-बड़े निगमों की यह परम्परा रही है कि वे आय बॉन्ड के बजाय उच्चतर प्रकार के स्कंधों का उपयोग करते हैं, क्योंकि ऐसे स्कंध मूल या व्याज की रकम पर किसी प्रकार का भार नहीं डालते हैं । ऐसा प्रतीत होता है और सही हाल भी यही है कि निगमों के लिए अधिक समझदारी और लाभ का कार्य होगा कि वे यदि उचित मूल्य पर बेच सकें तो उन्हें चाहिए कि उच्चतर स्कंध जारी करें । लेकिन अब तो ऐसे काम करने पर जुमाना देना पड़ता है । लेकिन तीस वर्ष पहले यह बात नहीं थी, जिसमें निगम की अपनी रकम की दुगुनी लागत लग जाती थी, जब कि वह स्कंध और बाँड को उसी कूपन व्याज के दरसहित बेचता था ।

प्रथमतया तो यह देखकर विस्मय होगा कि उच्चतर प्रकार के स्कंधों की अपेक्षा, अधिकतर बॉन्डों पर व्याज का दर कम लगता है । इसका परिणाम यह हुआ कि लागत में, ठीक-ठीक अनुपात एक या दो से भी ज्यादा होता है । दूसरी बात यह है कि अब तक विकसित आय-बॉन्ड-निगम को किसी भी प्रकार के महत्वपूर्ण या गंभीर दायित्व से पूर्णतया मुक्त कर देता है और किसी भी उच्च स्कंध के साथ गंभीर दायित्व तो रहता ही है, क्योंकि व्याज तभी दिया जाता है, जब कि कमाया जाता है । और मूल कई वर्षों बाद परिपक्व होता है और ऐसी दशा में बचाई हुई आय-कर की राशि को ही मूल का चुकारा करने में, उपयोग कर सकते हैं । इस प्रकार ऐसा वक्त आता है कि परिपक्वता का अवसर आने पर आपको कुछ लेन-देन नहीं करनी पड़ती और आप हल्के-फुल्के हो जाते हैं । उच्चतर स्कंध के स्थान पर स्थित, आय-बॉन्ड का बचा हुआ कर यदि डूबत-खाते-जैसे कोष के रूप में काम में लिया जाए तो किसी विशेष मामले में वह बाईस वर्ष की अवधि के भीतर प्रतिभूति का समूचा मूलधन लेता है ।

किसी भी निगम के लिए तथ्यों का यह मिश्रण और मेल-मिलाप व्या. न. ६

अत्यन्त सुविधाजनक और उपादेय है। इसके अतिरिक्त, व्यक्ति कुछ पूंजी लगाता है। वह भी उच्चतर स्कंधों की अपेक्षा आय-बॉण्ड में अपनी रकम लगाने पर अवश्य अधिक सुरक्षा पाता है। इसका यह अर्थ नहीं लेना चाहिए कि किसी बड़े और सुदृढ़ निगम के उच्चतर स्कंध की तुलना में बुरे या साधारण निगम का आय-बॉण्ड भी अच्छा है। लेकिन उसी परिस्थिति में आय-बॉण्ड कुछ अच्छे हैं, क्योंकि उनका व्याज चुकाने की नियमितता की सुरक्षा अधिक, भले निगम को समूची रकम न चुकानी पड़े। और यों ही, मेरा खयाल है, आप देखेंगे कि नैगम की वास्तविक आर्थिक स्थिति के आधार पर आय के बॉण्ड और पत्रकों की कीमत आँकी जाएगी। और नैगम उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए ही प्रकाशित करेगा। उच्चतर स्कंध पर कोई व्यक्ति जितना कर चुकाता है, उससे अधिक आय बॉण्ड पर नहीं चुकाता। हाँ, सन् १९५४ के कानून के अनुसार आय बॉण्ड का कर देनेवालों के लिए कुछ सुविधा जरूर रखी गई है। लेकिन उससे होनेवाले लाभ के अन्तर इतने स्वल्प हैं कि सर्वथा नगण्य हैं। तथापि, बड़े-बड़े निगमों को आय-बॉण्ड रखने में उच्चतर स्कंध रखने की अपेक्षा कर-सम्बन्धी अधिक सुविधाएँ सुलभ हैं। लेकिन, महत्वपूर्ण एवं उच्चतर स्कंध रखनेवाले निगम-स्वामी गिनती के हैं। रेल-रोड व्यवसाय के क्षेत्र में उच्चतर स्कंध के स्थान पर आय-ऋण आजकल पूरे जोर पर हैं, सबसे बड़े विस्मय की बात तो यह है कि पिछले एक या वर्षों से रेल-रोड-संस्थान अति क्षिप्रता-पूर्वक उच्चतर स्कंध के बाज़ार आय बाँड प्रस्तुत कर रहे हैं। मेरा भी ऐसा ही कुछ अनुभव है, क्योंकि मैं वेस्टर्न पैसिफिक रेलरोड के डायरेक्टरों में से एक हूँ, इसी कम्पनी ने पहले पहल उच्चतर स्कंध के स्थान पर आय-बॉण्ड प्रकाशित किए हैं। मेरा तो अनुमान है कि दूसरे संस्थान भी, तेज़ी से बढ़नेवाले इस परिवर्तन को अपनाएँगे। लेकिन, इसके पूर्व आवश्यक होगा कि पूंजी लगानेवाले अपने मन से उस भ्रम-धारणा को निर्वासित कर दें, जो आय-बॉण्ड के विषय में घर कर गई है और उनका खयाल बन गया है कि उच्चतर स्कंधों की तुलना में आय-बॉण्ड घटिया किस्म के हैं। उनकी भ्रमधारणा का मूल पिछले वर्षों की इन अफवाहों और कठिनाइयों से

सम्बन्धित है कि आय-बॉण्ड तो उन रेल-रोड-संस्थानों ने निकाले हैं, जो आर्थिक कठिनाइयों के चक्कर में पड़े हुए थे। व्यक्तियों के लिए, दुहरे कर-चुकारे से बचने का उपाय और क्षेत्र एक यह भी है कि वे लाभांश-राशि नक़द रूपों में न लेकर स्कंध-लाभांशों के रूप में लें। लोकहित-क्षेत्र की हमारी नैगम अर्थ-व्यवस्था के सतत गतिशील हिस्सों में नक़द लाभांश देने की प्रणाली सचमुच बुरी है, क्योंकि इस प्रकार ये लोग नक़द देकर, उन्हीं लोगों से, वही रकम, नए साधारण स्कंध बेचकर लौटा लेते हैं। इस भाँति तो खरीदार अनावश्यक रूप से, अकारण ही दुहरे कर-भार का भागी होता है। भविष्य की किसी भी समृद्धि अथवा सेवानियोजनावस्था का बड़े पैमाने पर नैगम-प्रसारण अनिवार्य अंग है। फलस्वरूप वर्तमान की भाँति भविष्य में भी कई नैगम संस्थानों को नियमित रूप से अपनी पूँजी बढ़ाने के लिए इसी प्रणाली को उपयोग में लाना पड़ेगा। मेरा विश्वास है कि जल्द ही सामयिक स्कंध-लाभांशों के स्थान पर दूसरे प्रकार का चुकारा करने के लिए निगमों के व्यवस्थापक व्यावहारिक और सुखकर उपाय ढूँढ़ निकालेंगे। क्योंकि उन्हें नक़द लाभांश चुकाने की पारस्परिक परन्तु अर्तक-संगत, प्रणाली में परिवर्तन करना ही पड़ेगा, क्योंकि यह प्रणाली व्यक्तिगत आय का शिकार है।

पिछले समय में पूँजी लगानेवाले लाभांश-राशि के प्रति अधिक आकर्षित थे और उसी को तरजीह देते थे। मेरे अध्ययन के अनुसार अवितरित आय की तुलना में वितरित आय के एक डॉलर का अनुपात ४ डॉलर तक ऊँचा चढ़ गया था। लेकिन मेरा खयाल है कि यह परिवर्तनशील है। यह आगे भी जल्दी-जल्दी बदल सकता है और सामयिक स्कंध-लाभांश का साधन इसके विकास में सहयोग देगा। अन्ततया, स्कंध-धर और नैगम-दोनों के लिए यही एकमात्र सुगम उपाय है। जब हम इस साधन की सक्रिय-विशेषताओं को समझ लेते हैं, तो अवश्य ये साधन उस अवस्था में पहुँचने चाहिए, जहाँ स्कंध-लाभांश भी नक़द लाभांश के समान ही स्वीकृत होता रहेगा।

इस पहलू को बेहतर तरीके से समझने के लिए आइए, हम लोकोपयोगी

साधारण स्कंधों का सम्पूर्ण विषय लेते हैं। यह एक सुविदित तथ्य है कि ऐसे स्कंधों के स्वामी अपनी आय के रूप में स्कंधों की खरीदी नहीं करते। हाँ, आय बढ़ाने के लिए जरूर खरीदी करते हैं। उनका दृष्टिकोण आय मात्र का रहता है, क्योंकि व्यावहारिक रूप में सभी लोकहित-संस्थान अपने अतिरिक्त स्कंध अपने स्कंध-धरों को निरन्तर दे रहे हैं। ये लोग अपने लाभांश की रकम अतिरिक्त हिस्सों की खरीदी में लगा रहे हैं। स्कंध-धरों में से अनेक यह काम कर रहे हैं। उदाहरण के रूप में पैसिफिक गैस एण्ड इलैक्ट्रिक कम्पनी के साथ प्रतिशत स्कंध-धर अपने अधिकारों का प्रयोग कर रहे हैं, उसका वास्तविक अर्थ यह हुआ कि इन स्कंध-धरों को नए स्कंधों के लिए दुगुना और उतना रुपया लगाना ही पड़ेगा, जितना उन्हें लाभांशों के द्वारा प्राप्त हो रहा है। यह ठीक है कि कुछ ऐसे भी मामले हैं, जिनमें लोगों को अपने जीवन-निर्वाह के निमित्त लाभांश की आय की आवश्यकता पड़ती है। परन्तु, यदि कोई इस बात की गहराई में जाए, तो उसे पता चलेगा कि ऐसे चन्द ही लोग हैं। ये लोग अपनी नक़द आय के समान-राशि अपने स्कंध-लाभांश बेचकर सहज ही प्राप्त कर सकते हैं। और तब उनको सिर्फ उतनी ही आय नहीं होती है वरन् कुछ कर भी चुकाना पड़ता है। और इस प्रकार लाभांशों की उतनी ही राशि पर बड़ा कर चुकाने की पीड़ा से वे मुक्त हो जाते हैं।

इस विषय पर अधिक प्रकाश डालने के लिए मैं कैंनेडियन इन्वेस्टमेंट फंड्स के कतिपय स्कंधों की वर्तमान सफल-बिक्री का उल्लेख करना चाहूँगा। उन्होंने पूँजी लगानेवाले से कह दिया कि उसे किसी प्रकार का लाभांश नहीं दिया जाएगा, तथापि वह इसी आधार पर खरीदी कर प्रसन्न था। क्योंकि उसकी सभी लाभ राशियाँ, अन्ततया पूँजी के रूप में प्राप्त की जाएँगी और उन पर बहुत कम कर देना पड़ेगा। इसमें मजे की बात यह है कि सारे सौदे का आधार—बिक्री के लिए काम में ली जानेवाली भापा और पूँजी लगानेवालों की दिलचस्पी और रुख पर निर्भर रहता है। यदि कोई दूसरी कम्पनी सामने आती और कहती—“स्कंध-धरो, तुम्हारे लिए मैं खुशखबरी लाई हूँ, भविष्य में हम तुम्हें लाभांश नहीं देंगे।” तो, इसकी प्रतिक्रिया पूर्णतया भिन्न और विचित्र होती।

व्यवसाय-चित्र में कर की स्थिति से सम्बन्धित एक अतिरिक्त, महत्वपूर्ण तथ्य भी है। विगत कुछ वर्षों में पूँजी-व्यय २५ से २८ बिलियन डॉलर तक पहुँच गया, जो द्वितीय महायुद्धपूर्व, सन् १९३६ के स्तर से पाँच गुना अधिक है। इसका प्रभाव नैगम-क्षेत्र और लागत-क्षेत्र की प्रतिभूतियों के मूल्यों पर पड़ता है। इन प्रभावों का पूर्वानुमान हम में से कुछ लोगों ने वर्षों पूर्व पा लिया था। इसीलिए, विकास की दिशा में सन्नद्ध, लाभ कमाने-वाली समृद्ध और निरन्तर बढ़नेवाली कम्पनियों की यह प्रकृति बन गई है कि वे अपने से छोटी और कम कमाई करनेवाली कम्पनियों को खरीदती हैं, ताकि नवनवीन सुविधाओं के लिए साधन प्राप्त हों और अन्य प्रकार के प्रसार कार्य भी हों। इनमें से कुछ कम्पनियों की खरीदी तो बहुत लाभकर रूप में हुई है और नई संस्था के निर्माण में व्यय का जो प्राक्कलन प्रस्तुत होता है उसकी अपेक्षा बहुत कम राशि में विक्रय हुए हैं। इतना ही नहीं कम दाम में कम्पनियों की चल-अचल सम्पत्ति खरीदी के काम, खरीदार नैगम को पूर्व प्रस्थापित बिक्री का बाजार भी सहज ही प्राप्त होता है, अनुभवी कार्यकर्ता मिलते हैं और दूसरे लोन और सुविधाएँ भी मिलती हैं।

पूँजी लगानेवालों के लिए यह रीति ध्यान में रखने योग्य है। यह इस सत्य का प्रतिनिधित्व करता है कि लाभ कमानेवाली कम्पनियों को अधिक-धिक लाभान्श अथवा छूट देनी चाहिए, किन्तु इसके विपरीत ये अपनी शर्तों पर अपना व्यवसाय करती हैं, जब कि कम लाभवाली कम्पनियाँ अधिक-धिक कमीशन और छूट देकर माल बेचना पसन्द करती हैं।

नैगम उपलब्धियों के क्षेत्र में कर-तथ्य भी एक महत्वपूर्ण अंश तक प्रविष्ट होता है। लाभ-रहित व्यवसायों के मूल्यों को घटाने में यह तथ्य काम करता है। इसे, यों समझिए कि यह भी एक नैगम-अमुक्त मूल्य की डॉलर राशि से आगम्भ होता है और लड़खड़ाकर बन्द होने जा रहा है और यों उसका मूल्य, लागत का मात्र ६० प्रतिशत रह गया है, तो वह दूसरे नैगम से वार्ता-व्यवहार चलाकर, हानि का आधा अंश कम कर सकता है। इस प्रकार उसकी कीमत ६० प्रतिशत से बढ़कर ८० प्रतिशत हो जाएगी। यह सैद्धांतिक बात है, लेकिन इसके कई व्यावहारिक प्रयोग और स्वरूप भी हैं, अनुभवी और कुशल पूँजी लगानेवाले को ध्यानपूर्वक, उन्हें देखना चाहिए।

स्कंध-धर और व्यवस्थापक के सम्बन्धों में परिवर्तन

अन्तिम, एक तर्क अलाभकर व्यवसायों के विषय से सीधा सम्बन्ध रखता है। लागत के क्षितिज पर मैं, स्कंधधर और व्यवस्थापक के सम्बन्धों के क्षेत्र में विकास-रेखा का उदयन देखता हूँ। बाज़ार में व्यवसायी संस्थानों की खरीदी के लिए जो चाल और दौड़ चल रही है, वह एक प्रकार से, आगामी स्कंधधरों की क्रांति की सूचक है। निजी तथ्यों और सभी प्रकार के निजी दोषारोपणों के कारण विषयों को काफी उलझा दिया गया है, परन्तु मूल में वे सरल हैं। प्रत्येक स्कंध-धर को अधिकार है कि वह योग्य-व्यवस्था और सफल परिणामों की माँग पेश करे, यदि परिणाम असन्तोषजनक है, तो व्यवस्थापक कम से कम इतना तो कर सकते हैं कि वे सप्रमाण यह स्वीकार कर लें कि वे इस अवस्था की वस्तुस्थिति से अवगत हैं। और, वे परिस्थिति के उपयुक्त उपचार के लिए प्रयत्नशील हैं। जब मैं भविष्य की ओर—दूर क्षितिजों के पार देखता हूँ, तो मुझे दृष्टिगोचर होता है कि अवश्य हम एक ऐसा सहज-तर्क या उपाय प्राप्त कर लेंगे, जिसको नज़र में रख कर, हम यह जान सकेंगे कि अमुक या अमुक संस्थान भली-भाँति चलाया जा रहा है या नहीं। विगत अनेक बरसों की यह परम्परा है कि दुखी और परेशान स्कंधधर दुर्दशाग्रस्त संस्था के हिस्से बेचकर चैन की साँस लेते रहे हैं, किन्तु भविष्य में ऐसी-किसी संस्था के स्कंध-धर व्यवस्थापकों को निकाल कर, अपने हिस्सों की रक्षा कर सकेंगे।

उपसंहार रूप में, युद्ध की बात छोड़ दीजिए, साधारणतया दूरावधि लागत-पूँजी के लिए मैं उज्ज्वल भविष्य देख रहा हूँ, विशेषकर साधारण-स्कंधों में लगनेवाली लागत के लिए—क्योंकि यही अब समूचे क्षेत्र का दिलचस्प हिस्सा रह गया है और मेरा यह भी अनुमान है कि पहले की तरह भविष्य में भी १० प्रतिशत अतिरिक्त मूल्यांकन और इतना ही, भाव गिरने पर अवमूल्यांकन होता रहेगा। मेरी भविष्यवाणी है कि निगमों की कार्य-प्रणालियों और लागत-नीतियों में निश्चय ही निर्णायकारी-परिवर्तन होंगे। और ये दोनों हमारे कर के ढाँचे के अनुसार अपने आपको स्थिर करेंगे। और नैगम-व्यवस्था के सूत्र-संचालन पर भी स्कंधधर अधिक सक्रिय और प्रभावकर रोक और अंकुश रखेंगे।

व्यापार-क्षेत्र में शोध के नव क्षितिज : ७

[मार्टिन आर. गैन्सबर्ग, नेशनल इंडस्ट्रियल कॉन्फ्रेंस
के प्रधान अर्थशास्त्री]

व्यापारिक समाचारों को यदाकदा पढ़नेवाले पाठक को भी यह सत्य सुविदित है कि विगत दशाब्दी में व्यापार के क्षेत्र में शोध की सीमाएँ विस्मयकारी रूप में विकसित हुई हैं। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि देकर, हम इसे इस तरह पेश कर सकते हैं कि द्वितीय महायुद्धांत काल से लेकर अब तक, व्यापार-शोध के प्रयत्नों की अभिवृद्धि बहुसंख्यक प्रभावों की परछाईयाँ प्रस्तुत करती है।

प्रथमतया, द्वितीय महायुद्ध ने विशाल औद्योगिक तंत्र के कुल उत्पादन के नियंत्रण और परिनिर्देशन की जो आवश्यकता थोप दी थी, उसने सरकार को व्यापार-व्यवस्था की दिशा में, पुराकाल में अज्ञात तथा अद्वितीय रूप में व्यापार की व्यवस्था करने के लिए प्रेरित किया। द्वितीय युद्धोपरांत-काल में सरकार और व्यापार के सम्बन्ध अधिक उलझ गए। तृतीय, सन् १९४३ के सेवानियोजन कानून के अन्तर्गत बड़ी मंदी और गिरावट का उत्तर-दायित्व सरकार ने ग्रहण किया। इन सभी शक्तियों ने, तभी से सरकारी शोधकार्य को गति दी है।

युद्धान्त पर अमुक समय तक शोध के प्रति व्यापार का आकर्षण कम ही रहा। यह, युद्ध के बाद के आरंभिक पूर्वानुमानों की असफलता का द्योतक ही है। लागत-अवसर और समृद्धि के स्तरों से जुड़ा हुआ, यह अनाकर्षण स्वयं व्यापार-क्षेत्र में ही व्यापार-शोध के कार्य में बाधक बना है। तथापि निकट वर्तमान में हमने देश और विदेश में प्रतियोगी बाजारों और अमरीकी व्यापार-परिचक्र के पुनर्जन्म का अच्छी तरह मुकाबला किया है।

इस अवस्था का, व्यापार-शोधकों को सुलभ अनंत आँकड़ों से संयोगन ने शोध के क्षेत्र में साम्प्रतिक और त्वरित रुचि-विकास की रचना की है। और व्यवसाय-व्यवस्थापकों ने अपनी ओर से उसका उपयोग भी

किया है। आज अमरीकी निजी उद्योगधंधों के विशाल क्षेत्र में, व्यवसाय के क्षेत्र में काम करनेवाले अर्थशास्त्री और बाज़ार के विश्लेषण ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया है। यह स्थान निश्चय रूप से स्थायी है और सम्माननीय और सतत महत्वपूर्ण है।

अतएव, व्यापार की वर्द्धनशील दुरुहता की भूमि में राजकीय कार्यावली के विकास के कारण यही हैं। व्यापार-शोध ने निजी उद्योग-व्यवसाय में मान्यता प्राप्त कर ली है, इस तथ्य के ये परिचायक हैं।

मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूँ कि व्यापारिक पेढ़ी में और वह पेढ़ी जिस आर्थिक वातावरण में काम करती है उसमें, लाभकारी शोध-सुअवसर अत्यन्त तीव्र गति से प्रसार पा रहे हैं। यों, महत्व की बात है कि ये प्रयत्न परिवर्धित हों और प्राप्त समस्याओं और संकेतों का जो रूपरेखांकन दिया गया है, उस पर अधिक शोध की आवश्यकता है, ताकि अमरीकी अर्थ-अवस्था की उपयोगी संभावनाओं का पूर्णरूपेण और सुगठित उपयोग किया जा सके।

आज अच्छे आँकड़ों के विकास के क्षेत्र में लाभकारी शोध के सुअवसर संभव हैं। नए विवरण की आवश्यकता है। ये वे भाग हैं जहाँ स्पष्टरूप से सरकार को कुछ शोधकार्य करना चाहिए। इस विकास का अधिक सुअवसर, आर्थिक और व्यावसायिक सिद्धांत की कतिपय महान् समस्याओं पर होनेवाले काल्पनिक आक्रमण के क्षेत्र में संभव है। इस क्षेत्र में 'द न्यू स्कूल फॉर सोशल रिसर्च' और 'नेशनल ब्यूरो फॉर इकनामिक रिसर्च' और 'नेशनल इंडस्ट्रीयल कान्फ्रेंस बोर्ड' आदि विश्वविद्यालय और शोध-संस्थाएँ काफ़ी काम कर सकती हैं। इतना ही नहीं व्यापारिक पेढ़ी स्वयं भी कुछ काम कर सकती है। युद्धोत्तर अवस्थाओं के फलस्वरूप इन्होंने, कई महान् अनुभव प्राप्त किए हैं। त्वरित उदयशील उत्पादन-शक्ति, श्रमिकों की अधिकाधिक सुरक्षा की तलाश, स्वचालन और बड़े बाज़ारों में पूँजी की लागत—आदि क्षेत्रों में इन्होंने पर्याप्त अनुभव कमाया है। और ये भी व्यापारिक शोध-प्रयत्न-क्षेत्र के नव क्षितिजों में से चन्द नाम हैं, जो हमने गिनाए हैं। तथापि इन्होंने व्यापारिक आयोजन और व्यापार-नियंत्रण को सदा की अपेक्षा अधिक अनिवार्य बना दिया है।

परिवर्द्धित व्यापार-शोध-प्रयत्न की सम्भावनाएँ और आवश्यकताएँ चार क्षेत्रों में विभक्त हो सकती हैं—लागत-क्षेत्र, खपत-क्षेत्र, राजकीय-क्षेत्र, आन्तरिक व्यावसायिक नियंत्रण-क्षेत्र और व्यापारिक अवस्थाओं के विश्लेषण और पुर्वानुमान का क्षेत्र ।

लागत-क्षेत्र में शोध-कार्य लागत में दूरावधि नियंत्रक तथ्य

आज व्यापारी पेट्रियों के लागत निर्णयों के क्षेत्र में एक नया दृष्टिकोण उदित हो रहा है । लागत निर्णयों का पूर्व रूपाकार त्वरित विचारकोणों की दृष्टि से सीमित था और इसका भविष्य और उत्थान अल्पावधि का था । यह स्थिति अविरामरूप से विस्तृत क्षितिजों के प्रकाश में निर्धारित निर्णयों को मार्ग दे रही है । ये क्षितिज हैं—शिल्प-विज्ञान-सम्बन्धी प्रगति, आर्थिक विकास और जीवन-स्तर के क्षेत्र में सामाजिक समुन्नति । ज्यों ही व्यवसायी समाज में गतिशील आर्थिक समाज-रचना का सिद्धांत ग्रहणीय माना जाता है, त्यों ही पूँजी-लागत सम्बन्धी निर्णय अवश्यमेव दूरावधि आर्थिक दृष्टिकोण के मार्ग पर चलने चाहिए । यह क्रम पूँजी-स्कंध को एक अभिनव गतिशील सिद्धांत की ओर अग्रसर करता है । इसके कारण हमें यंत्रों की घिसाई के सम्बन्ध में पुनर्विचार करना होगा, साधनों की पुनर्स्थापना का विषय भी सोचनीय होगा और व्यापार में लगनेवाली पूँजी की निरन्तरता के विषय में घनीभूत शोधकार्य अपनाना होगा ।

सच बात तो यह है कि विज्ञान और शिल्प-विज्ञान के क्षेत्रों में आज जो नए अनुसंधान हुए हैं और हो रहे हैं, उन्होंने, प्रमाणित रूप से हमें, अभिनव आणविक क्रांति की देहली पर खड़ा कर दिया है । यह क्रांति ऐसी है कि जो हमें भविष्य की अर्थ-व्यवस्था के संभावित विभिन्न कोणों के विषय में खोज-खबर पाने को बाध्य कर देती है । अमरीकी साधनों और समृद्धियों, और माल की माँग के विषय में जितनी खोज और जाँच हुई है, वह हमारा ध्यान आर्थिक विकास की दूरावधि गतिविधियों की ओर आकर्षित करती है । जाँच और खोज का कार्य सम्पादन करनेवाली समितियों में

प्रमुख रहीं—‘पेली कमिशन की जाँच’, ‘काँग्रेस की जॉइंट कमिटी की रिपोर्ट’, —इस रिपोर्ट का नाम था—‘प्रोटेशनल इकनॉमिक ग्रोथ ऑफ़ द यूनाइटेड स्टेट्स ड्यूरिंग द नेक्स्ट डिकेड’। इनके अतिरिक्त और भी कई प्रयत्न किए गये थे। इस प्रकार की आर्थिक परियोजनाएँ, यद्यपि कर्कश और कटु होती हैं, तथापि पूँजी-लागत की गतिविधियों के कार्य-क्षेत्र के निर्णय में वे एक महत्वपूर्ण भाग अदा करती हैं। परिचक्रित उतार-चढ़ाव-से-विरहित भावी गतिविधियों पर उनका अधिकाधिक जोर देना, इस बात का द्योतक है कि वे व्यापारी पेढ़ियों को दूरावधि लक्ष्यों के निमित्त लागत लगाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। और चाहे कैंसी भी सुदृढ़ पेढ़ी क्यों न हो, उनके सहज संकेतों को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती।

उपरोक्त विकास, एक विस्तृत पृष्ठभूमि के अंग हैं। उनके पीछे, और उनका एक महत्वपूर्ण अंश है—व्यापार सम्बन्धी शोध—जोकि, अमरीकी उद्योग में घिसाई और यंत्रादि की पुनर्स्थापना की नीति को नवाकार दे रही है। ‘मशिनरी एंड एलाइड प्रॉडक्ट्स इन्स्टीट्यूट’ में रह कर श्री जॉर्ज टर्बो ने जो अध्ययनपत्र प्रस्तुत किए हैं, उनसे यह विदित होता है कि यंत्र और औज़ारों के विषय में मूलतया नया दृष्टिकोण अपनाना अनिवार्य है। आज तो बहुत लोगों ने यह स्वीकार कर लिया है और करते जा रहे हैं कि बिक्री का माल न केवल समसामयिक लागतवाली संस्थाओं की ही प्रतियोगिता करता है, वरन् पूँजी-लागत की भावी पीढ़ियों से भी प्रतिद्वन्द्विता करने के लिए मैदान में अड़ा खड़ा है। यह अवस्था और स्थिति नैगम की घिसाई-सम्बन्धी नीति पर पुनर्विचार करने का आमंत्रण देती है। और ऐसी पुनर्विचारणा-पद्धति सन् १९५४ में करों को दुहराते वक्त पहले ही स्वीकार कर ली गई थी।

और उसी प्रकार पुनर्स्थापना की नीति को सम्यक रूप से समझने के लिए की जानेवाली शोध—निर्णयों पर पूरा प्रभाव डाल रही है। रेंड कार्पोरेशन में सैन्य निर्णयों के लिए अनिवार्य तत्वों के विषय में किए जानेवाले परीक्षण—लागत निर्णयों के लिए अनुकूलतापूर्वक काम में लाए जा चुके

हैं। परिणामस्वरूप लागत-नीतियों का नियंत्रण करनेवाले तथ्यों के क्षेत्र में व्यापारिक-निर्णय—निर्धारण के नए टेकनिक हैं।

प्राक्कलन-शक्ति सम्बन्धी आवश्यकताएँ

अन्तरोद्योग का विकास, कच्चे माल और उत्पादन के सम्बन्ध, खपत और उत्पादन की योजनाओं की स्थापना आदि, व्यापारिक शोध का वह दूसरा क्षेत्र है, जिसमें सतत लागत की बहुत बड़ी गुंजाइश और संभावनाएँ निहित हैं। यहाँ भी यांत्रिक अनुसंधानों और आविष्कारों का तीव्र विकास स्थिति के उत्थान में योग देता है। यद्यपि, हम उपलब्धियों और लागत के विषय में निश्चित रूप से कुछ बता नहीं सकते, परन्तु यह निश्चित है कि आर्थिक इतिहास के पुराकाल की अपेक्षा हमें अपने व्यावसायिक क्षेत्र में अधिक तटस्थ और शान्त भाव से सोचना होगा और अधिक वैज्ञानिक आधार पर अपने निर्णय तय करने होंगे।

उपभोक्ता क्षेत्र

उपभोक्ता क्षेत्र कुल राष्ट्रीय उत्पादन के दो तिहाई अंश का प्रतिनिधित्व करता है। और, फिर भी इसकी सांख्यिक विशालता की दृष्टि से इस पर उतना ध्यान नहीं दिया गया, जितना दिया जाना चाहिए और इस क्षेत्र में आरंभिक शोध-कार्य नहीं के बराबर हुआ। सही बात तो यह है कि इसकी उपेक्षा की गई। इसका प्रमुख कारण 'किनेशियन' परम्परा है, जो हमेशा से उपभोक्ताओं के बारे में लापरवाह रही है। परन्तु युद्धोत्तर काल में हमने यह सीखा है कि खपत साधारण चीज़ नहीं है, उसका बहुत बड़ा महत्व है। वास्तव में देखा जाए तो, युद्धोत्तर विकास-माला के प्रकाश में खपत ही आर्थिक उतार-चढ़ावों और दूरावधि विकास-भागों का केन्द्रबिन्दु है। भावी व्यापार के स्वस्थ संचालन के लिए पूर्ववश्यकता यह है कि हम अधिक अच्छी और ज्यादा बिक्री करने की अपनी योग्यता बढ़ा लें।

खपत के नए मानचित्रों की व्यवस्था

युद्धोत्तर काल में उचित खपत के नए मानचित्रों का विश्लेषण और गणनाकार्य उपभोक्ता परिशोध के लिए विशाल क्षेत्र है। विगटानुभव से

वे कहाँ-कहाँ मेल नहीं खाते ? मेल क्यों नहीं मिलता ? और उदाहरण के लिए, क्या कारण है कि १९२० की अपेक्षा कपड़े लत्ते का व्यवसाय उपभोक्ताओं की धनराशि का बहुत कम अंश पाता है ?

उपभोक्ताओं द्वारा माल की खरीदी के लिए किए गए खर्च में युद्धोत्तर काल में काफ़ी परिवर्तन आए हैं। इसके लिए डॉलर की आय और व्यय की अपेक्षा सामाजिक कारणों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए युद्धोत्तर काल में उपनगरों की ओर विशेषरूप से लोगों की निष्क्रान्ति हुई है। यह स्थिति उपभोक्ता चत्वर के नए तत्व का प्रतिनिधित्व करती है। आज की अपेक्षा हमें अधिक सफलतापूर्वक यह समझने की कोशिश करनी चाहिए कि खपत के बदलते हुए स्वरूप और नक्शे में इस निष्क्रान्ति ने कौन-सी भूमिका अभिनीत की है।

युद्धोत्तरकालीन खपत के स्वरूपों का एक दूसरा पहलू, जो कि वास्तव में एक क्षितिज है, वह आम जनता के अवकाश-समय की अभिवृद्धि है। बाज़ार की 'अपना काम स्वयं करो' की भावना के विस्मयकारी विकास में अवकाश की अभिवृद्धि प्रतिबिंबित हुई है। सवेतन छुट्टी ने भी छुट्टी की अवधि बिताने के रूपों में परिवर्तन उपस्थित किया है। उदाहरण के लिए विगत वर्षों में जितने लोग विदेश-यात्रार्थ गए हैं, आप ज़रा उनकी संख्या देखिए। अभी कितना और अवकाश-समय हमें मिलेगा ? उसे कैसे बिताएँगे ? क्या हम उच्चतर उत्पादन-शक्ति से अवकाश के रूप में काफ़ी ज़्यादा अंश लेते रहेंगे ?

मूल्य और आय-विषयक परिवर्तनों के प्रभाव

उपभोक्ता के व्यवहार को समझने के लिए कतिपय मूलभूत बातों को समझना ज़रूरी है। और उतना ही ज़रूरी है मूल्य और आय के परिवर्तनों और उन तरीकों को समझना, जो प्रत्येक उपभोक्ता की माँग, माल की पहुँच और सेवा आदि को प्रभावित करते हैं। यहाँ हम अधिक कुछ बतला न सकेंगे। इंग्लैण्ड में रिचार्ड स्टोन ने विशेष व्यय-राशियों के दो पहलुओं, मूल्य और संख्या के विभक्तीकरण का जैसा विशाल अध्ययन किया है,

वैसा हमारे यहाँ किसी ने नहीं किया। इस प्रकार के साधनों से संयुक्त होकर आय और माँग के परिवर्तनों का इतिहास अपनी नज़र में रखते हुए, हमें व्यक्तिगत खपत के क्षेत्र में मूल्य, संख्या और आय-परिवर्तन के अंतर्सम्बन्धों का अध्ययन करना चाहिए। उपभोक्ता बाज़ार को अधिक सही ढंग से समझने के लिए ऐसे अध्ययन-कार्य अनिवार्य हैं।

ऐतिहासिक तथ्यों और आँकड़ों का उपयोग करनेवाले ऐसे सामयिक अध्ययनों को आज के परिणाम में उपभोक्ताओं के खर्च पर किए गए वैभाषिक अध्ययनों से जोड़ देना चाहिए—ये दोनों हमारी इस समझ के लिए जरूरी हैं कि कैसे, कहाँ और कब वेचें? खपत के विश्लेषण का एक पक्ष यह भी है कि आय के मापदण्ड से ऊपर-नीचे चढ़ने-उतरने वाली क्रियाएँ उपभोक्ताओं की खरीदी पर कहाँ तक प्रभाव डालती हैं। और विस्मय की बात तो यह है कि सन १९५५ में भी हम यह नहीं जानते हैं कि आय के परिमाण में उपभोक्ता-व्यय के तरीके किस प्रकार विभाजित होते हैं।

उपभोक्ताओं के व्यय और बचत के कारण क्या हैं ?

उपभोक्ता क्षेत्र में शोध का एक और अवसर हमें आय और बचत के पारस्परिक सम्बन्धों के विषय में मिलता है। पूर्णरूपेण हमें यह समझ लेना है कि उपभोक्ता की बचत के पीछे उसका कौन-सा उद्देश्य निहित है और अन्यान्य आर्थिक तथ्यों से ऐसी बचत-योजनाएँ कहाँ तक सम्बन्धित हैं? और ज्यों-ज्यों असली आय निरन्तर बढ़ती है, त्यों-त्यों उपभोक्ता की बचत भी बढ़ेगी। यदि पेन्शन और कल्याणकारी अनुदान की राशियों में अचानक वृद्धि हो जाए तो, वह बचत पर कैसा प्रभाव डालती है? किसी प्रकार के निश्चित वार्षिक पारिश्रमिक पर, आज जो जोर दिया जा रहा है, वह बचत को कहाँ तक प्रभावित करेगा? हाल ही में 'नेशनल ब्यूरो ऑफ इकनामिक रिसर्च' के रेमांड गोल्डस्मिथ ने 'बचत' का अध्ययन प्रस्तुत किया है, जो आगामी कई वर्षों तक बचत के विषय में हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा। और यह तो बचत के विषय में पूरा सूचना-कोश है।

उपभोक्ता का आय-व्यय-पत्रक

एक और महत्वपूर्ण शोध-क्षितिज, जिसकी कुछ रेखाएँ दृष्टिगोचर होती हैं, उपभोक्ताओं का आय-व्यय-पत्रक है। फेडरल रिजर्व ने उपभोक्ता-वित्त का जो सर्वेक्षण किया था, उसके द्वारा हमें यह विदित होता है कि उपभोक्ताओं की संपत्ति, लेन-देन और नकद रकम आदि उनके आय और व्यय के स्रोतों से किस प्रकार सम्बन्धित है। हमें लेन-देन सम्बन्धित आय-स्रोतों पर विशेष ध्यान देना होगा। यदि ऐसा करेंगे तो हम सहज ही अपनी समझ की उन खाइयों को पाट लेंगे, जो आय-बचत-अनुपात और उपभोक्ता ऋण के मध्य में है।

उपभोक्ता की मनोदशा

उपभोक्ता की मनःस्थिति के महत्व के प्रति बढ़ती हुई सावधानी लाभ-दायक शोध का दूसरा क्षेत्र है। इस दिशा में बहुत कुछ काम किया जा सकता है और यह निर्णय प्राप्त हो सकते हैं कि बाजार के साधन और आर्थिक परिवर्तनों का प्रभाव उपभोक्ता की मनःस्थिति पर पड़ता है और कहाँ तक वह उनके आधीन अथवा स्वाधीन है !

यह कहना आवश्यक नहीं कि व्यापार के लिए हमारी निजी खपत-विषयक समझ की वृद्धि का पुरस्कार हमें वृहत्तर व्यवसाय और उत्पादन-योजना के रूप में मिलेगा।

राजकीय क्षेत्र

इस समय, जब कि फेडरल बजट ६० से ६५ बिलियन डॉलर तक पहुँच गए हैं, जो सरकारी व्यय को सौ बिलियन तक बढ़ा रहे हैं, मुझे यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि किस सावधानी और योग्यतापूर्वक इस अपार राशि के व्यय की व्यवस्था करनी चाहिए। हमें तो सिर्फ, उदाहरण के लिए सन् १९५३ और ५४ के मूल्यावपात पर नज़र रखनी चाहिए, कि आय, व्यापार, सम्पत्ति-सूची-नीति और सेवापरिनियोजन पर खर्च होनेवाली सरकारी रकम के दर में कौन से परिवर्तन और प्रभाव

प्रस्तुत हुए हैं। इस क्षेत्र का बहुत बड़ा अभिनय और उत्तरदायित्व है और सरकार को प्रयासपूर्वक यह जानना चाहिए कि वह किस प्रकार समीचीन व्यय और बचत कर सकती है।

राजकीय व्यय के उद्देश्य

जनता के व्यय से सम्बन्धित हमारा वर्तमान ज्ञान शोध के क्षेत्र में सीमाएँ रखता है। यह ज्ञान बजट की प्रक्रिया का सह-उत्पादन है। हमें आँकड़ों के जो वर्गीकरण, विभाग और प्रकार प्राप्त होते हैं, वे प्रथमतया व्ययशील-नियंत्रण, आलोचना-टिप्पणी और वैधानिक-परीक्षण से शासित हैं। पुराने हिसाब-किताब के युग के पश्चात्, हमने निश्चय रूप से काफी प्रगति की है। उस जमाने में सिर्फ कार्यकर्ताओं के नाम, वेतन, फंड, पूँजी आदि पर ही विचार किया जाता था और वह अर्थशास्त्र उद्देश्य तथा कार्य-कलाप पर ध्यान नहीं देता था। इसके विपरीत, आज के 'कार्यक्रम-बजट' अधिक उपयोगी ज्ञान की प्रगति के चिन्ह हैं और व्यावसायिक उद्योग के लिए उपयुक्त विविध लेखाओं की ओर अग्रसर हैं।

लेकिन अपने सदा के संक्षिप्त स्वरूप में पूर्ण विवरण के लिए आवश्यक, पर्याप्त सूचनाएँ नहीं देते। इससे कई महत्वपूर्ण चीजें नीचे दबी रह जाती हैं। आन्तरिक व्यवस्था, नीति और सुरक्षा के कारणवशात् बजट-ब्यूरो की कुछ सूचनाएँ पर्याप्त प्रयत्न के पश्चात् हमें सुलभ होती हैं।

आर्थिक-क्षेत्र-विशेष पर राजकीय प्रभाव

हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता आर्थिक तथ्य और आँकड़ों से संबन्धित है ताकि सरकार की इस माँग की भी पूर्ति की जा सके कि अर्थस्थिति के अन्यान्य क्षेत्रों और उपक्षेत्रों पर क्या प्रभाव पड़ता है। हमें अधिक विवरणात्मक विश्लेषण की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए निजी लागत पर राजकीय प्रभाव का विवरण हमें चाहिए। सम्पत्ति-सूचियों और सेवा-परिनियोजन के विवरण भी जरूरी हैं। राजकीय प्रवृत्तियों की भूमिका का मूल्यांकन करने लिए इन विवरणों का महत्व है कि निजी प्रवृत्तियों

पर उनका कौन-सा सम्भावित प्रभाव पड़ेगा। दोनों दिशाओं में राजकीय निर्णय, राष्ट्रीय आय के लिए वितरण और प्रतिद्वंद्वी उपयोगों के लिए साधन-स्रोतों का आदान भी प्रभावित होता है।

प्रजाकीय व्यय में होनेवाले परिवर्तन भी अपने साथ शृंखलाबद्ध आर्थिक प्रतिक्रियाओं के जाने-पहचाने प्रभाव प्रस्तुत करते हैं। परन्तु इस दिशा में हमारा ज्ञान और अनुभव आवश्यक आँकड़े पेश नहीं कर सकता और व्यौरा सैद्धांतिक है। उनके निजी प्रभाव किन्हीं मामलों में, मोटे रूप में देखे जा सकते हैं और वहाँ भी पहले दौर के प्रभाव दिखाई दे सकते हैं। कुल प्रभाव और स्थिति के आकार-प्रकार और समय हमारे ज्ञात क्षितिज की पहुँच के परे हैं।

इसके अतिरिक्त कार्यक्रम के अधिकतर ज्ञान के लिए लौकिक क्षेत्र के विविध और विस्तृत विश्लेषण के द्वारा हमारा क्षितिज वृहत्तर होना चाहिए। कुल अतिरिक्त पूँजी जो लोक-द्वारा रक्षित रखी जाती है, उत्पादन अथवा उत्पादित पदार्थों के क्रियात्मक तथ्यों-द्वारा मोटे रूप में विभाजित हो सकती है। दोनों के विषय में हमें ठीक-ठीक अंदाज नहीं है कि कितने तथ्य लोकसेवा के उपयुक्त हैं। अथवा स्रोत, उपयोग माँग और उत्पादन पर संचित राशि का प्रभाव पड़ता है। हमारे विगत प्रयास और विद्यमान आँकड़े हमारे आदर्श का मोटा अनुमान प्रस्तुत करते हैं। विगत प्रयासों में 'नेशनल् इकनॉमिक बजट' का निर्माण सम्मिलित है।

राजकीय अभिवचनों का समुचित ज्ञान

कई उद्देश्यों के निमित्त प्रजाकीय व्यय—उनका अध्ययन और विश्लेषण अत्यधिक उपयोगी होगा। यह, लाभ-प्राप्त करनेवालों और भौगोलिक वितरण दोनों की दृष्टि से उपयुक्त है। आज के प्रगतिशील कार्य, अधिकृत आयोजना, व्ययरशि आदि विषयों का सम्पूर्ण ज्ञान और उनके स्वभाव का परिचय अत्यन्त आवश्यक है, इसी प्रकार, विविध भाँति के भावी अभिवचन-सम्बन्धी जानकारी भी जरूरी है। भविष्य में राज्य के सामने जो-जो माँगें पेश की जानेवाली हैं, उनके सम्बन्ध में परिपूर्ण अध्ययन आवश्यक

हैं। ये माँगें जनसंख्या वृद्धि, बढ़ते हुए जीवनस्तर, नवीन शिल्प-विज्ञान और आवास, आवागमन, शिक्षा, उपयोगिता आदि क्षेत्रों में उपस्थित होंगी।

हमारे प्रजाकीय मामलों की समुचित व्यवस्था के लिए हमारे समस्त सद्प्रयत्नों की आवश्यकता है। साथ ही हम यह भी देखें कि हमारी सम्मिलित आवश्यकतायें क्या हैं? ताकि उस सेवा में बाधा उपस्थित न हो, जो राज्य-द्वारा परम्परा से हमें सहज ही प्राप्त होती रही है।

अप्रकट राजकीय कर्तव्य

कभी-कभी ऐसे अवसर उपस्थित होते हैं कि राज्य को दिशा-विशेष में ऐसे अनेक कार्य और खर्च करने पड़ते हैं, जो उसके कार्यक्रम और बजट में अंकित नहीं होते—युद्ध, आपत्काल, आदि बदलती हुई जरूरतों के समय सरकार ने विगत वर्षों में अपना कार्यकलाप वृहतरूप में संचालित किया है। ऐसे कार्यों पर होनेवाले खर्च को हम 'बजट से बाहर के खर्च' कह सकते हैं, क्योंकि इसके लिए कोई उपयुक्त शब्द नहीं मिलता। हमारे प्रजाकीय बजट जिन क्षेत्रों तक नहीं पहुँचे हैं, उनमें राज्य की पहुँच तो है ही, अतएव इन विशेष क्षेत्रों में राजकीय कार्यों ने हमारे चालू ज्ञान और समझ को परे कर दिया है। संभव है, चन्द मामलों की हमें कुछ जानकारी भी हो, लेकिन सही बात यही है कि हम अंधकार में हैं। जिन विषयों की जानकारी है—वे वित्त क्षेत्र से सम्बन्धित हैं।

राजकीय व्यापारिक और औद्योगिक-प्रकार की प्रवृत्तियों का अनन्त प्रसार, इसी भाँति का विकास है। आर्थिक और व्यापारिक प्रकार की प्रवृत्तियाँ, जब वे, प्रजाकीय अर्थ-क्षेत्र में प्रविष्ट होती हैं, तब उनका स्वरूप उनके पूर्ण क्रियाकलाप को प्रदर्शित नहीं करता है। न तो वह यह बतलाता है कि लोकराशि की कितनी लागत लगी है, अथवा भविष्य में कितनी लागत का अभिवचन दिया गया है। हमारे विद्यमान क्षितिज जिन दो विषयों में सर्वथा सीमित हैं, वे हैं—वास-स्थान, घर और मकान की वृद्धि, लोक-प्रतिभूतियाँ और वर्तमान समाज के कल्याणकारी कार्यक्रम की भावी जिम्मेदारी।

कर-नीतियाँ

यहाँ सरकारी बजट के अति महत्वपूर्ण पक्ष का पर्याप्त उल्लेख आवश्यक है। परम्परा से हमने करों को जिस नीति-व्यवहार से समझा है, उसके कारण हम व्यय-नीतियों और उनके प्रभावों से उनका प्रगाढ़ संबंध भलीभाँति नहीं समझ पाए हैं। जब कि भूतकाल के हमारे शोध-प्रयासों ने संभवतया व्यय की अपेक्षा, करों पर अधिक ध्यान दिया है, तथापि करनीति-सम्बन्धी कई महत्वपूर्ण प्रश्नों का हमारा ज्ञान सर्वथा सीमित है। कर-नीतियों के आर्थिक प्रभाव और असर और उनमें होनेवाले परिवर्तनों के संभावित प्रभाव—कुल मिलाकर 'साधारण' हैं। उपभोक्ताओं के निर्णय और व्यापार पर करों के प्रभाव जैसे तीक्ष्ण प्रश्नों के लिए आज भी उपयुक्त उत्तर की आवश्यकता है।

आन्तरिक व्यापार-नियंत्रण

आन्तरिक व्यापार-नियंत्रण सम्बन्धी शोध दो भागों में सहज ही बँट सकती है, एक तो वह जिसके अन्तर्गत चालू पूँजी और राशियों पर शोध, तथा दूसरी वह जो सम्पत्ति-सूची रखती है। और उसके विषय में नए क्षितिजों की खोज करती है।

नग्न राशि-स्रोतों का अनुकूल और उपयुक्त उपयोग

नग्न रकम ऐसी महत्वपूर्ण चीज है, जो प्रत्येक व्यापार-संचालन के लिए अनिवार्य है। लेकिन बहुत सी अच्छी चीजों की तरह इसका भी अतिरेक हानिकारक है। साथ ही यह बतलाना मुश्किल है कि वास्तव में 'अतिरिक्त' किसे कहेंगे। लेकिन यह बतलाना तो पड़ेगा, क्योंकि, प्रत्येक अवस्था में उत्तर तो अवश्य पाना चाहिए।

व्यापार के वित्त-स्वरूपों में परिवर्तन आ जाने के कारण, प्रस्तुत समस्या नए आकार-प्रकार ग्रहण करती है। युद्ध-वित्त के फलस्वरूप व्यापार और व्यापारियों ने बहुत-सा धन जमा कर लिया और तुरन्त

विक्रय योग्य, दैनिक व्यापार-संचालन के लिए इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी।

उदाहरण के लिए हमें सन् १९२६-२९ और वर्तमान निर्माता निगमों की स्थिति के अन्तर का अवलोकन करना चाहिए। पूर्वकालीन अवधि साधारणतया व्यापार के लिए उपयुक्त स्थिति—युद्ध प्रभावों से मुक्त, मानी गई है। उत्तरकालीन अवधि भी व्यापार के लिए बहुत अच्छी रही जिसमें प्रतिरक्षा-व्यय महत्वपूर्ण थे, परन्तु निर्णायक नहीं थे।

इससे भी पूर्व सन् १९२० के आसपास के स्वर्णकाल में नक़द और राजकीय प्रतिभूतियों की बिक्री ९ प्रतिशत रही।

सन् १९५१ से १९५४ के वर्षों में वही चालू सम्पदा ११ प्रतिशत से कुछ अधिक रही। इसके अतिरिक्त इन दो अवधियों, का अन्तर विक्रय-योग्य प्रतिभूतियों के भाव की बढ़ती के द्वारा अंकित किया गया है। यह एक ऐसा तथ्य है, जो हमें बतलाता है कि नक़द पूंजी और विक्रय-योग्य वस्तु की बढ़ती—वास्तव में अतिरिक्त चालू सम्पदा की बढ़ती है।

यह तथ्य और कथन और भी सत्य हो जाता है, जब हम इस रूपरेखा को मान लेते हैं कि विगत २० वर्षों की अपेक्षा व्यापार-व्यवसाय आज अधिक सुगठित है। और सुगठन की प्रक्रिया अवश्य ही चालू सम्पदा की आवश्यकता को घटा देगी। यह होना ही चाहिए। क्योंकि, चालू सम्पदा चुकारे का साधन बनती है। कुछ ही वर्ष पहले, जो सौदे दो व्यापारों के मध्य क्रय और विक्रय के सौदे थे—आज वही, एक ही संस्थान के अंग बन गए हैं।

लेकिन, यदि निगम अपनी चालू सम्पदा को घटा कर घटी हुई आवश्यकताओं का लाभ नहीं उठाता तो वक्रगठन यह प्रदर्शित करता है कि राशि का संचय व्यर्थ है। पहले जो विक्रय—पूर्ण के अंश माने जाते थे, अपने आप में एक इकाई थे—आज वही, समाप्त हो गए हैं। परिणामस्वरूप नक़द बिक्री का अनुपात वृद्धि पाएगा।

यह मान लेने और जोर देकर कहने के पूर्व कि आज की चालू सम्पदा आवश्यकताओं से अधिक है। निगम आय-कर पहले-सा नहीं रहा है।

संयुक्त राज्य-सरकार की प्रतिभूतियों का विशाल स्वामित्व उपरोक्त तथ्य की एक प्रतिक्रिया मात्र है ।

यदि दूसरी लागत-राशियों की तरह करें का चुकारा भी दिन-प्रतिदिन होता रहे तो, किसी भी रूप में जमा-पूँजी रखने की उतनी आवश्यकता नहीं रहेगी । परिणामस्वरूप नकद पूँजी कुछ कम हो जाएगी ।

इन सभी चीजों का जवाब शोधकार्य से ही मिल सकता है । यह कार्य वर्तमान नकद जमा की पर्याप्तता के क्षेत्र में होना चाहिए । और यह देखना पड़ेगा कि नकद जमा—चुकारे के अनुपात से कहाँ तक कम-ज्यादा है और अपने वातावरण में व्यवसाय की स्थिति कैसी है !

सूचियों का सुचारु नियंत्रण

सम्पत्ति-सूचियों के क्षेत्र में अति लागत आर्थिक अवनति के रूप में प्रकट होकर रहेगी । यह, विशेष कर उन चीजों के विषय में सही है, जिनके मूल्य परिवर्तनशील हैं । दूसरी ओर व्यापार या व्यापारी के पास अपने ग्राहकों की जरूरतों की माँग पूरी करने के लिए, पर्याप्त स्टॉक रहना चाहिए और अपने उत्पादनशील कारखाने को सुचारुरूप से चलाते रहने के लिए काफी कच्चा माल भी रहना चाहिए और खास कर ऐसे आड़े अवसर के लिए, जब कि कच्चे माल के आगमन में अवरोध आ जाए । इस प्रकार, सूचियों के सम्बन्ध में प्रत्येक व्यवसाय—बाज़ार के दो पक्षों में परिचालित होता है । खरीदार और विक्रेता के रूप में ।

इसके अतिरिक्त यह समस्या सुलभ जाती है और उच्चतर मूल्य और कठिनाइयों के बीच में दर्शनीय सन्तुलन स्थापित हो जाता है । लाभ के विषय में निश्चिन्तता और पर्याप्त स्टॉक की पूर्ति विक्रय और उत्पादन के सुगम प्रवाह को प्रवाहित रखती है ।

लेकिन कोई कम्पनी या संस्थान इस सन्तुलन को कैसे प्राप्त करे ? उत्तर उचित और गहरी शोध के रूप में मिलता है । उत्पादन और वितरण की जो सामग्री-सूचियाँ आज तक तैयार की गई हैं, उनके क्षेत्रों में प्रवाहित होनेवाले सामग्री-प्रवाह के विभिन्न स्तरों की खोज करनी होगी । यह खोज अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी ।

किसी उत्पादक के उत्पादन की माँग को हम दो भागों में बाँट सकते हैं। एक तो वह भाग, जिसके अन्तर्गत उत्पादन और वितरण का सफल स्तर उस वस्तु विशेष का तत्काल अभिनव उत्पादन और विक्रय चाहता है। दूसरा वह, जो सफलस्तरों पर पहुँचकर अपनी सम्पत्ति-सूची की अभिवृद्धि चाहता है। यह प्रत्यावर्तन प्रवाह, तब तक बहता रहता है, जब तक कि उत्पादित वस्तु, अन्ततया, उपभोक्ता के हाथों में नहीं पहुँच जाती।

कुछ कुशल व्यवसायियों ने ऐसे विश्लेषणों की उपादेयता स्वीकार की है और अपने उत्पादनों के प्रवाह को पहचानने का प्रयत्न किया है, लेकिन वर्तमान समय में इस विषयक पूरे आँकड़े प्राप्त नहीं होते। जिस चीज़ की प्राथमिक आवश्यकता है, वह है उत्पादन और वितरण के स्तरों की कड़ी के टूटे हुए टुकड़े, जिनके पूरे आँकड़े नहीं मिलते हैं।

इस प्रकार के विश्लेषण की अपनी सीमाएँ हैं। यह तो उन्हीं चीज़ों पर लागू होता है, जहाँ वस्तु-विशेष प्रत्येक सफल स्तर पर तैयार की जाती है। उदाहरण के लिए चमड़े और जूतों में खाल का खर्च। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि सभी विषयों में इस प्रणाली को लागू किया जाए, जैसे किताबों की सिलाई और ज़िल्द में लगने वाले धागे का हिसाब।

दूसरी ओर, यह टेकनिक उन विक्रेताओं के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकता है, जो किसी वस्तु विशेष के उत्पादन और वितरण के प्रमुख प्रवाह में पड़े-हुए नहीं हैं। टिन के डिब्बों, बक्सों, लेबलों और पैकेटों—आदि के निर्माता, सम्भवतया लाभ उठा सकते हैं, क्योंकि उनका उत्पादन कारखानों के तैयार माल से जुड़ा हुआ है।

लागत की कटौती

लागत की कटौती के क्षेत्र में हम यदि खोज करते हैं तो, विस्मयजनक और महत्वपूर्ण सफलताएँ मिलती हैं। उदाहरण के लिए एक ऐसी कम्पनी का मामला लीजिए कि सारे देश में जिसके भाण्डार-गृह फैले हुए हैं। और इन भाण्डार-गृहों से वह सहज ही, अपने ग्राहकों की माँग की पूर्ति कर सकती है। इसके अतिरिक्त कम्पनी कई ऐसे कारखाने खोल देती है, जो

भाण्डार-गृहों के लिए माल की पूर्ति करते हैं। विभिन्न भाण्डार-गृहों के किराये भिन्न हैं। और अलग अलग जगहों और कारखानों के उत्पादन की लागतों में भी अन्तर है। इसके अलावा, कारखाने से भाण्डार-गृह और वहाँ से ग्राहक तक माल पहुँचाने का परिवहन-व्यय भी विविध अवस्थाओं में भिन्न हैं। सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न तो यह है कि किसी ग्राहक के आर्डर के माल की पूर्ति के लिए, जो विविध लागतें लगती हैं, उनके व्यय का अवपात कैसे हो ?

आर्थिक नियंत्रण का अभिविकास

आन्तरिक नियंत्रण के इन सभी क्षेत्रों में व्यापारमालाओं के लिए अपने उद्योगों का सुचारु आर्थिक-अनुभव आवश्यक है। साथ ही उपयुक्त आर्थिक-परिगणना भी आवश्यक है। इस प्रकार कुछ संस्थानों की त्रैमासिक रिपोर्ट प्रधान औद्योगिक समुदायों के लिए उपयोगी सूचना प्रदान करती है।

यद्यपि इन सूचनाओं के आंकड़े काफी पुराने हैं, तथापि तुलनात्मक व्ययमालाओं पर आधारित, एकमात्र आर्थिक आंकड़े हैं। और परिशोध, वितरण-लागत, विज्ञान और उद्योगों और छोटे उद्योगों की लम्बी-चौड़ी पंक्ति से सम्बन्धित विवरण प्रदान करते हैं। दुर्भाग्य से, इस कार्य को जारी रखना तो दूर रहा, दूसरी बार फिर कभी हाथ में ही न लिया गया। यदि हम आन्तरिक नियन्त्रणों के द्वारा उपयोगी प्रतिफल एवं परिणाम चाहते हों तो, ऐसे आंकड़ों की त्वरित आवश्यकता पड़ेगी।

व्यापार के रुख से सम्बन्धित पूर्व-कथन

अंततया हम व्यापार परिचक्र और विद्यमान व्यापार-परिस्थिति-विषयक खोज के लिए, वर्द्धनशील अवसरों के क्षेत्र में प्रविष्ट होते हैं। निजी-क्षेत्र शीर्षक के अन्तर्गत जो खोज-प्रयत्न निर्देशित किए गए हैं, वे, व्यापारिक अवस्थाओं के विषय में पूर्व-कथन व्यक्त करने की समस्या पर समान रूप से लागू होते हैं। तथापि प्रत्येक के, महायुद्धोपरान्त के इतिहास को देखते हुए, यह ज्ञात होता है कि विगत वर्षों में आंकड़ों से सम्बन्धित हमारे स्रोत का पर्याप्त रूपेण त्वरित परिवर्द्धन हुआ है। फलतः व्यापार के रुख संबंधी

पूर्वकथन और उसके विश्लेषण के क्षेत्र में हमारी स्थिति, अब ऐसी है कि हम अपनी समस्त शक्ति लगाकर कार्य कर सकते हैं।

सम्पत्ति-सूची-परिचक्र पर प्रभुत्व

कुछ ही व्यापारिक अर्थशास्त्री इस बात से सहमत हैं कि वर्तमान समय में हम दूसरे 'नवयुग' में अवस्थित हैं। इस युग में व्यापार-परिचक्र भूत-कालीन खण्डहर मात्र रह गया है, और ऐसा प्रतीत होता है कि शीघ्र ही उसका शेष स्वरूप भी विनष्ट हो जाएगा। फिर भी इस धारणा के मूल में कुछ कारण हैं कि अल्पकालीन सम्पत्ति-सूची-परिचक्र की वह यांत्रिकता, जो हमें विगस दस वर्षों से परेशान करती रही है, अब पूर्व की अपेक्षा, अधिक सुचारुरूप से समझी जाती है। भविष्य में ज्यों-ज्यों हम इसके सम्बन्ध में अपना परिचय और ज्ञान बढ़ाते जाएँगे, त्यों-त्यों इसकी भयानकता और दूर होती जाएगी, साथ ही, यह अधिक विश्वसनीय और पूर्व-कथनकारी साधन बनता जाएगा। व्यापारिक विश्लेषण के क्षेत्र में सम्पत्ति-सूची-परिचक्र एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अभिनय रखता है। अतएव, इसके विषय में हम जिस पूर्णपरिज्ञान को पाने का प्रयत्न कर रहे हैं, वह अत्यन्त उपयोगी है। परन्तु इस क्षेत्र में प्रगति तभी हो सकती है, जब कि हमारे पास आंकड़ों से सम्बन्धित पूर्ण और विस्तृत आधार हो। कुल मिलाकर, हम न केवल परिवर्द्धन और परिविकास ही चाहते हैं, वरन् अपनी सम्पत्ति-सूची के आंकड़ों की कालावधि की अभिवृद्धि चाहते हैं। वैविध्य और वस्तु-सुलभता के इस युग में किसी संस्थान-द्वारा अभिसूचित सम्पत्ति-सूची कार्य का न्यूनतर उपयोग रह गया है। हाँ, उत्पादन और माल की अभिसूचना दिन प्रतिदिन आवश्यक होती जा रही है। उत्पादन और माल के रूप में हमारी जो सम्पत्ति-सूचियाँ हैं, उनके ज्ञान का पविर्द्धन, उत्पादित वस्तु की माँग और उत्पादन-स्तर के बीच की खाई पाटने में उपयोगी सिद्ध होगा। यह, वह खाई है जिसे प्रत्येक विश्लेषण को लाँघना या पाटना ही पड़ेगा। इस खाई को पाटने से हमें यह लाभ है कि हम सम्पत्ति-सूची-परिचक्र के विकासकालीन कार्यकलाप को जान लेंगे। साथ ही इससे व्यवसायों के आन्तरिक सम्बन्धों

से सम्बन्धित हमारे ज्ञान का पूर्ण परिवर्द्धन होगा। और सक्रिय तथा विद्यमान् विधि से होगा।

अपेक्षाओं का भविष्य

और पूर्वाभास देनेवाले आँकड़ों की विभिन्न प्रकारीय एवं अधिक गहरी जानकारी हमारे लिए जरूरी है। यह आँकड़े ऐसे हों, जो भावी आयोजनाओं की, व्यापारिक अपेक्षाओं की, और खरीदारों या उपभोक्ताओं की पूरी-पूरी जानकारी देते हों, यद्यपि सम्पत्ति-सूची-चक्र का यह पूर्ण विवेचन नहीं है, तथापि हमारी अपेक्षाओं और बाज़ार की यथार्थताओं का संघर्ष अल्पावधि उतार-चढ़ाव प्रस्तुत करता है। आज तो भावी व्यापार-विषयक विवरण सुलभ हैं। लेकिन उनमें से एक भी पर्याप्त नहीं है। और न कहीं विश्लेषक को मूलतया व्यापार-प्रभाव की कुञ्जी देते हैं। सभी प्रकार के उपभोक्ताओं के खरीदी विषयक विचारों के संकेत भी अपूर्ण रूप में प्राप्त होते हैं। और जब वे पिछले विश्लेषक के सामने आते हैं, तब उनका स्वरूप काफ़ी बदल जाता है। आज की व्यवस्था के अनुसार नहीं, वरन् अधिक क्षिप्र-गति से हमें नैगम लाभांशों के आँकड़े मिलने चाहिए। ताकि विविध गणनाओं के पश्चात् हम अपेक्षाओं की स्थिति जान सकें। और यथासंभव नैगम-आय के मासिक दरों के स्वरूप विकसित कर सकें। लेकिन आज तो घटनातथ्यों के पश्चात्, पर्याप्त विलम्ब से लाभ के आँकड़े पेश किए जाते हैं। परिणामतः उन्हें व्यापारिक गतिविधि का पाश्चात्य प्रभाव मान लिया जाता है और यह प्रवृत्ति बढ़ती ही जाती है। यदि हमारे पास ऐसी कोई मासिक व्यवस्था हो तो हमें पहले ही व्यापारिक अपेक्षाओं की पर्याप्त जानकारी और पूर्व-सूचना प्राप्त हो जाएगी।

फिर से संतुलन-पत्रक की खोज

अंत में, अल्पावधि विश्लेषण का आँकड़ों से पूरित आधार पूर्ण करने के लिए और दूरावधि परिचक्र विश्लेषण को अधिक सुगठित आधार देने के लिए हमें संतुलन-पत्रक की स्थिति का पर्याप्त रूपेण विस्तृत विवरण

चाहिए। ये विवरण अर्थ-व्यवस्था के अनेक क्षेत्रों से आएँगे। उपभोक्ताओं की, ऋण से रक्षा करने वाली अवस्थिति के विषय में हमारे पास अभी भी अधिकृत सूचनाएँ नहीं हैं। मोटरकार को छोड़कर, उपभोक्ताओं की अन्य किसी अतरल सम्पदा विषयक हमारी जानकारी स्वल्प है। परिणामतया, हम यह नहीं जान पाते कि नवीन और प्राचीन सम्पदा की स्थिति क्या और कैसी है। पूँजी के बड़े क्षेत्रों में, जिनमें नक़द रुपये से खरीदा जानेवाला माल और आवास आदि भी सम्मिलित हैं, हमारे परिज्ञान का प्रवेश उत्साहप्रद नहीं है। वर्तमान पूँजी-प्रवाह की परख के लिए यह परिज्ञान अत्यन्त आवश्यक है, इसके बिना हमारा काम शुरू नहीं हो सकता। यदि हमें यह संतुलन पत्रक मिल जाए और उसके आंकड़े सुलभ हो जाएँ तो अल्पावधि के रख का विश्लेषण सहज हो जाए। ये आंकड़े दूरावधि परिचक्र के सम्बन्ध में किये जाने वाले काम को मूलभूत अनुदान देंगे। आज यह सोच लेना कोरी कल्पना होगी कि भूतकाल में जिन शक्तियों और तथ्यों ने गम्भीर मूल्यावपात और मंदी के दिन दिखलाए थे, वे आज दूर हो गये हैं और इसके लिए यह तर्क पेश करना, कि सरकार ने मंदी को रोकने के लिए कुछ कदम उठाए हैं, तो और भी अनुपयुक्त है। दूरावधि मूल्यावपात की शक्तियाँ जिन क्षेत्रों में वास करती हैं, उनकी सुविस्तृत जानकारी—व्यापार और सरकार, दोनों के लिए आवश्यक और उपयोगी है।

वस्तुतः शोध-सम्बन्धी आवश्यकताओं का यह, एक विशाल स्वरूप है और अधिक और अच्छे आँकड़ों की प्राप्ति की रूपरेखा काफ़ी श्रम या परिश्रम मांगती है। इन्हीं क्षेत्रों में काम करने वाले एक सदस्य के नाते मैं यह ज़रूर कहूँगा कि विगत कई वर्षों में व्यापार-विश्लेषण-क्षेत्र में जो प्रगति हुई है, वह आकर्षक और विस्मयजनक है। इस प्रगति का अधिकांश हमें उन निष्णातों के द्वारा प्राप्त होता है, जो सरकार, विश्व-विद्यालय, निजी शोध-संस्थान आदि में काम करते हैं। जिन्हें वे अपना सारा समय देते हैं। व्यापार की व्यावहारिक दुनिया को वे अपने संपूर्ण समय की प्रक्रिया और परीक्षण-प्रवृत्ति अर्पण करते हैं। विश्व-विद्यालयों ने इस दिशा में

जो प्रयत्न किया है, वह महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए 'द न्यू स्कूल फॉर सोशल रिसर्च' में जूलियस हर्श और उनके साथियों का कार्य-ज्ञान अन्य संस्थानों की भाँति इस संस्थान में भी विद्यमान व्यापार-विश्लेषण-अर्थ-क्षेत्र-सम्बन्धी परिशोध-कार्यक्रम का प्रमुख अंग बन गया है।

विश्लेषक व्यापार-प्रणाली के चालू आँकड़ों पर निरन्तर काम करता रहता है। व्यापारिक परिस्थितियों के विषय में, हमने जो जानकारी प्राप्त की है, प्रगति की है, उसके लिए यही विश्लेषक धन्यवाद के पात्र है। आँकड़ों के सम्बन्ध में उत्पन्न होनेवाली नवीन आवश्यकताओं की स्थिति का अभिलेख और लेखा-जोखा रखने के लिए यह (विश्लेषक) आदर्श पद पर है। हमारे देश में ऐसे विश्लेषक जितने भी अधिक हों, जितनी भी अच्छी उनकी प्रशिक्षा हो, उतनी ही अधिक और अच्छी हमारी जानकारी बढ़ेगी।

उपसंहार

इन दिनों राष्ट्र के कुल शोध-व्यय का एक बहुत ही अल्प-अंश व्यापार और आर्थिक शोध-कार्यों में खर्च होता है। शोध के लिए नियत राशि का पर्याप्त भाग आजकल पदार्थ-विज्ञान पर खर्च किया जाता है। भविष्य में मैं जिस प्रकार के परिवर्द्धित व्यापार-परिशोध-कार्यक्रम की कल्पना करता हूँ, उसका व्यय स्वयं व्यापार-व्यवस्था को देना पड़ेगा। यह अनुदान परोक्ष रूप में शिक्षण और परिशोध-संस्थाओं को दिए जाने वाले चन्दे और कर के चुकारे के रूप में तथा प्रत्यक्षरूप में व्यवसाय के अपने शोध-विभाग पर खर्च किया जाएगा।

यह निश्चित है, क्योंकि आज व्यापार के परिशोध-प्रयत्न कुछ कम नहीं हैं। और मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि निकट भविष्य में शोध पर होनेवाला व्यय कुल व्यापार के वर्द्धमान स्थायित्व के रूप में अधिकाधिक मुआवजा देगा, क्योंकि इसके फलस्वरूप पेढ़ी-विशेष अपने व्यापारिक उतार-चढ़ाव को कम से कम कर लेगी। इस प्रक्रिया के कारण व्यापार-प्रणाली में

कम होता जाएगा। इसी समय परिशोध-कार्य इस बात का आश्वासन देगा कि यदि सरकारी-हस्तक्षेप अनिवार्य रूप से आया भी तो, वह अधिक प्रभावशाली, बुद्धिपूर्ण और न्यूनतम व्यवसाय्य होगा।

तथापि परिवर्द्धित-परिशोध-प्रयास के पूर्ण-पारितोषिक का यह, मात्र एक स्वल्प अंश होगा। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् अमरीकी व्यवसाय-प्रवृत्ति एक राष्ट्रीय राजनीतिक सवाल बन गया है और विचारों के अन्तर्राष्ट्रीय-युद्ध का समरांगण बन गया है। आज समस्त संसार न केवल भौतिक सहायता के निमित्त, वरन् निजी व्यापार-प्रणाली को रक्षित रखने के लिए, उसकी स्पष्ट रूपेण आध्यात्मिक सुविधाओं के लिए, उसकी समता और सजीवता के लिए अमरीका की ओर आँखें लगाए बैठा है। जितने ही अधिक प्रभावपूर्ण तरीके से अमरीकी व्यवसाय अपने कार्य की आयोजनाएँ गढ़ेगा और उन्हें पूरा करेगा, उतने ही प्रशस्त रूप में वह सेवानियोजन और प्रवृत्ति के क्षेत्रों को वृद्धि-विकास देगा। और अपने देश की सीमा में अपने-आपको कटु एवं भ्रमित राजनैतिक प्रहारों से सुरक्षित कर लेगा।

और तब मुक्ति के लिए लड़े जानेवाले विश्व-संघर्ष के क्षेत्र में हमारी वैचारिक स्थिति दृढ़तर हो जाएगी।



अन्य प्रकाशन

आर्थिक साम्राज्यवाद

(पूर्वी यूरोप से मिली एक सीख)

आल्फ्रेड जोवर-मान

मूल्य रु. १.००

• • •

महान परिवर्तन

(' The Big Change

पुस्तक का अनुवाद)

फ्रेडरिक लुई अेलन

अनु. : ए. के. जैन, बी. ए., एलएल. बी.

मूल्य रु. २.००

• • •

अर्थ-शास्त्र का परिचय

(अमरिका की संमिश्र

अर्थ-व्यवस्था का दिग्दर्शन)

मार्शल ए. राबिन्सन

हरबर्ट सी. मॉर्टन

जेम्स डी. काल्डरवूड

अनु. : महेन्द्र मिश्र, एम. ए.

मूल्य रु. २.००